# कप्तान की बेटी

Alexander Pushkin's Captain's Daughter

## पुश्किन

अनुवादक शिवदानसिंह चौहान
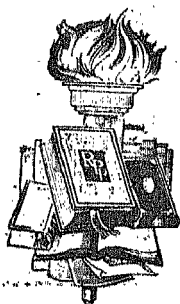
देहली

रणजीत प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स

# पुश्किन

●

अलेक्जेन्डर सर्जियविच पुश्किन का जन्म सन् १७९९ में ६ जून को मास्को नगर में हुआ था। उसकी सब से पहली कविता 'अपने कवि मित्र से' ( To my Poet Friend ) सन् १८१४ में प्रकाशित हुई थी। उस समय से अपने जीवन के अगले तेईस वर्ष ( दुर्भाग्य से द्वन्द्व-युद्ध में पुश्किन की हत्या ३८ वर्ष की अल्पायु में ही हो गयी ) उसने पूरी तन्मयता और लगन से साहित्य-साधना और सार्वजनिक कार्यों में बिताये। इस अल्प-काल में ही उसने रूसी साहित्य को जो दिया, उस पर रूसी साहित्य ही नहीं बल्कि विश्व-साहित्य को भी गर्व है। वस्तुतः समस्त रूसी साहित्य का पीटर महान के समय से अगर कोई एक लेखक प्रेरणा-केन्द्र रहा है तो वह पुश्किन है। पुश्किन ने प्रथम बार रूसी भाषा का मार्जन करके उसे काव्योचित बनाया, साथ ही ऐसी महान कृतियों की सृष्टि भी की जो विश्व-साहित्य की अमर निधि हैं। इसी कारण पुश्किन को रूसी साहित्य का पितामह भी कहते हैं।

पुश्किन की प्रतिभा को प्रस्फुटित होने के लिए अनुकूल वातावरण भी मिला था। पुश्किन के बाल्यकाल में ही रूस के निरंकुश ज़ार को अपने महल के अन्दर गला घोंटकर मार डाला गया था और जब अलेक्जेन्डर प्रथम गद्दी पर बैठा तो जनता में आशा की एक लहर दौड़ गयी। नेपोलियन ने जब सन् १८१२ में रूस पर आक्रमण किया तो समस्त रूसी जाति आक्रमणकारी के विरुद्ध एक लोहे की दीवार बनकर उठ खड़ी हुई और उस समय वातावरण जितना ही संक्षुब्ध था उतना

ही आशामय भी। लोगों को लगा कि उनके जीवन में नये प्रभात की लाली आने वाली है। एक नये विधान के बनने की अफ़वाहें गरम थीं, यहाँ तक कि यह भी अनुमान किया जाने लगा था कि दास प्रथा का अन्त कर दिया जायगा। नेपोलियन के आक्रमण के बाद अभिजात वर्ग के अनेक शिक्षित युवक और तरुण फ़ौजी अफ़सर पेरिस आदि का भ्रमण कर आये थे। वहाँ वे पाश्चात्य देशों के प्रगतिशील विचारों के सम्पर्क में आये थे। इस प्रकार रूस में नये विचार फैलने लगे थे। साहित्य और कला के क्षेत्र में ऐसे ही संभ्रान्त, प्रगतिशील विचारों वाले आभिजात्य वर्ग के युवकों का प्रभाव था। ये लोग राज दरबार के विरोधी थे। इसी कारण उन्होंने साहित्य को तीखे व्यंग और यथार्थ चित्रण की मर्मभेदिनी शक्ति देकर ज़ारशाही के विरुद्ध एक पैने अस्त्र के रूप में विकसित किया।

पुश्किन की प्रतिभा को इस वातावरण में सहज विकास का अवसर मिला। लेकिन इससे भी अधिक पुश्किन की प्रतिभा को अगर किसी ने प्राण-रस से सींचा तो वह थी रूस की लोक-परम्परा की पुंजीभूत राशि। सदियों के अन्दर रूसी जनता ने लोक-कथा और लोक-काव्य के रूप में जो अक्षय और अपार राशि एकत्र की थी, पुश्किन की प्रतिभा के लिए वह ज़मीन और खाद बनी और उसने ही उसकी प्रतिभा की लता को परवान चढ़ाया। पुश्किन का इस लोक-परम्परा से गहरा सम्पर्क ही नहीं था, उसने इसका गहरा अध्ययन भी किया था।

नेपोलियन के आक्रमण के समय देश में आशा की जो लहर फैली थी, नेपोलियन की हार के बाद वह दुराशा के रूप में परिणत हो गयी, क्योंकि ज़ार ने जनता की आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं की। लोगों में असन्तोष बढ़ा। उदारमना अफ़सरों और नौजवानों ने राजनीतिक उद्देश्यों की सिद्धि के लिये गुप्त समितियाँ स्थापित कीं। नेपोलियन के आक्रमण की समाप्ति के समय पुश्किन की अवस्था केवल सोलह वर्ष की थी। लेकिन

देश में जो विक्षोभ और निराशा फैल गई थी, पुश्किन उसके प्रभाव से अछूता न रह सका। उसने कुछ कटु व्यंग्य और सूक्तियाँ लिखकर अपनी प्रतिक्रिया ज़ाहिर की।

इसलिए सन् १८२० में जैसे ही पुश्किन का पहला व्यंगपूर्ण महा-काव्य "रुसलन और लुद्मिला" प्रकाशित हुआ, वैसे ही उसे देश निकाला देकर रूस के दक्षिणतम भाग में नज़रबन्द कर दिया गया।

रूसी साहित्य की दुनिया में भी उन दिनों ऐतिहासिक घटनाएँ हो रही थीं। उन्हीं दिनों क्राइलोफ़ की गल्पें छपीं, ग्रिबोयदोफ़ का नाटक 'विट वर्क्स वू' (Wit Works Woe) प्रकाशित हुआ और गोगोल का गद्य और बेलिन्स्की के निबंध तथा लरमेन्तोफ़ के प्रारंभिक लेख प्रकाशित होने शुरू हुए थे। लेकिन रूस में उस युग के साहित्य-जगत की सब से बड़ी घटना स्वयं पुश्किन का साहित्याकाश में सूर्य की तरह उदय और उसकी रचनाओं का प्रकाशित होना था। उसकी लिखी प्रत्येक पंक्ति प्रकाशित होते ही सारे रूस के पाठक-वर्ग के बीच गंभीर अध्ययन, मनन, वाद-विवाद और श्रद्धा-भक्ति का कारण बन जाती थी।

पुश्किन के साहित्यिक कृतित्व का परिणाम यह हुआ कि रूसी भाषा के साहित्य में ही नहीं, बल्कि विश्व-साहित्य में भी काव्य में सब से पहले उपन्यास की सृष्टि हुई। वह उपन्यास है 'इवजिनी ओनेगिन' (Evgeni Onegin) इसके साथ ही पुश्किन ने सब से पहला यथार्थवादी ऐतिहासिक उपन्यास 'कप्तान की बेटी' (The Captain's Daughter) और पहला यथार्थवादी ऐतिहासिक नाटक 'बोरिस गोदूनोफ़' (Boris Godunov) लिखा।

प्रस्तुत उपन्यास ('कप्तान की बेटी') का रचनाकाल सन् १८३६ है। यह एक महान् कृति है और विश्व-साहित्य में इस उपन्यास का बहुत ऊँचा स्थान है। 'कप्तान की बेटी' में पुश्किन ने यूराल प्रदेश के कज़्ज़ाक

किसानों के उस विद्रोह को केन्द्र और पृष्ठ-भूमि बनाया है, जिसका नेतृत्व सन् १७७३ में एक अपढ़ किसान पुगाचोफ़ ने किया था। उपन्यास लिखने से पूर्व पुश्किन ने 'पगाचोफ़ के विद्रोह का इतिहास' नाम से एक अत्यन्त उच्चकोटि की ऐतिहासिक पुस्तक भी लिखी थी और इस उपन्यास में उसने अपनी खोज से प्राप्त सामग्री का इस ढंग से कलात्मक उपयोग किया है कि यह एक महान् और अमर कृति बन गयी है।

पुश्किन की शैली की विशेषता, उसकी सादगी, सारपूर्णता और चरित्र-चित्रण की अनुपम स्वाभाविकता है। साथ ही पुश्किन का साहित्य राष्ट्र-प्रेम, जनता के प्रति असीम अनुराग, मानवता और मुक्ति-भावना से ओत-प्रोत है। इसी कारण पुश्किन का समग्र रूसी साहित्य पर इतना अनन्य प्रभाव पड़ा है, और वह रूस का राष्ट्र-कवि बन सका। पुश्किन के समकालीन लेखक पुश्किन को अपना आदर्श मान कर लिखते थे, प्रकाशित होने से पहले उसे अपनी रचनाएँ दिखाते थे। आज डेढ़ सौ वर्ष के बाद भी पुश्किन सोवियत् साहित्य की प्रेरणा और आदर्श है और सोवियत् रूस का सब से महान् राष्ट्र-कवि है। विश्व-साहित्य के महान्तम लेखकों की पंक्ति में उसका स्थान बाल्मीकि, कालिदास, होमर, दांते, शेक्सपियर, गेटे, बाल्ज़क, तालस्ताय और गोर्की के साथ है।

हिन्दी पाठकों द्वारा पुश्किन के इस महान् उपन्यास का स्वागत होगा, ऐसा मेरा विश्वास है।

२०-२-५२ शिवदानसिंह चौहान

# कप्तान की बेटी

जवानी में आत्म-सम्मान की रक्षा करो
—एक कहावत

एक

●

# गारद का हवलदार

कल वह रक्षा-सैनिकों का कप्तान होगया होता
"मुझे इसकी परवाह नहीं, उसे मामूली सिपाही ही बना
रहने दो।"

क्या बात की! उसे कितनी मुसीबतें उठानी होंगी .

... ... ... ... ... ...

अच्छा तो, उसका बाप कौन है?

—नियाज़्निन

मेरे बाप, आन्द्री पेत्रोविच ग्रिनियोफ़ ने अपनी जवानी में काउन्ट म्यूनिख़ के नीचे काम किया था और फिर सन् सत्रह सौ... में वह प्रथम श्रेणी के मेजर की हैसियत से रिटायर हो गये। इसके बाद वह सिम्बर्स्क प्रान्त में अपनी जागीर पर सदा के लिए बस गये। और वहीं उन्होंने आवदोत्या वासीलियेव्ना यू से विवाह

कर लिया। वह जिले के एक ग़रीब ज़मींदार की बेटी थी। हम नौ बच्चे थे। लेकिन मेरे सभी भाई-बहन शैशवकाल में ही गुज़र गये। राजकुमार 'ब' की कृपा से, जो हमारे निकट सम्बन्धी और गारद के मेजर थे, सेमियोनोव्स्की रेजिमेन्ट में मेरा नाम हवलदार के पद के लिए दर्ज कर लिया गया। यह समझ लिया गया था कि शिक्षा समाप्त होने तक जैसे मैं छुट्टी पर था। उन दिनों लालन-पालन और शिक्षा-दीक्षा की विधि आज-कल से भिन्न थी। पाँच वर्ष की उम्र में मुझे घर के साईस सावालिच के सुपर्द कर दिया गया। और उसे बता दिया गया कि अपने संयमशील आचरण का पुरस्कार जानकर उसे मेरी देख-भाल करनी होगी। उसकी देख-रेख में बारह वर्ष की आयु होने तक मैं रूसी भाषा में लिखना-पढ़ना सीख गया था और एक बोर्ज़ोई कुत्ते की तमाम ख़ूबियों का भेद समझने लगा था। इस उम्र में मेरे बाप ने मेरे लिए एक फ्रांसीसी शिक्षक मोशिये ब्यूप्रे को नौकर रख दिया। उसे मास्को से लाया गया था और साथ में उसके वास्ते एक वर्ष के लिए पर्याप्त शराब और ज़ैतून का तेल भी। सावालिच को इस व्यक्ति का आना बहुत अखरा था।

"भगवान जानता है, बालक का मुँह धुलाकर उसके बालों में कंघी करदी जाती है और उसे समय से खाना खिला दिया जाता है," वह अपने आपसे ही बड़बड़ाया था। "फ्रांसीसी पर पैसा ख़र्च करना बड़ा अच्छा लगता है! मालिक के पास जैसे यहाँ अपने नौकर नहीं थे!"

अपने देश में ब्यूप्रे नाई का काम करता था। इसके बाद वह प्रूस में एक सैनिक बन गया। और फिर रूस में एक शिक्षक बन-कर आगया, यद्यपि वह शिक्षक शब्द का साफ़-साफ़ अर्थ भी नहीं समझता था। आदमी तो वह भला था, पर निरा विचार-शून्य और चंचल स्वभाव का। नारी के प्रति उसका प्रणय-मोह अन्धा था। यह उसकी सबसे बड़ी कमज़ोरी थी। पुरस्कार रूप में उसे अक्सर घूँसे खाने को मिलते, जिससे वह घंटों पड़ा-पड़ा कराहता रहता। साथ ही 'वह बोतल का दुश्मन' भी नहीं था, जैसा कि वह स्वयं कहा करता। यानी वह कुछ ज़्यादा ही पीना पसन्द करता। लेकिन हमारे घर में चूँकि रात को खाने के बाद ही शराब दी जाती थी, और वह भी केवल एक-एक गिलास, और शिक्षक को अक्सर पूछा भी नहीं जाता था, इसलिए हमारे ब्यूप्रे ने अपने को चंद दिनों में ही गाँव में तैयार की गयी देसी ब्रांडी का आदी बना लिया। सच तो यह है कि वह अपने देश की शराबों से इस देशी ब्रांडी को ज़्यादा पसन्द करने लग गया था क्योंकि यह उसकी पाचन-क्रिया के अधिक अनुकूल थी। हम दोनों तो तुरन्त ही मित्र बन गये थे। और यद्यपि उससे आशा की जाती थी कि वह मुझे 'फ्रांसीसी, जर्मन और अन्य सारे विषय' पढ़ायेगा, लेकिन उसने उल्टे मुझसे थोड़ी-बहुत रूसी भाषा सीख लेना ही बेहतर समझा। इसके बाद हम दोनों अपने-अपने मन के अनुकूल कामों में लग गये। आपस में हम दोनों की खूब पटरी बैठती। अब मुझे किसी दूसरे विश्वसनीय सखा की इच्छा नहीं रही। लेकिन भाग्य ने

जल्द ही हम दोनों को एक दूसरे से अलग कर दिया। यह घटना इस तरह घटी।

हमारी धोबिन पलाश्का, जो चेचक-मुँह, मोटी-ताज़ी लड़की थी, और कानी आँख वाली ग्वालिन आकुल्का ने मेरी माँ के चरणों पर माथा टेक कर अपनी दण्डनीय आचरण-भ्रष्टता स्वीकार करली थी। उन्होंने आठ-आठ आँसू बहाकर उस 'मोस्सू' की शिकायत की थी जिसने फुसलाकर उनका सतीत्व छीन लिया था। मेरी माँ ऐसी बातों को अनदेखा करना गवारा न करती थीं। उन्होंने मेरे बाप से शिकायत करदी। मेरे पिता भी किसी काम को टालने के आदी न थे। उन्होंने फ़ौरन् उस दुश्चरित्र फ्रांसीसी को बुलवा भेजा। नौकरों ने बताया कि 'मोस्सू' मुझे सबक़ पढ़ा रहा है। मेरे पिता उठकर मेरे कमरे में आये। उस समय ब्यूप्रे बिस्तर पर गहरी नींद में सो रहा था। यहाँ पर यह बता देना चाहिए कि मेरे लिए मास्को से संसार का एक बड़ा मान-चित्र मँगवाया गया था। वह दीवार पर टँगा था, और उसका कभी इस्तेमाल नहीं किया गया था। उसकी लम्बाई-चौड़ाई को देखकर मेरा मन बार-बार ललचा उठता था। मैंने उससे एक पतंग बनाने का निश्चय किया। और ब्यूप्रे की नींद का लाभ उठाकर मैं इस काम में जुट गया। मैं पतंग में दुम लगा रहा था कि उसी समय मेरे बाप ने कमरे में प्रवेश किया। मेरी इन चेष्टाओं को देखकर उन्होंने मेरे कान खींचे, फिर झपट कर ब्यूप्रे की ओर बढ़े और उसे जगा दिया। मृदुतापूर्वक नहीं, बल्कि झकझोर कर, और उस पर बरस पड़े।

घबराहट में ब्यूप्रे ने उठना चाहा, पर उठ न पाया। यह अभागा फ्रांसीसी नशे में चूर था। मेरे पिता ने सारा भुगतान एक बार में ही चुका दिया। उन्होंने उसे कॉलर थाम कर झटके से उठाया और लात मार-मार कर कमरे से बाहर कर दिया। और सावालिच की खुशी का क्या कहना, उन्होंने उसी दिन उसे अपने यहाँ से निकाल दिया। इस तरह मेरी शिक्षा समाप्त हुई।

अब मुझे मनमानी करने की खुली छूट मिल गयी। और मैं सारे दिन कबूतरों के पीछे दौड़ता फिरता और लड़कों के साथ उछल-कूद मचाता रहता। इस तरह मैं सोलह साल का हो गया। तब मेरे जीवन में एक परिवर्तन आया।

शरद् के दिन थे। माँ एक रोज़ बैठक वाले कमरे में शहद से मुरब्बा पका रही थीं और उबलते हुए फेन को देखकर मेरे मुँह में पानी भर रहा था, और मैं बैठा अपने ओंठ चाट रहा था। मेरे पिता खिड़की के पास बैठे राज-दरबार का 'वर्ष-बोध' पढ़ रहे थे, जो हर साल उनके नाम से आता था। उन पर इस किताब का प्रभाव अत्यन्त तीव्र होता था। उसे पढ़ते-पढ़ते वह हमेशा उद्विग्न हो जाया करते, और अनिवार्य रूप से उनका पित्त उभर आता। मेरी माँ को उनकी हर बात का पता था। वह इस अभागी पुस्तक को हमेशा छिपाकर रख देती थीं, और कभी-कभी तो ऐसा होता कि महीनों तक 'वर्ष-बोध' पर मेरे पिता की नजर भी न पड़ती। फिर भी अगर उनके हाथ लग जाता तो वह घंटों उसका पीछा न छोड़ते। सो इस समय मेरे पिता 'वर्ष-बोध' पढ़ रहे थे। रह-रह

कर अपने कन्धे हिलाकर दबी ज़बान में बोल पड़ते थे।

"लेफ्टीनेन्ट जेनरल!...यह शख़्श तो मेरी कम्पनी में हवलदार था अब दो रूसी तमग़े पा गया है!...और कुछ दिन पहले ही मैं और वह......।"

अन्त में उन्होंने 'वर्ष-बोध' को सोफ़े पर फेंक दिया और ऐसे गंभीर विचारों में डूब गये जिनके लक्षण किसी भी तरह शुभ नहीं थे।

हठात् वह मेरी माँ को लक्ष्य करके बोले, "आवदोत्या वासीलियेव्ना! पेत्रूशा कितने साल का हो गया?"

"सत्रहवीं में पड़ा है," माँ ने उत्तर दिया। "पेत्रूशा उसी साल पैदा हुआ था जब काकी नास्तास्या गेरासीमोव्ना की आँख मारी गयी थी और जब..... ।"

"अच्छा, अच्छा," मेरे पिता ने माँ की बात काटकर कहा, "तो अब यह फौज में भरती होने लायक़ हो गया। नौकरानियों के घरों के बहुत चक्कर काट लिए इसने और कबूतरखानों पर काफी चढ़ा-फिरा है।"

मुझ से बिछुड़ने के ख़्याल से मां इतना घबरा गईं कि चमचा उनके हाथ से छूट कर पतीली में जा गिरा और उनके गालों पर से आंसुओं की धार बह निकली। पर मेरी ख़ुशी छिपाये न छिपती थी। मेरे मन में फ़ौजी नौकरी के साथ आज़ादी और पीटर्सबर्ग के सपने गुंथे हुए थे। मैं मन ही मन गारद (संरक्षक-सेना) का अफ़सर बनने की कल्पना किया करता था।

यह, मेरी दृष्टि में, मानव ऐश्वर्य और सुख का सर्वोच्च पद था।

मेरे पिता अपनी योजनाओं को बदलना या टालना न जानते थे। मेरे जाने का दिन निश्चत कर दिया गया। उस दिन उन्होंने कहा कि वह मेरे हाथ मेरे भावी अफ़सर के लिए पत्र देंगे, और उन्होंने काग़ज़-क़लम मँगवाया।

"प्रिंस 'बी' को मेरा नमस्कार लिखना न भूलिएगा, आन्द्री पेत्रोविच," मां ने कहा, "और यह भी लिखें कि मुझे उनसे यही उम्मीद है कि वह पेत्रूशा पर कृपा-भाव बनाये रखेंगे।"

"कैसी फ़जूल बात है!" मेरे पिता ने त्योरी चढ़ा कर उत्तर दिया, "मैं प्रिंस 'बी' को क्यों लिखूं?"

"वाह, तुमने ही तो कहा था कि तुम पेत्रूशा के अफ़सर को लिखने वाले हो?"

"तो इससे क्या हुआ?"

"लेकिन प्रिंस 'बी' ही तो पेत्रूशा के अफ़सर हैं। पेत्रूशा का नाम जो सेमियोनोव्स्की रेजिमेंट में दर्ज किया गया है?"

"दर्ज किया गया है! इससे मुझे क्या? पेत्रूशा पीटर्सबर्ग नहीं जायगा। वहां नौकरी करेगा तो सीखेगा क्या? फ़जूल-ख़र्ची और विलासिता! नहीं, इससे तो अच्छा है कि वह फ़ौज में भरती हो और फ़ौज के क़ायदे-क़ानून पर चलना सीखे और बारूद की गन्ध पहचाने और सैनिक बने न कि एक छैला बना घूमता फिरे। गारद में नाम दर्ज हो गया है! कहां है पासपोर्ट इसका? मुझे तो दो।"

मां मेरा पासपोर्ट निकाल कर ले आयीं, जिसे उन्होंने एक संदूक में मेरी उस पोशाक के साथ रख छोड़ा था जिसे पहना कर मेरा बपतिस्मा कराया गया था, और कांपते हाथों से मेरे पिता को पकड़ा दिया। उन्होंने बड़े ध्यान से उसे पढ़ा और फिर मेज़ पर अपने सामने रख कर पत्र लिखना शुरू कर दिया।

मेरी उत्सुकता की सीमा न रही। अगर पीटर्सबर्ग नहीं तो फिर मुझे और कहाँ भेजा जा रहा है? मैंने उनके क़लम पर से अपनी निगाह नहीं हटाई, यद्यपि क़लम कुछ धीमा ही चल रहा था। आखिरकार उन्होंने पत्र समाप्त कर लिया और एक ही लिफाफ़े में पासपोर्ट भी रख कर उसे मुहरबन्द कर दिया। फिर अपना चश्मा उतार कर मेरी ओर उन्मुख होकर कहा :

"यह पत्र आन्द्री कार्लोविच 'र' के लिए है। वह मेरे पुराने दोस्त और साथी हैं। तुम उनके नीचे काम करने के लिए ओरनबर्ग जाओगे।"

और इस प्रकार मेरी मनोहर आशाओं पर एक साथ पानी फिर गया। पीटर्सबर्ग के मधुर, प्रफुल्ल जीवन के स्थान पर देश के एक दूर-सुदूर निर्जन स्थान की नीरसता गले पड़ने वाली थी। फ़ौज की भरती, जिसके बारे में मैंने अभी एक क्षण पहले तक इतने उल्लास से सोचा था, अब एक भयावह दुर्घटना-सी लगने लगी। लेकिन इसका विरोध करना बेकार होता। दूसरे दिन प्रातःकाल ही मुझे प्रवास पर ले जाने के लिए एक घोड़ा-गाड़ी आ गई। मेरा थैला, चाय के सामान वाली टोकरी और समोसों

और मठरियों के बंडल, जो पारिवारिक स्नेह के अन्तिम चिह्न थे, गाड़ी पर लाद दिये गये। मां-बाप ने दुआएँ दीं। पिता ने कहा :

"अलविदा, पियोत्र! स्वामिभक्ति की शपथ को सचाई से निभाना। अपने बड़ों की आज्ञा का पालन करना। उन से पक्ष-पात की इच्छा न रखना। अपने को आगे रखने की चेष्टा न करना और न अपने कर्तव्य की अवहेलना करना। 'अपने नये कपड़ों को सँभाल कर रखो और जवानी में आत्म-सम्मान की रक्षा करो'—इस कहावत को याद रखना।"

मां ने आंसू भर कर सावधान किया कि मैं अपने स्वास्थ्य की उपेक्षा न करूँ और सावालिच को 'बालक' की समुचित देखभाल करते रहने का आदेश दिया। उन्होंने मुझे ख़रगोश के चमड़े की वास्कट और लोमड़ी के पोस्तीन का ओवरकोट पहना दिया। सावालिच के संग मैं घोड़ा-गाड़ी पर सवार हुआ और ढार-ढार रोता हुआ अपनी यात्रा पर चल पड़ा।

शाम को मैं सिम्बर्स्क पहुँच गया। वहां अगले दिन रुककर मुझे अपने लिए कुछ ज़रूरी चीज़ें ख़रीदनी थीं। ख़रीदारी करने का भार सावालिच को सौंपा गया था। मैं एक सराय में ठहरा। अगले दिन प्रातःकाल ही सावालिच ख़रीदारी करने चला गया। खिड़की में से गन्दी गली का दृश्य देखते-देखते जब मैं ऊब गया तो सराय में चक्कर काटने लगा। बिलियर्ड खेलने के कमरे में मैंने एक पैंतीस वर्ष के लम्बे पुरुष को प्रवेश करते देखा। उसकी मूंछें लम्बी और काली थीं। वह ड्रेसिंग गाउन पहने था, उसके

हाथ में बिलियर्ड का हत्था और मुंह में पाइप लगा था। वह गिनती रखने वाले जमादार के साथ खेल रहा था। जीतने पर जमादार को वोद्का का गिलास पीने को मिलता था और हारने पर उसे मेज़ के नीचे घुटनों के बल रेंगना पड़ता था। मैं उनका खेल देखता रहा। खेल देर तक जारी रहा और जमादार को बार बार घुटनों के बल रेंगना पड़ा। अन्त में नौबत यहाँ तक पहुँची कि उसका मेज़ के नीचे से निकलना ही मुहाल हो गया। इस भद्र पुरुष ने जैसे अंत्येष्टि क्रिया के अवसर पर कुछ व्यंग्य-पदों का उच्चारण किया और फिर खेल में शामिल होने के लिए मुझे दावत दी। मैंने, यह कहकर कि खेलना नहीं आता, इन्कार कर दिया। उसे यह बात कुछ विलक्षण लगी। उसने जैसे दया-दृष्टि से मेरी ओर देखा। फिर भी आपस में वार्तालाप शुरू हो गया। तब मालूम हुआ कि उसका नाम इवानोविच ज़ूरिन है। कि वह हूज़ार (घोड़सवार सैनिक) रेजिमेन्ट का कप्तान है। कि वह रंगरूटों को ले जाने के लिए सिम्बर्स्क आया है और उसी सराय में ठहरा है। ज़ूरिन ने मुझे अपने साथ खाने के लिए निमंत्रित किया। कहा कि जैसा जो कुछ है उसी में से सैनिक साथियों की तरह बाँट कर खा लेंगे। मैं तुरन्त राज़ी हो गया। हम भोजन करने बैठ गए। ज़ूरिन ने विपुल मात्रा में शराब पी और यह आग्रह करके मुझे भी पिलाई कि मुझे फ़ौज के सैनिकों जैसा आचरण करना चाहिए। उसने मुझे ठेठ फ़ौजी चुटकुले सुनाए, जिनको सुनकर मैं हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया। भोजन करके उठते

समय तक हमारी घनिष्टता काफ़ी बढ़ चुकी थी। उस वक्त उसने मुझे बिलियर्ड का खेल सिखाने का प्रस्ताव किया।

"हम सैनिकों को यह खेल जरूर आना चाहिए" उसने कहा। "मार्च करते-करते, मान लो, हम किसी रद्दी मनहूस जगह पहुँच जायें तो फिर वहाँ क्या करें? हर समय तो यहूदियों की मार-पिटाई नहीं की जा सकती। इसलिए जब करने को कुछ न हो, उस वक्त सराय में जाकर बिलियर्ड खेलना चाहिए। पर इसके लिए खेल तो आना चाहिए।"

मैं राजी हो गया और बड़े मनोयोग से खेल सीखने लगा। ज़ूरिन ज़ोर-ज़ोर से चिल्ला कर मुझे प्रोत्साहित करता गया। खेल सीखने में मैं तेज़ी से प्रगति कर रहा था, इस पर वह आश्चर्य प्रकट करता गया। कई सबक़ देने के बाद वह बोला कि आओ दाँव लगाकर खेलें, एक प्वाइंट का एक पैसा। लाभ की दृष्टि से नहीं, बल्कि इसलिए कि निरुद्देश्य न खेलते जायें। उसने कहा कि यह बहुत बुरी आदत होती है। मैं इस पर भी राजी हो गया। ज़ूरिन ने 'पंच' ( एक तरह की शराब ) मंगाई और यह सीख दुहराते हुए मुझे भी पीने को विवश कर दिया कि मुझे भी फ़ौजी जीवन का आदी बनना चाहिए, और 'पंच' के बिना फ़ौजी जीवन ही क्या? जितना ही मैं पीता गया नशे से उतना ही असावधान होता गया। प्रतिबार मेरी गेंदें सीमा से बाहर जा गिरतीं। मैं उत्तेजित होता गया। गिनती रखने वाले जमादार को गिनना न आने के लिए गालियाँ बकता गया और लगातार दाँव चढ़ाता

3342

गया। संक्षेप में मैं एक ऐसे बुद्धू बालक की तरह पेश आया, जिसने पहली बार आजादी का मजा चखा हो। मुझे समय का विचार ही न रहा था। ज़ूरिन ने घड़ी देखी और बल्ला अलग रखकर बताया कि मैं सौ रुबल[1] हार गया हूँ। सुनकर मैं भौंचक्का रह गया। मेरी सारी पूंजी सावालिच के पास थी। मैं सफ़ाई देने लगा तो ज़ूरिन बात काटकर बोला :—

"चिन्ता न करो। यह कोई बड़ी बात नहीं। मैं ठहर कर ले लूंगा। तब तक चलो आरिनुश्का से मिल आयें।"

मैं कहता भी क्या ? जिस लापरवाही से मैंने दिन शुरू किया था, उसी लापरवाही से समाप्त भी किया। आरिनुश्का के यहां हमने रात का खाना खाया। ज़ूरिन बार बार मेरे गिलास में शराब उडेलता गया और अपनी सीख दुहराता गया कि मुझे फ़ौजी जीवन का आदी बनना चाहिए। खाना समाप्त कर जब हम चलने को हुए तो उस समय मैं खड़ा भी नहीं हो सकता था। आधी रात को गाड़ी में डालकर ज़ूरिन मुझे सराय ले आया।

सावालिच हमें सीढ़ियों पर मिला। मुझ में फ़ौजी जीवन के प्रति उत्साह के चिन्ह देखकर वह मर्मान्तक पीड़ा से रो पड़ा।

"आप को हुआ क्या, मालिक ?" उसने भर्राये स्वर से पूछा। "कहां से ऐसा हाल कर लाये ? हे भगवान! इतनी दुर्गति तो पहले कभी नहीं हुई !"

"चुप रह, काँपता क्यों है ?" जीभ ऐंठते हुए मैंने कहा, "तू

[1] रूसी सिक्का जो आज-कल रुपये के बराबर होता है।

ने ज़रूर पी रखी है। जा सो रह और मुझे बिस्तर में लिटा दे।"

दूसरे दिन मैं तीखा सर दर्द लेकर उठा! पिछले दिन की घटनाएँ स्मृति में धुंधली और असंबद्ध थीं। मैं उन्हें याद करने की कोशिश कर ही रहा था कि सावालिच ने बाधा डाल दी। वह चाय लेकर अन्दर घुस आया।

"इस छोटी उमर में ही आपने शराब पीनी शुरू कर दी, पियोत्र आन्द्रीविच" सर हिलाते हुए उसने कहा, "इतनी जल्दी! यह आदत सिखायी किसने है? न तो आपके पिता और न आपके दादा ही शराबी थे। और आपकी मां ने तो क्वास[1] से ज्यादा तेज़ शराब को कभी होंठ भी नहीं लगाये। तब फिर इसकी तह में कौन है? वही फ्रांसीसी, खुदा उस पर लानत भेजे। वही दौड़-दौड़ कर आन्तीपियेव्ना के यहाँ जाया करता था, 'मदाम' हमें अपनी वोद्का तो चखाओ!' यह थी आपकी 'हमें अपनी वोद्का तो चखाओ!' बेशक उसने आपको भली-भली बातें सिखाई हैं, कुत्ता कहीं का! जी नहीं, इस बात की ही तो ज़रूरत थी कि आपके लिए एक अधर्मी शिक्षक लगाया जाता। जैसे मालिक के पास और नौकर थे ही नहीं!"

मैं शर्मिन्दा हो गया और उसकी ओर पीठ फेर कर बोला, "मुझे बख्श दो, सावालिच। मुझे चाय नहीं चाहिए।" लेकिन

[1] रूसी शराब, राई से बनती है।

सावालिच अगर कभी उपदेश देना शुरू कर देता तो फिर उसको चुप कराना आसान न होता।

"अब तो आप समझ गये होंगे, प्रियोत्र आन्द्रीविच, कि ज्यादा पी जाने का नतीजा क्या होता है? आपका सर भारी है और भूख मारी गयी। शराब पीने वाला किसी काम का नहीं रहता। ... शहद के साथ खीरे का नमकीन पानी पी लो, या घर की बनी ब्रांडी का आधा गिलास ले लो। लाऊँ?"

उसी समय एक लड़का अन्दर आया और उसने मुझे जूरिन का पत्र दिया।

प्रिय प्रियोत्र आन्द्रीविच,

कृपया इस लड़के के हाथ सौ रूबल भेज दें जो कल बिलियर्ड में हारे थे। मुझे पैसों की सख्त जरूरत है।

हमेशा आपका ही,

इवान ज़ूरिन

मेरे पास कोई चारा न रहा। घोर उदासीनता का उपक्रम करके मैंने सावालिच की ओर देखा जो 'मेरे पैसों, कपड़ों और चीजों' का रखवाला था। और उसको आदेश दिया कि लड़के को सौ रूबल दे दे।

'क्या? मैं क्यों दूं इसे?"

"उसके इतने रूबल मुझ पर बक़ाया हैं," मैंने निरे शान्त-भाव से उत्तर दिया।

"बक़ाया हैं!" सावालिच ने दुहराया। उसका आश्चर्य

बढ़ता जाता था। "मगर जनाब को यह क़र्ज़ चढ़ा लेने की ज़रूरत कब पड़ी ? इसमें जरूर कुछ न कुछ गड़-बड़ है। आप जो चाहे कहें, मैं इसे पैसे नहीं दे सकता।"

मैंने सोचा कि इस निर्णयकारी अवसर पर अगर इस हठ-धर्मी व्यक्ति के ऊपर मैं अपना प्रभुत्व न जमा सका तो भविष्य में भी उसके कठोर अनुशासन से छुटकारा पाना दुष्कर हो जाएगा। इस लिये उसकी ओर घूरते हुए मैंने कठोर वाणी में कहा, "मैं तुम्हारा स्वामी और तुम मेरे सेवक हो। पैसे मेरे हैं। यह पैसे मैं बिलियर्ड खेलते हार गया क्योंकि मेरी खुशी इसी में थी। और मैं तुम्हें सख्त ताकीद किये देता हूँ कि बहस न करके तुम से जो कहा जाये वही किया करो।"

मेरे शब्दों को सुनकर सावालिच को काठ मार गया और वह हाथ फैंक कर अवसन्न बैठा रहा।

"जाते क्यों नहीं, तुम ?" मैं क्रोध से चीखा।

सावालिच रोने लगा।

"मेरे प्यारे प्रियोत्र आन्द्रीविच," भर्राई हुई आवाज में वह बोला, "मुझे दुख देकर न मारो। मेरे लाल, मेरी कही भी मानो। आपसे बूढ़ा जो हूँ। उस उचक्के को लिख भेजो कि यह सब मजाक था। हम पर कोई क़र्ज़ा बाक़ी नहीं है। उसे कहला दो कि तुम्हारे माँ-बाप ने तुम्हें दाँव लगाकर खेलने की सख्त मनाही की थी।..... "

"बस, बस, यह बकवास बन्द करो," मैंने कठोरतापूर्वक

बात काटकर कहा, "मुझे दो सारे पैसे, नहीं तो फ़ौरन नौकरी से बरख़ास्त कर दूंगा।"

सावालिच ने मेरी ओर चोट खायी निगाह से देखा और पैसे लाने के लिए उठकर चला गया। इस ग़रीब बूढ़े के लिए मेरे दिल में भी समवेदना उठ रही थी। लेकिन मैं अपनी खुदमुख़्तार हैसियत मनवा लेना चाहता था और यह साबित कर देना चाहता था कि अब मैं अबोध बालक नहीं रहा।

ज़ूरिन को सौ रूबल भेज दिये गये। सावालिच ने इस मनहूस सराय से मुझे निकाल ले चलने की जल्दी मचाई। उसने आकर बताया कि घोड़े तैयार हैं। मन में अशान्त ग्लानि और मूक पश्चाताप का भाव लेकर मैं सिम्बर्स्क से विदा हुआ। अपने नये शिक्षक को अलविदा कहने भी नहीं गया। इस बात की भी उम्मीद न रखी कि उससे शायद फिर कहीं भेंट होगी या नहीं।

दो

●

# मार्ग-दर्शक

दूर देश ओ, मेरे अनजाने दूर देश
तेरे यहाँ मैं अपनी इच्छा से नहीं आया
न मेरा घोड़ा ही मुझे यहाँ भटका लाया
मेरी असावधानियों, मेरे साहस और यौवन
और पीने की कांक्षा ने मुझे तेरे यहाँ पहुँचाया है।

—एक पुराना गीत

यात्रा के अनुभव यों भी सुखद नहीं थे। जो रक़म हार गया था वह उन दिनों के हिसाब से बहुत बड़ी थी। मन ही मन मैं यह भी अनुभव कर रहा था कि सिम्बर्स्क की सराय में मैंने अपनी बेवकूफ़ी का ही परिचय दिया। और सावालिच के प्रति मेरा व्यवहार भी ग़लत था। इन बातों ने मुझे अत्यन्त दीन बना दिया। बूढ़ा सावालिच खिन्न मन से कोचवान् की बग़ल में चुपचाप बैठा था। उसका मुँह मेरी ओर न था।

अक्सर खखार कर वह अपना रुँधा कंठ साफ़ कर लेता, पर बोलता कुछ न। मैं उसके साथ सुलह करने की मन में ठान चुका था लेकिन बात कहाँ से शुरू की जाय, यह समझ में न आता था। आख़िरकार मैंने उससे कहा :—

"अच्छा, अच्छा सावालिच ! आओ इस बात को भूल जायें। मैं बहुत दुखी हूँ। सोचता हूँ कि ग़लती मेरी ही थी। कल मुझ पर शरारत का भूत सवार हो गया और मैंने तुम्हें अकारण ही दुख दिया। लो तुम से पक्का वायदा करता हूँ कि आगे विवेक से काम लूँगा और तुम्हारे कहे पर ही चलूँगा। देखो तो, अब इतना नाराज़ होने की ज़रूरत नहीं। आओ हम आपस में सुलह करलें।"

"आह मेरे प्यारे पियोत्र आन्द्रीविच," उसने गहरी आह भरकर कहा, "मैं तो ख़ुद अपने से ही नाराज़ हूँ—सारी ग़लती मेरी ही तो थी। मैं तुम्हें वहाँ अकेला छोड़कर चला ही क्यों गया ? यही बात थी—मैं लालच के आगे झुक गया। मैंने सोचा कि पादरी की पत्नी से मिल आऊँगा, मेरी पुरानी दोस्त है। बिल्कुल उस कहावत की-सी बात हुई कि 'गये थे नमाज़ पढ़ने और रोज़े गले पड़ गये।' यह तो बड़ी भयानक बात है। मालिक और मालकिन को अब कौनसा मुँह दिखाऊँगा ? जब सुनेंगे कि उनका बेटा शराब पीता है और जूआ खेलता है तो वह क्या कहेंगे ?"

सावालिच का मन रखने के लिए मैंने उसे वचन दिया कि उसकी इजाज़त के बिना भविष्य में एक पाई भी ख़र्च नहीं करूँगा।

कुछ देर में उसका गुस्सा उतर गया, यद्यपि वह अब भी सर हिलाकर अपने आप से ही बड़बड़ा उठता था, "सौ रूबल ! मज़ाक नहीं है !"

मैं अब अपने इष्ट स्थान पर पहुँचने वाला था। एक निर्जन मैदान, जिसे पहाड़ियों और ख़ार-दर्रों ने चाक कर रखा था, चारों ओर फैला हुआ था। हमारी घोड़ागाड़ी एक सँकरे रास्ते से गुज़र रही थी। या कहें कि किसानों के छकड़ों की बनायी लीक पर चल रही थी। कोचवान सहसा व्यग्र होकर क्षितिज की ओर टकटकी बाँधकर देखने लग गया। और फिर टोपी उतार कर मेरी ओर मुड़ा और बोला :

"क्यों न हम वापस लौट चलें, जनाब ?"

"क्यों किस लिए ?"

"मौसम का कुछ ठिकाना नहीं। आँधी उठ रही है। देखिए ज़रा, बरफ़ पर जैसे झाड़ू फेरती चली आ रही है।"

"तो इससे क्या हुआ ?"

"उस तरफ़ देखते हैं ?"

कोचवान ने अपने कोड़े से पूरब की ओर इशारा किया।

"सफ़ेद मैदान और साफ़ आसमान के अलावा मुझे तो और कुछ नहीं दीखता।"

"और वह छोटा सा बादल का टुकड़ा ?"

आकाश के कोने पर सचमुच ही मुझे एक सफ़ेद बादल दिखायी दे रहा था, जिसे मैंने पहले दूर की कोई पहाड़ी समझा

था। कोचवान ने बताया कि यह बादल इस बात का लक्षण है कि अब बरफ़ का तूफ़ान आने वाला है।

इन इलाक़ों में आने वाले बरफ़ के तूफ़ानों के बारे में मैंने सुन रखा था कि कभी कभी मुसाफ़िरों और गाड़ियों के क़ाफ़िले उनके नीचे समूचे दब जाते हैं। कोचवान की तरह सावालिच का भी यही ख़्याल था कि हम लौट चलें। लेकिन मुझे हवा की रफ़्तार बहुत तेज़ न दिखाई दी। मुझे यह भी उम्मीद थी कि अपने निर्दिष्ट स्थान पर हम समय से पहुँच जायेंगे। इसलिए कोचवान को मैंने गाड़ी तेज़ चलाने की ताकीद की।

कोचवान ने घोड़े पूरी रफ़्तार से छोड़ दिये, लेकिन फिर भी वह पूरब की दिशा में कनखियों से देखता रहा। घोड़े ख़ूब दौड़े। पर इस बीच हवा की रफ्तार लगातार तेज़ से तेज़तर होती गई। बादल का नन्हा सा टुकड़ा भीमकाय हो गया और सघन बनकर सारे व्योम पर छाया गया। बरफ़ के सूक्ष्म कण गिरने लगे और फिर सहसा बरफ़ के बड़े बड़े परतदार टुकड़े बरसने लगे। हवा गरज रही थी और हमारे सर पर तूफ़ान फट पड़ा था। एक क्षण में ही काला आकाश पिघल कर बरफ़ का असीम सागर बन गया था।

"बुरा हाल है, जनाब," कोचवान ने चिल्लाकर कहा, "बरफ़ानी तूफ़ान!"

मैंने घोड़ागाड़ी से बाहर झाँककर देखा: अन्धकार और बवंडर ने हमें लपेट लिया था। हवा इतने प्रचंड कोप से गरज रही थी मानो सजीव जन्तु हो। मैं और सावालिच बरफ़ से अँट

गये थे। घोड़े आहिस्ता आहिस्ता चल रहे थे, फिर यकायक रुक गये।

"चलते क्यों नहीं ?" मैंने अधीर होकर कोचवान से पूछा।

"चलने से फ़ायदा ?" अपनी सीट से नीचे कूदते हुए उसने कहा, "मुझे नहीं मालुम कि इस वक्त हम कहाँ पर हैं। यहाँ कोई लीक नहीं है और अब अन्धेरा भी घना हो गया।"

मैं उसे डाँटने लगा लेकिन सावालिच ने उसका पक्ष लिया:

"आपने इसकी सलाह क्यों नहीं मानी ?" उसने रोष से भर-कर कहा, "अब तक तो आप वापस सराय पहुँच गये होते, और चाय पीकर सुबह तक के लिए आराम से बिस्तर में सो गये होते। जब तूफ़ान थमता, हम फिर चल पड़ते। आख़िर ऐसी जल्दी क्या थी। शादी में तो नहीं पहुँचना था हमें!"

सावालिच का कहना दुरुस्त था। पर अब कुछ नहीं किया जा सकता था। बरफ़बारी बहुत तेज़ थी। गाड़ी के इर्द-गिर्द बरफ़ का विशाल ढेर जमा हो गया था। घोड़े सरनगूं खड़े थे और रह रह कर काँप उठते थे। कोचवान ने इस ख्याल से कि कुछ न कुछ तो करना चाहिए, उनके गिर्द घूम कर जूआ ठीक किया। सावालिच पूर्ववत बड़बड़ा रहा था। मैं चारों ओर आँखें फाड़ फाड़ कर घूर रहा था कि कहीं कोई घर-झौंपड़ी ही नज़र आजाये, या कहीं सड़क का चिन्ह ही दिख जाये। लेकिन उस बवंडर की अभेद्य वायु के आर पार मुझे कुछ नज़र न आया। सहसा मेरी निगाह किसी काली चीज़ पर जा अटकी।

"अरे कोचवान!" मैंने ज़ोर से पुकारा। "देख तो उस ओर

वह काली चीज़ क्या है ?"

कोचवान ने उस दिशा में घूर कर ताका।

"भगवान जाने क्या चीज़ है," कोचवान ने अपनी सीट पर चढ़ते हुए कहा, "न तो वह गाड़ी है, न पेड़ है और उसमें हरकत नज़र आती है। भेड़िया होगा या कोई आदमी "

मैंने उस अज्ञात वस्तु की ओर चलने के लिए उससे कहा ही था कि देखा वह चीज़ अपने आप हमारी तरफ़ ही बढ़ती आरही थी। दो मिनट में एक आदमी हमारे सामने आ पहुँचा।

"अरे, ओ, भले आदमी," कोचवान ने उसे पुकारा, "जानते हो सड़क कहाँ है ?"

"यह रही सड़क," राहगीर ने उत्तर दिया, "मैं पक्की ज़मीन पर खड़ा हूँ। लेकिन इससे क्या ?"

"सुनो भले आदमी। तुम इस इलाक़े को तो जानते होगे ?" मैंने पूछा, "रात गुज़ारने के लिए हमें किसी मकान तक ले जा सकते हो ?"

"जानता हूँ इस इलाक़े को," राहगीर ने उत्तर दिया, "अपनी ओर से तो मैंने इसका चप्पा चप्पा छान मारा है। मगर देखते हो मौसम का हाल ? इसमें राह भटक जाओगे। अच्छा है कि यहीं रुक कर इन्तज़ार करो। शायद बरफ़ानी तूफ़ान थम जाय। अगर आसमान साफ़ हो जाय तो हम तारों के सहारे भी राह तलाश कर सकते हैं।"

उसके अविचल धैर्य्य ने मुझे भी साहस दिया। मैंने दैव पर

भरोसा करके उस अनन्त मैदान में ही रात काटने का निश्चय कर लिया। उसी वक्त वह राहगीर कोचवान की बग़ल में कूद कर जा बैठा और उससे बोला—

"ख़ुदा का शुक्र करो। पास में ही एक गाँव है। गाड़ी दाहिनी ओर मोड़कर सीधे चलो।"

"दाहिनी ओर क्यों चलूँ?" कोचवान ने चिढ़कर कहा। "तुम्हें सड़क दिखाई भी देती है? दूसरों के घोड़े हाँकना बहुत आसान है!"

कोचवान की बात मुझे ठीक जँची।

"सच तो है, तुम्हें कैसे मालूम हुआ कि हम किसी गाँव के नज़दीक हैं?" मैंने उस आदमी से पूछा।

"ऐसे कि हवा का झोंका वहाँ से धूएँ की गन्ध उड़ा लाया है," उसने उत्तर दिया, "तो गाँव भी पास में होगा।"

उसकी घ्राण-शक्ति की सूक्ष्मता ने मुझे आश्चर्यचकित कर दिया। मैंने कोचवान को चलने का आदेश दिया। बरफ़ की मोटी तह पर घोड़े कठिनाई से चल पा रहे थे। गाड़ी धीमे-धीमे आगे बढ़ रही थी। कभी बरफ़ के ढेर में फँस जाती, कभी किसी नाली में धँस जाती और दोनों ओर को हलकोरे लेले कर चल रही थी। लगता था मानो समुन्दर में तूफ़ान के बीच किसी जहाज़ पर सवार हों। साबालिच जब जब मुझ से टकराता, कराह उठता। मैंने सामने की चिलमन उठा दी। पोस्तीन का ओवरकोट अपने चारों ओर लपेट लिया और ऊँघने लगा। तूफ़ान के संगीत और गाड़ी

के मन्द मन्द हलकोरों ने जैसे मुझे लोरियाँ देकर सुला दिया।

मैंने एक सपना देखा जिसे मैं आज तक नहीं भुला सका। और जब कभी मैं अपनी जिन्दगी के विचित्र उलट फेरों के बारे में सोचता हूँ, मुझे उसमें हमेशा एक भविष्यवाणी छिपी नजर आती है। पाठक मुझे माफ़ करें। शायद आप खुद अपने अनुभव से जानते होंगे कि कपोल कल्पनाओं से नफ़रत करने वाले व्यक्ति के लिए भी अंध-विश्वासों में पड़ जाना अक्सर कितना स्वाभाविक हो जाता है।

उस वक्त मैं ऐसी मानसिक अवस्था में था जिसमें आयी हुई नींद के छाया-चित्रों में वास्तविकता स्वप्नों में विलीन हो जाती है। उस समय मुझे लगा जैसे तूफ़ान अब भी हुङ्कार भर रहा था और हम बरफ़ानी रेगिस्तान में ही भटकते फिर रहे थे।...सहसा मैंने एक फाटक देखा और गाड़ी हमारी हवेली के आँगन में जा पहुँची। मुझे डर लगा कि मेरे पिता कहीं मेरी अनचाही वापसी पर भी नाराज न हो जायें और इसे जानबूझ कर की गयी अवज्ञा न समझ लें। व्यग्रता की दशा में मैं गाड़ी से नीचे कूदा तो वहाँ शोक में डूबी माँ को खड़े पाया, जो मुझे लेने के लिए बाहर सीढ़ियों तक चली आयी थीं।

"शोर न मचाना," माँ ने कहा, "वह बीमार हैं। उनका अन्त समय नजदीक है और वह तुमसे विदा लेना चाहते हैं।"

भयकातर हो मैं उनके पीछे पीछे शयन-कक्ष तक गया। अन्दर धीमी रोशनी थी। उदास मुद्रा में लोग बिस्तर के गिर्द खड़े थे।

ख़ामोशी से मैं निकट तक चला गया। माँ ने पलंग पर लगी मच्छरदानी को उठाकर कहा, "आन्द्री पेत्रोविच! पेत्रूशा आ गया। तुम्हारी बीमारी का हाल सुनते ही चला आया। उसे आशीर्वाद दो।" मैं घुटनों के बल झुक गया और बीमार व्यक्ति की ओर देखा। किन्तु मैंने वहाँ देखा क्या? मेरे पिता के स्थान पर वहाँ काली दाढ़ी वाला एक किसान लेटा मेरी ओर प्रमोद भरी दृष्टि से देख रहा था! "यह क्या माजरा है? मेरा बाप तो नहीं यह। मैं इस किसान से आशीर्वाद क्यों माँगूं?"—"कोई बात नहीं, पेत्रूशा" मा ने उत्तर दिया, "शादी के अवसर पर यह तुम्हारे पिता की जगह लेगा। इसका हाथ चूमो और तुम्हें अपना आशीर्वाद देने दो।"...

मैं ऐसा न कर सका। इस पर वह किसान कूद कर बिस्तर से बाहर आ गया, और अपने पीछे से कुल्हाड़ी उठा कर घुमाने लगा। मैं भागना चहता था पर भाग न पाता था। कमरा मुर्दों से भरा था। मैं उनसे ठोकर खाकर रक्त के कुण्ड में जा गिरा......उस भयानक किसान ने मुझे स्नेह-पूर्वक बुलाया: "डरो नहीं, यहाँ आओ, तुम्हें आशीर्वाद दूं।" मेरे व्याकुल मन पर डर छा गया... ...उसी समय मेरी नींद उचट गयी।

घोड़े खामोश खड़े थे। मुझे अपने हाथ से थामकर सावालिच कह रहा था:—

"जनाब, बाहर निकलिए। हम पहुँच गये।"

"कहाँ?" अपनी आँखें मलते हुए मैंने पूछा।

"सराय में। ख़ुदा की मदद से हम सीधे अहाते की दीवार से आ टकराए। जल्दी कीजिए। आइए अपने को गरम कर लीजिए।"

मैं घोड़ा-गाड़ी से उतर पड़ा। बरफ़ानी तूफ़ान अब भी जारी था, लेकिन कुछ कम तेज़ी से। अंधेरा इतना था कि हाथ पसारे न सूझता था। सराय का मालिक हमें दरवाज़े पर मिला। वह अपने कोट के नीचे लालटेन थामे था। वह हमें एक छोटे-से लेकिन काफ़ी साफ़ कमरे में ले गया। वहाँ लकड़ी की जलती खमाँची रोशनी दे रही थी। दीवार पर एक राइफ़िल और एक ऊँची कज्ज़ाकी टोपी टँगी हुई थी।

सराय का मालिक यायिक कज्ज़ाक था। क़रीब साठ साल का, लेकिन फुर्तीला और स्वस्थ। सावालिच चाय के सामान वाला बक्स उठा लाया और उसने चाय बनाने के लिए आग मँगाई। चाय का ख्याल मुझे पहले कभी इतना खुशगवार न लगा था। सराय का मालिक सामान की देखभाल करने चला गया।

"हमें राह दिखाने वाला आदमी कहाँ है?" मैंने सावालिच से पूछा।

"यहाँ हूँ, जनाब," ऊपर से एक आवाज़ आई।

मैंने ऊपर को नज़र उठाई और मुझे बुखारी की बग़ल में अलमारी पर से एक काली दाढ़ी और दो चमकती आँखें दिखाई दीं।

"भाई तुम तो ठिठुर गये होंगे?"

"लगता तो है, क्योंकि सिर्फ एक पतली मिरज़ई ही तो पहने हूँ। मेरे पास भी भेड़ के चमड़े का कोट था, लेकिन सच बताऊँ कि कल मैंने उसे एक शराबघर में गिरवी रख दिया। तब कोहरा इतना घना न लगता था।"

इसी वक्त सराय का मालिक उबलता हुआ समावार उठाये अन्दर आया। राह बताने वाले आदमी को मैंने चाय पीने के लिए बुलाया। वह अल्मारी से उतरा। उसकी शक्ल मुझे अनोखी लगी। वह क़रीब चालीस साल का, मामूली क़द का, दुबला और चौड़े कन्धों वाला आदमी था। उसकी काली दाढ़ी में बाल सफ़ेद होने लगे थे। उसकी बड़ी, सजीव आँखें कभी स्थिर न रहतीं। उसके हँसमुख चेहरे से धूर्तता टपकती थी। उसके बाल किसानों जैसे कटे थे। वह एक फटी मिरज़ई और तुर्की पतलून पहने था। मैंने उसे चाय का प्याला पकड़ाया। उसने उसे चखा और मुँह बना दिया।

"मेहरबानी करके जनाब......इनको, मुझे एक गिलास वोद्का देने के लिए कहदें। कज़्ज़ाक चाय नहीं पीते।"

मैंने फ़ौरन उसकी इच्छा पूरी कर दी। सराय का मालिक दराज़ से एक बोतल और गिलास निकाल कर उसके पास गया और उसके चेहरे की ओर देखकर बोला:—

"आहा! तुम इस तरफ़ फिर आ गए! कहाँ से आ रहे हो?"

राह बताने वाले ने आँख मारी और पहेलियों में जवाब देने लगा:—

मैं बावर्चीख़ाने के बग़ीचे में पटुवे के बीज बीनता फिरा। दादी ने ढेला मारा लेकिन मुझे लगा नहीं। और तुम्हारे संगी-साथी कैसे हैं, मज़े में ?"

"कुछ ख़ास नहीं," सराय के मालिक ने कहा। वह भी रूपकों में बोल रहा था। "उन्होंने शाम की पूजा के लिए गिरजे का घंटा बजाना चाहा, लेकिन पादरी की बीवी ने मना कर दिया। पादरी दौरे पर गया हुआ है और गिरजे के चौक में शैतान जमा होते हैं।"

"फ़िकर न करो, काका," भिखमंगा बोला, "अगर बारिश हुई तो कुकुरमुत्ते उगेंगे ही और अगर कुकुरमुत्ते होंगे तो उनके लिए टोकरी भी आ जायगी। अब (उसने फिर आँख मारी) कुल्हाड़ी को अपने पीछे रख दो। लकड़हारा चक्कर लगा रहा है। जनाब, यह आपकी सेहत के लिए !"

इन शब्दों के साथ गिलास उठाकर उसने अपने ऊपर क्रॉस बनाया और एक साँस में ही पूरा गिलास पी गया। फिर मुझे झुक कर सलाम किया और बुख़ारी के पास की अलमारी पर चढ़ गया।

उस वक़्त मैं चोरों की इस बोली को न समझ पाया था, लेकिन बाद को मैं भाँप गया था कि वे यायिक कज़्ज़ाकों की स्थिति के बारे में बात कर रहे थे, जिन्हें सन् १७७२ के विद्रोह के बाद हाल में ही दबा दिया गया था। सावालिच को यह सब सुनकर बुरा लग रहा था। वह सराय के मालिक और राह बताने वाले दोनों की ओर शक की नज़र से देखता रहा। यह सराय आस पास के

गाँवों से दूर स्टेपी के मैदान में अकेली इमारत थी और लुटेरों के अड्डे सी मालूम होती थी। लेकिन इसके अलावा और कोई चारा न था। फिर चल पड़ने का सवाल ही न उठता था। साबालिच की परेशानी से मुझे खुशी हो रही थी। इस बीच मैंने सोने की तैयारी कर ली और तिपाई पर लेट रहा। साबालिच ने बुखारी पर सोने का फैसला किया। कुछ ही देर में कमरा लोगों के खर्राटों से गूँज गया और मैं गहरी नींद की गोद में जा पड़ा।

सबेरे कुछ देर से जब मैं उठा तो देखा कि तूफ़ान थम गया है। सूरज आसमान में चमक रहा था। सीमाहीन स्टेपी का मैदान सफ़ेद चौंधाने वाले बरफ़ से ढँका था। गाड़ी में घोड़े जोत लिये गये थे। मैंने सराय के मालिक को पैसे चुकाये। उसने इतने कम पैसे लगाए थे कि सावालिच ने भी हुज्जत नहीं की, न वह उसे पीटने पर ही उतारू हुआ, जैसी कि उसकी आदत थी। पिछली शाम को उसके मन में जो सन्देह उठे थे, वह उन्हें भी भूल गया। मैं ने राह बताने वाले आदमी को बुला कर इतनी सहायता करने के लिए धन्यवाद दिया और उसे वोद्का पीने के लिए आधा रूबल देने को सावालिच से कहा।

"आधा रूबल ?" उसने कहा, "किस लिये ? इसलिये कि आप उसे गाड़ी में बिठा कर सराय तक लाए थे ? जनाब, आप जो चाहे कहें, हमारे पास आधा रूबल फ़ालतू नहीं है। अगर हम सब को बख़्शीश देते फिरें तो ज़ल्द ही फ़ाकों पर नौबत बन आयेगी।

सावालिच से बहस करना बेकार था। मैं वायदा कर चुका था कि सारे पैसों पर इसका ही अधिकार रहेगा। फिर भी, मैं यह सोचकर खीझ गया कि इस स्थिति में भी नहीं हूँ कि उस आदमी का धन्यवाद कर सकूँ जिसने मुझे वास्तविक ख़तरे से नहीं तो कम से कम बड़ी विकट और अप्रिय स्थिति में फँस जाने से बचाया था।

"बहुत अच्छा", मैंने शान्त भाव से कहा, "अगर उसे आधा रूबल नहीं देना चाहते तो मेरे कपड़ों में से ही कुछ दे दो। बेचारा बहुत कम पहने है। मेरा ख़रगोश के चमड़े वाला कोट इसे दे दो।"

"हम पर रहम करो, पियोत्र आनद्रीइच!" सावालिच चीख़ा। "ख़रगोश के चमड़े के कोट से उसका क्या भला होगा? वह उसे अगले ही शराब घर में एक गिलास के बदले बेच देगा, कुत्ता कहीं का।"

"मैं उसे शराब के लिए बेचूँ या न बेचूँ, बूढ़े मियाँ, तुम्हें इससे मतलब?" भिखमंगे ने कहा। "जनाब ने ख़ुद अपना कोट मुझे दिया है। यह तुम्हारे मालिक की ख़ुशी है। और नौकर की हैसियत से तुम्हारा काम तो बस अपने मालिक का हुक्म बजा लाना है न कि बहस करना।"

"तुझे ख़ुदा का भी डर नहीं, डाकू कहीं का," सावालिच ने गुस्से में जवाब दिया, "तुम ने देखा कि बालक अभी नादान है और बस पहुँच गये उसके कोमल स्वभाव का फ़ायदा उठा कर अपना उल्लू सीधा करने। एक भद्र पुरुष के कोट को लेकर तुम क्या

करोगे ? कितनी भी कोशिश करके देख लो, उस में तुम्हारे ये भारी और बेढंगे कन्धे नहीं समा सकते !"

"मेहरबानी करके बहस बन्द करो और फ़ौरन कोट निकाल लाओ," मैंने सावालिच से कहा ।

"या खुदा !" सावालिच ने दीर्घ श्वास खींच कर कहा। "यह कोट तो एक दम नया है ! और फिर देना भी तो किसी भले आदमी को नहीं, बल्कि एक बेशरम शराबी को !"

बहरहाल, कोट आगया । किसान ने फ़ौरन पहन कर देखा। जो कोट अब मुझे भी कसने लगा था वह उसके लिए तो जरूर ही कुछ ज्यादा तंग होता । फिर भी किसी तरह उसने वह अपने बदन पर चढ़ा ही लिया, यद्यपि ऐसा करते समय उसकी बखिया उधड़ने लगी थी । धागों का टूटना सुनकर सावालिच तो जैसे गुर्राता रहा । मेरे तोहफ़े से वह भिखमंगा जरूर बेहद खुश था । वह मुझे घोड़ा गाड़ी में बैठाने के लिए आया और नीचे झुक कर सलाम करते हुए बोला :—

"जनाब का शुक्रिया ! खुदा आपको नेकी का फल दे। जिन्दगी भर आपकी कृपाओं को याद रखूँगा !"

वह अपने रास्ते चला गया और मैं सावालिच की ओर ध्यान दिये बिना ही अपने रास्ते । कुछ देर में ही मैं पिछले दिन के बरफ़ानी तूफ़ान, राह दिखाने वाले आदमी और खरगोश के चमड़े के कोट, इन सब को भूल गया ।

ओरनबर्ग पहुँच कर मैं सीधा फ़ौज के जेनरल के यहाँ गया।

वह लम्बे क़द का था और बुढ़ापे की वजह से उसकी कमर झुकने लगी थी। उसके लम्बे बाल बिल्कुल सफ़ेद थे। उसकी पुरानी और रंग-उतरी वर्दी अन्ना नाम की मलका के ज़माने की याद दिलाती थी। उसके बोलने का लहजा जर्मन था। मैंने उसे अपने बाप का ख़त दिया। जब अपना नाम बताया तो उसने मुझ पर एक उड़ती नज़र फेंकी।

"ख़ुदा तुम्हारी उम्र दराज़ करे!" उसने कहा। "लगता है जैसे कल की ही बात है जब आन्द्री पेत्रोविच तुम्हारी ही उम्र के थे, लेकिन देखो तो अब उनका बेटा कितना बड़ा हो गया। ओह! वक़्त गुज़रते देर नहीं लगती!"

उसने ख़त खोला और दबे स्वर से पढ़ने लगा। बीच-बीच में वह अपनी नुक्ताचीनी भी जोड़ता जाता: "प्रिय सर आन्द्री कार्लोविच, उम्मीद है कि हज़ूर,...इतना तकल्लुफ़ बरतने की ज़रूरत! छि: उन्हें अपने पर ही शर्म आनी चाहिए! डिसिप्लिन को सब से ऊपर का दर्जा देना ज़रूरी है, लेकिन अपने पुराने साथी को क्या इस तरह लिखा जाता है?......'हज़ूर मुझे भूले नहीं होंगे'..... हूँ .....'और......जब......स्वर्गीय फ़ील्ड मार्शल म्यूनिख़ .....मार्च......और ......कारोलिंचेन'......क्या ख़ूब! तो उन्हें अभी याद है कि हम लोग कैसे बच निकले थे!...'अब काम की बात पर आता हूँ..... आपके पास अपने लुच्चे बेटे को भेज रहा हूँ'.....हूँ......'उसे काँटेदार दस्तानों में पकड़ कर रखियेगा'......काँटेदार दस्ताने क्या बला होते हैं! यह कोई

रूसी मुहावरा होगा.. इसका क्या मतलब है?" उसने मुझसे पूछा।

"इसका मतलब यह है," मैंने मासूम बनकर जवाब दिया, "कि स्नेहपूर्वक बर्ताव करें, कभी ज्यादा कठोर न हों, काफी आजादी दें।"

"हूँ, यह है......" "और उसे कभी जरूरत से ज्यादा ढील न दें।" नहीं, इससे साफ़ है कि 'कांटेदार दस्तानों' का मतलब कुछ और होता है...... "साथ में उसका पासपोर्ट भी है"..... कहाँ है? आह, यह रहा......"सेमियोनोवस्की रेजिमेन्ट को लिख दें" ......ठीक, ठीक, यह सब हो जायगा......"इजाज़त दें कि आपके पद को भूलकर एक पुराने साथी और दोस्त की तरह मैं आपको गले लगा लूँ"......आह, आखिरकार उन्हें इसका ख्याल आ ही गया...... आदि आदि......"

"अच्छा ख़ैर तुम्हारे पिता की इच्छानुसार ही सब कर दिया जाएगा," ख़त समाप्त करके मेरा पासपोर्ट अलग रखते हुए उसने कहा, "अफ़सर की पदवी देकर तुम्हें 'न' रेजिमेन्ट में तब्दील कर दिया जायगा। इसलिए कि समय नष्ट न हो, तुम कल ही बेलोगोर्स्की क़िले में चले जाओ और कप्तान मिरोनोफ़ के मातहत काम करो। वह एक बहुत अच्छा और दयानतदार आदमी है। वहाँ तुम्हें सही मायनों में फ़ौजी जिन्दगी मिलेगी और डिसिप्लिन सीख पाओगे। ओरनबर्ग में धरा ही क्या है। बेकारी नौजवान के लिए एक बुरी चीज़ है। और सुनो, आज रात को तुम मेरे साथ खाना खाओगे।"

"कूएँ से निकल कर खाई में जा गिरा हूँ," मैंने सोचा। "पैदा होने से पहले ही गारद का हवलदार बन जाने से मुझे क्या मिला ? इसने मुझे कहाँ ला पटका ? 'न' रेजिमेन्ट और किरग़ीज़ स्टेपी के मैदान की सरहद पर एक निर्जन क़िले में !"

आन्द्री कार्लोविच और उसके पुराने एडीकान (अंग-रक्षक) के साथ मैंने खाना खाया। मेज़ पर जर्मन कंजूसी का राज था। और मेरा ख्याल है कि कभी कभी अपने खाने में एक मेहमान शामिल करने के डर से ही उसने मुझे फ़ौरन क़िले की हिफ़ाज़ती फ़ौज में तब्दील कर दिया था। दूसरे दिन जेनरल से विदा लेकर मैं अपनी मंज़िल की ओर चल पड़ा।

## तीन

●

# क़िला

इस क़िले में हमारा जीवन मज़े का है
रोटी-पानी का ही बस सारा भोजन है
औ' जब ख़ूंख़ार दुश्मन
हमारी ख़ाली मेज़ों पर आता है
तब उसे हम असली दावत देते हैं
तोप में गोला भरकर मार भगाते हैं।

—सैनिकों का गीत

लोग पुराने ख़याल के हैं, जनाब !

—फ़ोन्वीज़िन

ओरनबर्ग से बेलोगोर्स्की का क़िला पच्चीस मील की दूरी पर था। उस तक पहुँचने वाली सड़क यायिक नदी के ऊँचे तट से सटकर जाती थी। नदी का पानी अभी तक जमा नहीं था और उसकी बोझिल लहरें सफ़ेद बरफ़ से ढँके किनारों के बीच स्याह

और शोक से आकुल सी दिखायी देती थीं। उसके परे किरग़ीज़ देश के स्टेपी मैदान फैले हुए थे। मैं उदास विचारों में डूबा था। क़िले का जीवन मुझे आकर्षित नहीं कर रहा था। मैंने अपने भावी अफ़सर को कल्पना की आँखों से देखने की कोशिश की, और सोचा कि वह एक कठोर, बुरे स्वभाव वाला बूढ़ा आदमी होगा जो डिसिप्लिन के अलावा और किसी बात की परवाह न करता होगा और एक तुच्छ बात पर भी मुझे सिर्फ़ रोटी-पानी का रूखा-सूखा भोजन देकर क़ैदख़ाने में डाल देगा। बाहर अंधेरा धीरे धीरे बढ़ रहा था। हम तेज़ रफ़्तार से आगे जा रहे थे।

"अभी क्या बहुत दूर है क़िला ?" मैंने कोचवान से पूछा।

"नहीं, ज्यादा दूर नहीं," कोचवान ने उत्तर दिया, "वह क्या रहा। सामने दिखायी देता है।"

मैंने बार बार सर घुमाकर चारों तरफ़ देखा, इस आशा से कि मुझे क़िले की डरावनी फाँकदार दीवारें, बुर्ज और मीनारें नज़र आयेंगी, लेकिन मुझे दिखा सिर्फ़ एक गाँव जिसके गिर्द लकड़ी के लट्ठों की मेंड-सी बनी हुई थी। गाँव के एक कोने पर तीन चार भूसे की बुर्जियाँ थीं जो आधी बरफ़ से ढँकी थीं। दूसरे कोने पर हवा से चलने वाली चक्की थी जिसके छाल के पंखे उस समय निश्चल थे।

"और क़िला कहाँ है ?" मैंने आश्चर्य से पूछा।

"क्यों, यही तो है," गाँव की ओर इशारा करते हुए कोचवान ने कहा और इसके साथ ही हमने गाँव में प्रवेश किया।

गाँव के सिंहद्वार पर मैंने ढाले हुए लोहे की एक तोप देखी। गाँव की सड़कें और गलियाँ टेढ़ी मेढ़ी और सँकरी थीं। घर नीचे नीचे थे और अक्सर खपरैल से पटे थे। कोचवान को मैंने कमांडर के यहाँ चलने की ताकीद की। और एक क्षण में ही हमारी बग्घी एक लकड़ी के गिरजाघर से लगी ऊँची भूमि पर बने काठ के मकान के सामने जाकर खड़ी हो गयी।

मेरे स्वागत के लिये कोई बाहर नहीं निकला। ड्योढ़ी में घुसकर मैंने बग़ल का दरवाज़ा खोला। अन्दर मेज़ के कोने पर बैठा एक बूढ़ा सैनिक हरे रंग की वर्दी पर एक नीला टुकड़ा सी रहा था। मैंने उसे अन्दर ख़बर देने के लिये कहा।

"चले जाइये अन्दर," उसने कहा, "सब लोग वहीं हैं।"

मैं एक साफ़ सुथरे कमरे में दाख़िल हुआ जो पुराने ढंग से सजाया गया था। कोने में एक अलमारी रखी थी जिसमें तश्तरी-प्याले क़रीने से सजे थे। दीवार पर फ्रेम में जड़ा अफ़सरी पाने का डिप्लोमा (सनद) टँगा था। रंगीन तस्वीरें भी टँगी थीं जिनके विषय थे, "ओचेकोफ़ और क्रूसान्निन की विजय" "वधू निर्वाचन" और "बिल्ली की अन्त्येष्टि क्रिया।" ये तस्वीरें डिप्लोमा के चारों ओर रंगीन धब्बों जैसी दिखती थीं। खिड़की के पास रूसी जाकेट पहने और सर पर रुमाल बाँधे एक अधेड़ उम्र की औरत बैठी थी। वह सूत लपेट रही थी, जिसे एक काना आदमी, जो अफ़सर की वर्दी में था, हाथ फैलाकर थामे खड़ा था।

"आप किस काम से आये हैं?" औरत ने अपना काम जारी

रखते हुए पूछा ।

मैंने उत्तर दिया कि मैं फ़ौज में नौकरी करने के लिए आया हूँ और क़प्तान के सामने पेश होना अपना कर्तव्य समझता हूँ। यह कहकर मैं उस एक आँख वाले बूढ़े आदमी की ओर मुड़ा, जिसके बारे में मैंने अनुमान कर लिया था कि वही कमान्डर है। लेकिन इससे पहले ही कि मैं पहले से सोचा विचारा अपना भाषण शुरू करता, वह औरत बोल पड़ी :

"इवान कुज़ामिश घर पर नहीं हैं," उसने कहा, "वह पिता गेरासीम से मिलने गये हैं। लेकिन इससे कोई फ़रक नहीं पड़ता, महाशय। मैं उनकी पत्नी हूँ। आप का आना ख़ुशी की बात है। मेहरबानी करके बैठ जाइये।"

उसने दासी को बुलाकर हवलदार को ले आने का आदेश दिया। वह बूढ़ा आदमी अपनी एक आँख से ही मेरी ओर जिज्ञासा पूर्वक देखता रहा।

"क्या मैं पूछ सकता हूँ कि आप किस रेजिमेन्ट में काम करते रहे हैं ?"

मैंने उसकी जिज्ञासा शान्त कर दी।

"और क्या मैं पूछ सकता हूँ," उसने अपने प्रश्नों का सिलसिला जारी रखा, "कि आप को गारद से हटाकर क़िले की हिफ़ाज़ती फ़ौज में क्यों भेजा गया ?"

मैंने जवाब दिया कि मेरे बड़ों ने ऐसा ही फ़ैसला किया है।

"मेरा ख़्याल है कि गारद के अफ़सर के पद के अनुकूल

आचरण न करने से ही ऐसा किया गया होगा," वह बूढ़ा प्रश्न पूछते जाने पर अड़ा रहा।

"इतनी बकवास काफ़ी है," कप्तान की पत्नी ने बात काटकर उसे रोका, "देखते नहीं कि यह नौजवान सफ़र से आया है और थका माँदा है। उसे इस वक्त और बहुत सी बातों के बारे में सोचना है......अपने हाथ सीधे रखो।"

"आप महाशय, इस बात की फ़िकर न करें कि निर्वासित करके आप को वीराने में फेंक दिया गया है," वह मेरी ओर मुख़ातिब होकर कहती गई। "यहाँ आने वालों में न आप सब से पहले शख़्स हैं, न आख़िरी ही। परिचित हो जाने पर आप इस जगह को पसन्द करने लगेंगे। पाँच साल पहले एक आदमी की हत्या करने की वजह से श्वाब्रिन, अलेक्सी इवानिच को हटाकर यहाँ हमारे पास भेज दिया गया था। ख़ुदा जाने उसपर कौन-सा भूत सवार हो गया था। लेकिन आप को सुनकर विश्वास न होगा कि वह एक लेफ्टीनेन्ट के साथ शहर से बाहर गया था। और वहाँ दोनों ने तलवारें खींच ली थीं और लगे थे एक दूसरे पर वार करने—और अलेक्सी इवानिच ने लेफ्टीनेन्ट को खेत कर दिया था, और यह भी दो गवाहों के सामने! बात यह थी। कोई नहीं जानता कि आदमी किस वक्त क्या न कर बैठे।"

इसी क्षण एक सार्जेन्ट (हवलदार), जो मज़बूत गठे शरीर का नौजवान कज़्ज़ाक था, कमरे में दाख़िल हुआ।

"माक्सीमिच!" कप्तान की पत्नी ने उससे कहा, "इन

महाशय के ठहरने का प्रबन्ध कर दो। ख्याल रखना कि कमरा साफ़-सुथरा हो।"

"बहुत अच्छा, वासीलिसा यगोरोवना," कज़्ज़ाक ने उत्तर दिया, "क्या इवान पोलेजेईफ़ के यहाँ इन माननीय महाशय के लिए कमरे ठीक करा दूं?"

"हर्गिज़ नहीं, माक्सीमिच!" स्त्री ने कहा, "पोलेजेईफ़ का घर तो यों भी खचाखच भरा हुआ है। इसके अलावा वह हमारा दोस्त है और उसे यह बात लगातार अखरती रहती है कि हम उससे ऊँचे वर्ग के लोग हैं। इन महाशय को......आप का क्या नाम है?"

"पियोत्र आन्द्रीइच"

"पियोत्र आन्द्रीइच को सेमियन कुज़ोक के यहाँ ले जाओ। उसने मेरे बावर्चीख़ाने के बग़ीचे में अपना घोड़ा छोड़ दिया था, बदमाश कहीं का! ख़ैर, माक्सीमिच और सब ठीक है न?"

"ख़ुदा की मेहरबानी से सब ठीक ठाक है," कज़्ज़ाक ने उत्तर दिया। "सिर्फ़ ग़ुसलख़ाने में उस्तीनिया नेगूलिना से कारपोरल प्रोखोरोफ़ गरम पानी की एक बाल्टी के लिए लड़ पड़ा था।"

"इवान् इग्नातीच!" कप्तान की पत्नी ने एक आँख वाले बूढ़े सैनिक से कहा, "जाकर इस मामले की पड़ताल करो [और यह पता करो] कि क़सूर किसका है, उस्तीनिया का या प्रोखोरोफ़ का। जाकर दोनों को सज़ा दो! और माक्सीमिच, तुम

जाओ। पियोत्र आन्द्रीइच, माक्सीमिच आप को ठहरने की जगह ले जायगा।"

मैंने उससे विदा ली। माक्सीमिच मुझे एक मकान में ले गया जो क़िले के कोने में नदी के ऊँचे तट पर स्थित था।

मकान के आधे भाग में सेमियन कुज़ोफ़ का परिवार रहता था। बाक़ी आधा हिस्सा मुझे दे दिया गया। इसमें एक ख़ासा साफ़ सुथरा कमरा था जिसे परदा खड़ा करके बीच से बाँट दिया गया था। सावालिच सामान खोलने लगा। मैं एक खिड़की से बाहर का दृश्य देखने लगा। उदास स्टेपी का मैदान मेरे सामने फैला था। एक दिशा में कुछ घर नज़र आ रहे थे। सड़क पर अनेक मुर्गियाँ कुड़कुड़ करती इधर उधर चक्कर काट रही थीं। बाल्टी पकड़े एक औरत ज़ीने पर खड़ी सूअरों को बुला रही थी। सूअर उसे अपनी दोस्ताना गुरगुराहट से उत्तर दे रहे थे। और इस जगह मुझे अपनी जवानी काटने के लिए मजबूर किया गया था! यकायक मेरा मन गिर गया। खिड़की छोड़कर मैं बिस्तर में जा लेटा और सावालिच के आग्रह के बावजूद बिना खाये ही सो गया। दुखी होकर वह बार बार ये शब्द दुहराता रहा :

"दयालु भगवान्, इसने खाना-पानी छोड़ दिया है। बालक अगर बीमार पड़ गया तो मालकिन क्या कहेगी ?"

दूसरे दिन सवेरे मैं अभी कपड़े बदल ही रहा था कि एक नाटे क़द का और पक्के रंग के साधारण पर अत्यंत सजीव चेहरे वाला नौजवान अफ़सर दरवाज़ा खोलकर अन्दर चला आया।

"माफ़ कीजिए", उसने फ्रांसीसी भाषा में कहा, "मैं बिना तकल्लुफ़ किये आपका परिचय पाने के लिए चला आया। कल मैंने आपके आने की बात सुनी थी। कम से कम एक इन्सान का मुँह तो देखने को मिलेगा, इस लालच को मन में दबा न सका। यहाँ कुछ दिन बिता कर आप मेरी बात भलीभाँति समझ जायेंगे।"

मैंने अनुमान लगाया कि शायद यही वह अफ़सर है जिसे द्वन्द्व युद्ध करने के सबब गारद से निकाला गया था। श्वाब्रिन बहुत तेज बुद्धि का आदमी था। उसकी बात चीत का ढंग भी विनोदपूर्ण और मनोरंजक था। उसने बड़े दिलचस्प शब्दों में कमान्डर के परिवार, उनके दोस्तों और उस जगह का वर्णन करके बताया जहाँ भाग्य ने मुझे ला पटका था। मैं अभी हँस हँस कर लोट पोट हो रहा था कि वह बूढ़ा सैनिक जिसे मैंने कमान्डर के घर वर्दी सींते देखा था, अन्दर चला आया। उसने मुझे दोपहर का खाना खाने के लिए वासीलिसा यगोरोवना का न्यौता दिया। श्वाब्रिन ने कहा कि वह भी साथ चलेगा।

कमान्डर के घर के सामने हमें क़रीब बीस गारद के पुराने सैनिक तिकोनी टोपियाँ लगाये एक पाँत में खड़े दिखायी दिये। वे 'अटेन्शन' ( सावधान ) की स्थिति में खड़े थे। उनके सामने कमान्डर था, एक लम्बा, उत्साही बूढ़ा आदमी जो नम्दे की टोपी लगाये और सूती ड्रेसिंग गाउन पहने था। हमें देखकर वह आगे बढ़ आया और मुझसे कुछ स्नेह पूर्ण शब्द कह कर पुनः अपने

सैनिकों को क़वायद सिखाने में लग गया। हम वहीं खड़े देखते रहे, लेकिन उसने शीघ्र आने का वायदा करके हमें घर जाने के लिए कहा।

"देखने लायक़ यहाँ कुछ भी नहीं", उसने कहा। घर पर वासीलिसा यगोरोवना ने स्नेह पूर्वक हमारा स्वागत किया। मेरे प्रति उसका व्यवहार तो ऐसा था मानो हम जीवन भर के परिचित हों। बूढ़ा सैनिक और दासी पलाशा मेज़ पर खाना लगा रहे थे।

"इवान कुज़ामिश ने आज क़वायद सिखाने में देर करदी", कप्तान की पत्नी ने कहा, "पाशा, जाओ अपने मालिक को खाने के लिए बुला लाओ। और माशा कहाँ है ?"

उसी समय गोल गुलाबी मुख वाली एक अठारह साल की युवती अन्दर आयी। उसके बालों में सँवार कर कंघी की गयी थी और लटें लाल हुए कानों के पीछे पड़ी थीं। पहली नज़र में वह मुझे ख़ास पसन्द नहीं आयी। मेरे मन में उसके प्रति पहले से ही द्वेष भरा था। श्वाब्रिन ने कप्तान की बेटी का ज़िक्र करते हुए बताया था कि वह निरी अहमक़ है। मैरिया इवानोवना एक कोने में बैठ कर अपने सीने पिरोने में लग गयी। इस बीच करमकल्ले का शोरबा परोसा जा चुका था। अपने पति को आता न देख वासीलिसा यगोरोवना ने बुलाने के लिए पाशा को दुबारा भेजा।

"अपने मालिक से कहना कि मेहमान इन्तज़ार कर रहे हैं और शोरबा ठंडा हो जायगा। क़वायद के लिए, ख़ुदा के फ़ज़ल

से, कभी भी वक्त निकाला जा सकता है। उस वक्त जी भर कर डाँट-डपट करलें।"

एक आँख वाले सैनिक के साथ कप्तान जल्द ही आ गया।

"आपको क्या हो गया", उसकी पत्नी ने कहा, "खाना न जाने कब का परोसा रखा है। लेकिन आप हैं कि आने का नाम ही नहीं लेते!"

"पर सुनो तो वासीलिसा यगोरोव्ना! मैं क़वायद सिखाने में लगा था।"

"बस रहने भी दो," पत्नी ने पलट कर जवाब दिया। "यह क़वायद-सवायद तो सिर्फ़ बहाना है—तुम्हारे सैनिक न कुछ सीखते हैं और न तुम ही उन्हें कुछ सिखाने लायक़ हो। इस से तो अच्छा है घर में बैठे भगवान का नाम लिया करो। आइए आप लोग, मेज़ पर आइए, खाना शुरू करें।"

हम लोग खाने के लिये बैठ गए। वासीलिसा यगोरोव्ना एक क्षण के लिए भी चुप न हुई और मुझ पर प्रश्नों की बौछार करती रही : मेरे माँ-बाप कौन है, क्या अभी भी जिन्दा हैं? कहाँ रहते हैं, उनकी जागीर कितनी बड़ी है। उसने जब सुना कि मेरे पिता के यहाँ तीन सौ दास हैं तो वह बोली : "हाय सोचो तो! दुनियाँ में इतने धनी लोग भी हैं! और प्रिय महाशय, एक हम हैं जिनके यहाँ एक अकेली दासी पलाशा है। फिर भी भगवान की दया से हम काफ़ी आराम से हैं। सिर्फ़ एक ही चिन्ता की बात है कि अब माशा की शादी हो जानी चाहिये। लेकिन उसके पास दहेज़ के

नाम पर एक कंघी, एक झाड़ू और एक पैसा है, बस ग़ुसलख़ाने तक जाने भर का सामान। अगर कोई सही क़िस्म का आदमी मिल गया तब तो इसका बेड़ा पार है नहीं तो बेचारी को कुँवारी ही बूढ़ी होकर मरना होगा।

मैं ने कनखियों से मैरिया इवानोवूना की ओर देखा। वह लाज से लाल पड़ गई और उसकी आँखों से बड़े-बड़े आँसू ढुलक कर तश्तरी में टपक पड़े। उसके लिए मेरा मन करुणा से भर गया। इस कारण बातचीत का विषय बदलने की ग़रज़ से मैंने कहा।

"सुना है कि बश्कीर आपके क़िले पर हमला करना चाहते हैं," मैंने कुछ बेमौक़े की बात कह दी।

"जनाब ने यह बात किससे सुनी है ?" इवान कुज़्मिश ने पूछा।

"ओरनबर्ग में किसी ने कही थी," मैंने उत्तर दिया।

"इस पर आप क़तई भरोसा न करें!" कमान्डर बोला, "हमने तो बरसों से ऐसी बात नहीं सुनी। बश्कीरों के दिलों में डर समा गया है और किरग़ीज़ों को भी सबक़ दिया जा चुका है। डरने की कोई बात नहीं। वह हमला नहीं कर सकते। और अगर उन्होंने हमला किया भी तो उन्हें ऐसा मज़ा चखाऊँगा कि दस बरस तक इधर आँख उठाकर देखने की जुर्रत न करेंगे।"

"और आपको," मैंने वासीलिसा यगोरोवूना को लक्ष्य कर के पूछा, "ऐसे क़िले में रहते हुए, जहाँ हर वक़्त ख़तरा बना

रहता है, क्या डर नहीं लगता ?"

"अब तो आदत पड़ गयी है, प्रिय महाशय," उसने उत्तर दिया, "बीस साल पहले रेजिमेन्ट से बदल कर जब हम यहाँ आए थे, उन दिनों ज़रूर इन लानत के मारे विधर्मियों से मैं डरती थी। उनकी बिल्ली की पोस्तीन वाली टोपी देख कर और उनका चीखना सुनकर मेरे दिल की धड़कन थम जाती थी, सच ! लेकिन अब इतनी आदी हो गयी हूँ कि अगर सुनती हूँ कि ये शैतान क़िले के इर्द-गिर्द मँडराते फिरते हैं तो भी मन में ज़रा खटका नहीं होता।"

"वासीलिसा यगोरोव्ना बहुत निडर महिला हैं," श्वाब्रिन ने किंचित दिखावटी गर्व से कहा, "इवान कुज़ामिश इसके गवाह हैं।"

"हाँ, यह डरपोक स्वभाव की नहीं हैं, इतना ज़रूर कह सकता हूँ," इवान कुज़ामिश ने हामी भरी।

"और मैरिया इवानोव्ना ! क्या ये भी आपकी ही तरह निडर स्वभाव की हैं ?" मैंने पूछा।

"माशा निडर स्वभाव की ?" उसकी माँ ने उत्तर दिया, "जी नहीं, माशा निरी कायर है। वह आज भी बन्दूक़ दाग़ने से डर जाती है। सुनकर जैसे इसे कँपकँपी छूटती है। और दो साल पहले जब इवान कुज़ामिश ने मेरे नामकरण के दिन तोप दाग़ने की ठानी तो यह डर के मारे मर ही गयी, प्यारी बच्ची ! उस वक़्त से हमने वह निगोड़ी तोप फिर कभी नहीं दाग़ी।"

हम खाकर मेज़ से उठ गए। कप्तान और उसकी पत्नी आराम करने के लिए सोने के कमरे में चले गये। और मैंने श्वाब्रिन के यहाँ जाकर सारी शाम गुज़ार दी।

चार

●

# द्वन्द्व-युद्ध

अच्छा तो अब मैदान में निकल आओ
और मेरी तलवार तुम्हारे सीने के पार होगी

—नियाज़निन

कई हफ़्ते बीत गये थे और बेलोगोर्स्की के क़िले में ज़िन्दगी अब सिर्फ़ सहने लायक़ ही नहीं बल्कि निश्चित रूप से सुखकर लगने लगी थी। कमान्डर के घर में मैं उनके अपने परिवार के सदस्य की तरह समझा जाता था। पति-पत्नी दोनों ही बड़े भले थे। इवान कुज़ामिश एक मामूली सैनिक के पद से उन्नति करके अफ़सर के पद पर पहुँचे थे। वह सीधे-सादे और अपढ़ व्यक्ति थे, पर थे बड़े ही उदार और दयालु स्वभाव के। उनकी पत्नी उन पर शासन करती थी, और यह बात उनके आलसी, आरामतलब स्वभाव के अनुकूल पड़ती थी। वासीलिसा योगोरोव्ना अपने पति की फ़ौजी ज़िम्मेदारियों को अपनी निजी ज़िम्मेदारियाँ ही

समझती थीं और अपने घर की ही तरह क़िले की सारी व्यवस्था स्वयं चलाती थीं। कुछ ही दिनों में मेरे प्रति मेरिया इवानोव्ना का संकोच दूर हो गया और हम एक दूसरे के मित्र हो गये। मैंने पाया कि वह भावुक और बुद्धिमान् लड़की है। अनजाने में इस परिवार के साथ मेरे स्नेह-सम्बन्ध धीरे-धीरे गहरे होते गये। यहाँ तक कि गारद के उस एक आँख वाले लेफ्टीनेन्ट इवान इग्नातीच के प्रति भी मेरे मन में स्नेह पैदा हो गया। श्वाब्रिन ने कहा था कि वासीलिसा यगोरोव्ना से इस शख्स का अनुचित सम्बन्ध है, यद्यपि मुझे इस बात में कभी सचाई का एक अंश भी नज़र नहीं आया। लेकिन श्वाब्रिन को सचाई की परवाह कब थी।

मुझे कमीशन मिल गया। मेरी फ़ौजी ज़िम्मेदारियाँ कठिन न थीं। हमारे क़िले में परेड, क़वायद, पहरेदारी आदि की बन्दिशें न थीं। यों कभी कमान्डर अपनी तरफ़ से सैनिकों को क़वायद सिखाया करता था, लेकिन इतने दिनों में वह सैनिकों को इतना तक समझाने में सफल न हुआ था कि वे दायें और बायें हाथ में भेद करके बता सकें। श्वाब्रिन के पास फ्रांसीसी भाषा की अनेक पुस्तकें थीं। मैंने पढ़ना शुरू किया और कुछ दिनों में मेरे अन्दर साहित्य के प्रति रुचि पैदा हो गयी। सुबह को मैं पढ़ता, अनुवाद करने का अभ्यास करता और कभी-कभी कविताएँ भी लिखता। दोपहर का खाना मैं कमान्डर के यहाँ ही खाता और फिर सारा दिन वहीं गुज़ारता। शाम को पिता गेरासीम और उनकी पत्नी अकूलीना पैम्फ़ीलोवना, जिसके

बारे में मशहूर था कि आस-पड़ौस में उसके मुक़ाबले की गपोड़ औरत नहीं है, अक्सर वहाँ आते। वैसे तो मैं अलेक्सी इवानिच श्वाब्रिन से रोज़ मिलता था लेकिन समय के साथ-साथ उसकी बातें मुझे अरुचिकर प्रतीत होती गयीं। कमान्डर के परिवार के बारे में उसके रोज़-रोज़ वही भद्दे मज़ाक मुझे अप्रिय लगते गए, ख़ास तौर पर मेरिया इवानोव्ना के बारे में उसकी खिल्ली उड़ाने वाली व्यंगोक्तियाँ मुझे और भी भद्दी लगतीं। क़िले में और कोई सोसाइटी न थी। और सच तो यह है कि मुझे अब और किसी सोसाइटी की ज़रूरत भी न थी।

भविष्यवाणियों के बावजूद बक्शीरों ने विद्रोह नहीं किया। हमारे क़िले के इर्द-गिर्द हर तरफ़ शान्ति का साम्राज्य था। लेकिन यह शान्ति एक आपसी कलह से सहसा भंग होगई।

मैं पहले ही जिक्र कर चुका हूँ कि मैंने साहित्य के क्षेत्र में क़दम रखना शुरू कर दिया था। उन दिनों के मापदंड से मेरे प्रयत्न काफ़ी सराहनीय थे और कई वर्ष बाद अलेक्ज़ेन्डर पेत्रोविच सुमारोकॉफ़[1] ने मेरी रचनाओं को ख़ूब सराहा भी। एक दिन मैं अपने मन के अनुकूल गीत लिखने में सफल हो गया। सब जानते हैं कि लेखक अक्सर सलाह लेने के बहाने एक ऐसे श्रोता की तलाश में रहते हैं जो उनकी तारीफ़ करे। इसलिए कविता नक़ल करके मैं श्वाब्रिन के पास गया, क्योंकि सारे क़िले में वही एक आदमी ऐसा था जिससे यह आशा की जा सकती थी कि वह

[1] सुमारोकॉफ़ ( १७१८-७७ ), पुरानी परिपाटी का एक रूसी कवि।

कवि की कृति का उचित सम्मान करेगा। एक छोटी-सी भूमिका बाँधकर मैंने अपनी जेब से नोट-बुक निकाली और उसे यह कविता पढ़कर सुनायी :

उसकी मुहब्बत के ख्याल को दिल से निकालना चाहता हूँ,
और उसके हुस्न को भूल जाना चाहता हूं।
हाय मैं! माशा को त्याग कर,
अपनी खोयी आज़ादी फिर से पाना चाहता हूँ।
लेकिन जिन आँखों ने मुझ पर जादू किया है,
वह दिनों रात मेरा पीछा करती हैं।
गहरी उलझन में डाल दिया है उन्होंने मुझको,
दिल का चैन और आराम छीनकर।
अगर तुम कभी मेरी मुसीबतों का हाल सुनो,
तो दया करना, माशा, मुझ पर दया करना।
तुमने मेरी क्रूर यातनाओं को देखा है,
मैं वह बन्दी हूँ जिसे तुमने क़ैद कर रखा है।

"कहो, यह गीत कैसा लगा?" मैंने श्वाब्रिन से यह उम्मीद करके पूछा कि वह उतनी प्रशंसा तो करेगा ही जितनी का मैं अधिकारी था। श्वाब्रिन वैसे तो बड़ा उदार अलोचक था लेकिन इस समय उसने बेलाग उत्तर दिया कि मेरा गीत बुरा है। मैं बहुत चिढ़ गया।

"आख़िर क्यों?" मैंने अपनी खीज छिपाते हुए पूछा।

"क्योंकि ऐसी पंक्तियाँ मेरे योग्य गुरु वासिली किरलिच

त्र्यात्या कोव्सकी[1] को ही शोभा देती थीं और उनके प्रणय-गीतों की याद दिलाती हैं !"

फिर मेरे हाथ से नोट-बुक लेकर वह कविता की हर पंक्ति और हर शब्द की बेदर्दी से नुक्ताचीनी करने लगा और मखौल उड़ाने के अन्दाज में मेरा मुँह चिढ़ाने लगा। मुझ से यह न बर्दाश्त हुआ। उससे नोट-बुक छीनकर मैंने कहा कि उसे अब कभी अपनी कविताएँ न दिखाऊँगा। श्वाब्रिन ने इस धमकी की भी हँसी उड़ायी।

"देखेंगे," उसने कहा, "तुम कहाँ तक इस बात पर क़ायम रहोगे। कवियों को एक श्रोता की उतनी ही जरूरत होती है, जितनी जरूरत इवान कुज़ामिश को खाने से पहले वोद्का की एक बोतल की। और यह माशा कौन है जिसके लिए तुमने अपनी मोहब्बत और विरह की पीड़ा का इज़हार किया है? मेरिया इवानोव्ना के लिए तो नहीं ?

"वह कोई भी हो, तुम्हें इससे कोई मतलब नहीं," मैंने लाल पड़ते हुए कहा। "मुझे तुम्हारी राय या अनुमानों की जरूरत नहीं।"

"ओ हो ! बड़े भावुक कवि और शर्मीले आशिक हो !" श्वाब्रिन मुझे और चिढ़ा चिढ़ाकर कहता गया, "लेकिन एक दोस्त की राय मानो। अगर कामयाब होना चाहते हो तो गीतों से बेहतर चीज़ का सहारा लो।"

[1] रूसी भाषा के प्रारंभिक कवियों में से एक, जो अपने अथक परिश्रम और प्रतिभाहीनता के लिए प्रसिद्ध है।

"जनाब का मतलब ? ज़रा खोलकर साफ़ बात कीजिए।"

"ख़ुशी से। मेरे कहने का मतलब यह है कि अगर चाहते हो कि माशा मिरोनोफ़ शाम के झुटपुटे में तुमसे मिलने आये तो उसे तोहफ़े के बतौर कान की बालियाँ भेंट करो, कविताएँ नहीं।"

मेरा ख़ून खौल गया।

"उसके बारे में तुम्हारी ऐसी नीच राय क्यों है ?" अपने गुस्से को बड़ी मुश्किल से थामते हुए मैंने पूछा।

क्योंकि मैं अपने अनुभव से उसकी आदतों और उसके चाल-चलन को भली भाँति जानता हूँ," उसने एक पैशाचिक मुस्कान बनाकर कहा।

"यह सरासर झूठ है, धूर्त, बदमाश !" मैं क्रोध से चीखा, "यह बेशर्मी से भरा झूठ है !"

श्वाब्रिन का रंग उतर गया।

"तुम्हें इसका बदला चुकाना पड़ेगा," मेरी बाँह पकड़ कर झकझोरते हुए उसने कहा, "तुमको मुझे सन्तुष्ट करना होगा।"

"ज़रूर—जब चाहो तब," मैंने हल्कापन महसूस करते हुए कहा। उसी वक़्त मैं उसकी बोटी-बोटी काटकर फेंकने के लिए तैयार था।

मैं फ़ौरन इवान इग्नातीच के पास गया। वह उस समय वासीलिसा यगोरोव्ना के कहने पर सरदियों के लिए सुखाने के इरादे से कुकुरमुत्तों को धागे में पिरो रहा था।

"आह, पियोत्र आन्द्रीइच ! आप के दर्शन करके बड़ी ख़ुशी

हुई," मुझे देखकर वह बोला। "इधर कैसे किस काम से आना हुआ, पूछ सकता हूँ?"

मैंने उसे संक्षेप में अलेक्सी इवानिच से अपना झगड़ा हो जाने की बात बतायी और उससे आग्रह किया कि वह मेरा 'द्वितीय' बने। इवान इग्नातीच बड़े ध्यान से मेरी बात सुनता रहा और अपनी एक आंख से मेरी ओर घूरता रहा।

"आप के कहने का मतलब यह है," उसने उत्तर दिया, "कि आप का इरादा अलेक्सी इवाचिन की हत्या करना है और चाहते हैं कि मैं इसका गवाह बनूँ?"

"हां, यही।"

"या खुदा! पियोत्र आन्द्रीइच, ऐसा भी कहीं सोचते हैं? अलेक्सी इवानिच से आपका झगड़ा हो गया है न? मगर इससे हुआ क्या? गाली गलौज से कुछ नहीं आता जाता। वह आपको गाली दें, आप उनको गाली दें, वह आपके मुँह में थप्पड़ मारें, आप उनकी कनपटी पर एक, दो, तीन जमा दें—और फिर अपना अपना रास्ता पकड़ें। बाद को आपस में सुलह हम लोग करवा देंगे। लेकिन एक साथी की हत्या करना—मैं पूछता हूँ, क्या यह जायज़ बात है? और अगर आपने उन्हें मार दिया तो इससे कुछ न बिगड़ेगा। सच तो यह है कि अलेक्सी इवानिच मुझे भी ख़ास पसन्द नहीं हैं। लेकिन अगर उन्होंने आपके अन्दर सूराख़ कर दिया तो क्या होगा? फिर यह कैसा लगेगा? मैं पूछता हूँ, उस वक़्त कौन बेवकूफ़ साबित होगा?"

इस अक़्लमन्द बुड्ढे के तर्क मुझे टस से मस न कर सके। मैं अपने इरादे पर अडिग जमा रहा।

"आपकी मर्ज़ी" इवान इग्नातीच ने कहा; "जो अच्छा समझें करें। लेकिन मैं क्यों आपका गवाह बनूँ? आख़िर किस लिए? दो आदमी आपस में लड़ते हैं! मैं पूछता हूँ, इसमें देखने लायक़ कौन सी बात है? स्वीडन और तुर्की के ख़िलाफ़ मैंने जङ्ग में हिस्सा लिया है, और भरोसा कीजिए कि मैं काफ़ी कुछ देख चुका हूँ।"

मैं उसे 'द्वितीय' की ज़िम्मेवारियाँ समझाने लगा, लेकिन इवान इग्नातीच मेरी बात समझने को तैयार ही न था।

"आपके मन में जो आये कहें" उसने कहा, "लेकिन मुझे इस मामले में अगर कोई हिस्सा लेना है तो सिर्फ़ इतना कि अपने फ़र्ज़ के मुताबिक मैं सीधा इवान कुज़्मिश के पास जाऊँ और उनको सूचना दे दूँ कि क़िले में एक ऐसा जुर्म करने का मन्सूबा बन रहा है जो राज्य के हितों के ख़िलाफ़ है—और पूछूँ कि क्या कमान्डर इस बारे में कोई ज़ाप्ते की ज़रूरी कार्रवाई करेंगे।"

मैं घबरा गया और इवान इग्नातीच के निहोरे किये कि कमान्डर से इस मामले की चूँ तक न करे। उसे राज़ी करने में मुझे बड़ी कठिनाई हुई, लेकिन अन्त में मैंने उससे वचन ले लिया और वहाँ से चला आया।

रोज़ के मुताबिक शाम मैंने कमान्डर के यहाँ ही गुज़ारी। मैं प्रसन्न दिखाई देने की कोशिश करता रहा, ताकि लोग सवाल

न पूछने लगें और उन्हें सन्देह का कारण न मिले। लेकिन सच तो यह है कि लोग मेरी जैसी स्थित में पड़कर अक्सर उदासीन बने रहने की जो डींग मारते हैं वैसी डींग मैं नहीं मार सकता। उस शाम को मेरा मन कोमल और भावुक हो रहा था। मेरिया इवानोव्ना उस दिन मुझे हमेशा से ज्यादा सुन्दर और आकर्षक लग रही थी। इस ख़्याल ने कि शायद उसे आज आख़िरी बार देख रहा हूँ, मुझे उसके प्रति और भी संवेदनशील बना दिया था। श्वाब्रिन भी वहाँ था। मैं उसे एक ओर कोने में ले गया और इवान इग्नातीच से जो बातचीत हुई थी, वह उसे बतायी।

"द्वितीय की हमें क्या ज़रूरत है," उसने रूखे स्वर में कहा, "उसके बग़ैर भी हम काम चला लेंगे।"

हमने तय किया कि क़िले के नज़दीक भूसे की बुर्जियों के पीछे हम द्वन्द्व-युद्ध लड़ेंगे, और इसके लिए अगले सवेरे छै और सात बजे के बीच वहीं मिलेंगे। हम दोनों आपस में ऐसे दोस्ताना अन्दाज में बात करते दिखायी देते थे कि खुशी के मारे इवान इग्नातीच ने सारा रहस्य खोल दिया।

"यह सही बात है!" प्रसन्न होकर उसने मुझ से कहा, "अच्छी लड़ाई से तो बुरी सुलह भी अच्छी होती है। चोट लगे शरीर से चोट लगा नाम ज्यादा अच्छा होता है।"

"क्या बात है, अरे क्या बात है, इवान इग्नातीच?" वासीलिसा यगोरोव्ना ने पूछा, जो कोने में बैठी ताश के पत्तों से भाग्य बना रही थी।

"उधर मेरा ध्यान नहीं था।"

मेरे चेहरे पर रोष का भाव देख कर और अपना वायदा याद कर इवान इग्नातीच उलझन में पड़ गया और उसे कुछ न सुझाई दिया कि अब क्या कहे। श्वाब्रिन ने उसकी उलझन दूर कर दी।

"हम ने आपस में सुलह कर ली, यह बात इवान इग्नातीच को पसन्द आयी है," उसने कहा।

"लेकिन झगड़ा किस से किया था आपने?"

"पियोत्र आन्द्रीइच से आज मेरी सख्त लड़ाई हो गई थी।"

"किस बात पर?"

"एक बहुत मामूली सी बात पर, वासीलिसा यगोरोव्ना; महज़ एक गाने के बारे में।"

"लड़ने के लिये बड़ी अनोखी चीज़ है! एक गाना! लेकिन बात क्या हुई थी?"

"क्यों, बात यों हुई। कुछ दिन पहले पियोत्र आन्द्रीइच ने एक गीत लिखा जिसे आज वह मेरे सामने गाने लगे, तो मैंने अपनी पसन्द का गीत छेड़ दिया :

दुखलरे कप्तान, सुनो तो मेरी बात,
टहलने यों जाया न करो आधी रात।

इस पर झगड़ा हो गया। पियोत्र आन्द्रीइच पहले तो नाराज़ हुए, लेकिन बाद में उन्होंने शान्त मन से सोचा और इस नतीजे पर पहुँचे कि हर व्यक्ति को अपनी अपनी पसन्द का गीत गाने का अधिकार है। और इस तरह बात खत्म हो गयी।"

श्वाब्रिन की बदतमीज़ी ने मुझे आपे से बाहर कर दिया, लेकिन मेरे अलावा और किसी ने उसके गन्दे संकेतों को नहीं समझा। किसी ने उनकी ओर ध्यान भी नहीं दिया। गीतों से हट कर बातचीत का सिलसिला अब कवियों पर केन्द्रित हो गया था। कमान्डर ने कहा कि कवि बुरे और घोर पियक्कड़ लोग होते हैं, और एक दोस्त की हैसियत से मुझे नसीहत की कि मुझे कविताएँ लिखना छोड़ देना चाहिए, क्योंकि इस काम का फ़ौजी ड्यूटी से मेल नहीं खाता और इससे कभी कोई अपनी भलाई नहीं कर पाया।

श्वाब्रिन की मौजूदगी मेरे लिए असहनीय हो गयी थी। जल्द ही कप्तान और उनकी पत्नी को सलाम करके मैं चल दिया। घर आकर मैंने अपनी तलवार की जाँच की, छूकर उसकी नोंक देखी और फिर छै बजे जगा देने के लिए सावालिच को कह कर मैं बिस्तर में पड़कर सो गया।

दूसरे दिन सवेरे नियत समय पर भूसे की बुर्जियों के पीछे खड़े होकर मैं अपने प्रतिद्वन्द्वी का इन्तज़ार करने लगा। वह भी मेरे बाद जल्द ही पहुँच गया।

"कोई विघ्न डालने न आ जाय", उसने कहा, "इसलिए जल्दी करनी चाहिए।"

हमने अपनी वर्दियाँ उतार दीं, और वास्कटें पहने हमने अपनी तलवारें खींच लीं। इसी वक्त बुर्जियों के पीछे से पाँच सैनिकों को लिए यकायक इवान इग्नातीच प्रकट हुआ। उसने हमें कमान्डर के

पास चलने को कहा। हमें मानना पड़ा, यद्यपि हम काफी खिजे हुए थे। सैनिकों ने हमें घेर लिया और हम इवान इग्नातीच के पीछे पीछे चल पड़े। वह जैसे विजय के उल्लास से भरा बड़े रौब से आगे आगे चल रहा था।

हम कमान्डर के घर में दाखिल हुए। इवान इग्नातीच ने दरवाजा खोल कर घोषणा की, "मैं इन्हें ले आया!"

वासीलिसा यगोरोव्ना हमें मिलीं।

"हाय देखो तो! अब क्या करने का इरादा है? क्यों? इस बात की जुर्रत कैसे हुई? हमारे क़िले में हत्या की तैयारियाँ? इवान कुज़ामिश, इन्हें फ़ौरन हिरासत में ले लो। पियोत्र आन्द्रीइच, अलेक्सी इवानिच! मुझे दो अपनी तलवारें, दो, मुझे दो! पलाशा, इन तलवारों को भंडार घर में ले जाकर बन्द कर दो। पियोत्र आन्द्रीइच, मैं तुम से इस बात की उम्मीद न करती थी। अपने ऊपर तुम्हें शर्म नहीं आ रही? अलेक्सी इवानिच के लिए तो यह कोई बड़ी बात नहीं है—उन्हें तो गारद से एक आदमी की हत्या करने के सबब निकाला गया था, और वह खुदा में विश्वास भी नहीं करते, लेकिन तुम ऐसा करोगे, इसकी तो कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। क्या तुम भी उन्हीं की तरह बनना चाहते हो?"

इवान कुज़ामिश अपनी पत्नी से पूरी तरह सहमत थे और लगातार दुहराते रहे :

"वासीलिसा यगोरोवना ठीक कहती हैं। मैं तुम्हें साफ़ बताये

देता हूँ कि फ़ौजी क़ानून के अन्दर द्वन्द्व-युद्धों पर सख़्त पाबन्दी है।"

इस बीच पलाशा हमारी तलवारों को लेकर भंडार घर में चली गयी थी। मुझ से हँसी रोके न रुकती थी, लेकिन श्वाब्रिन ने अपनी गंभीरता न छोड़ी।

"दिल में आपका पूरा आदर करते हुए भी," उसने नपे-तुले शब्दों में कहा, "मुझे कहना पड़ता है कि आप हम लोगों के बारे में व्यर्थ ही राय क़ायम करने की तकलीफ़ उठा रही हैं। इसे आप इवान कुज़ामिश पर छोड़ दीजिए—यह काम उनका है।"

"लेकिन जनाब, पति और पत्नी क्या एक ही शरीर और एक ही आत्मा के नहीं होते?" कमान्डर की पत्नी ने पलट कर पूछा। "इवान कुज़ामिश, तुम क्या सोच रहे हो? दोनों को हिरासत में लेकर अलग अलग कोठरियों में बन्द कर दो और जब तक ये लोग अपने होश में न आयें तब तक इन्हें रोटी और पानी के अलावा कुछ न दो। और पिता गेरासीम से कहो कि इनके लिए कोई प्रायश्चित बतायें ताकि ये लोग ख़ुदा से माफ़ी मांगें और लोगों के सामने अपने गुनाह क़बूल करें।"

इवान कुज़ामिश की समझ में न आता था कि वह क्या करें। मेरिया इवानोव्ना अत्यन्त पीली पड़ गयी थीं। धीरे धीरे तूफ़ान थम गया। वासीलिसा यगोरोव्ना का गुस्सा भी उतर गया और उन्होंने हमें एक दूसरे का चुम्बन लेने पर मजबूर किया। पलाशा ने हमारी तलवारें लाकर वापस कर दीं। कमान्डर के यहां से

जब हम चले तो लगता था आपस में सुलह-सफ़ाई हो गयी है। इवान इग्नातीच हमारे साथ था।

"तुम्हें शर्म नहीं आती" मैंने उस से गुस्से में कहा, "कि तुमने कमान्डर के सामने सारा भेद खोल दिया, जब कि तुम ने वायदा किया था कि अपना मुँह बन्द रखोगे ?"

"खुदा गवाह है अगर मैंने इवान कुज़ामिश से एक लफ्ज़ भी कहा हो," उसने उत्तर दिया। "वासीलिसा यगोरोव्ना ने मुझ से सारी बात निकाल ली। और इवान कुज़ामिश को बिना बताये ही उन्होंने यह सारा इन्तज़ाम कर लिया।......लेकिन खुदा का शुक्र है कि बात इस तरह आकर ख़त्म हुई।"

यह कह कर वह अपने घर चला गया और श्वाब्रिन और मैं अकेले रह गये।

"इस बात को यहीं तक लाकर नहीं छोड़ा जा सकता," मैंने उससे कहा।

"बेशक नहीं," श्वाब्रिन ने उत्तर दिया, "अपनी गुस्ताख़ी के लिए अपना खून तोल कर तुम्हें जवाबदेह होना होगा। लेकिन मेरा ख़याल है कि हम पर अब निगरानी रखी जायगी। कुछ दिनों तक हमें दोस्ती का ढोंग रचना होगा। सलाम।"

और हमने एक दूसरे से विदा ली जैसे कुछ हुआ ही न हो। कमान्डर के यहाँ लौट कर मैं हमेशा की तरह मेरिया इवानोव्ना के पास बैठ गया। इवान कुज़ामिश घर पर नहीं थे। वासीलिसा यगोरोव्ना घरेलू कामों में व्यस्त थीं। हम आहिस्ता आहिस्ता

बोल रहे थे। श्वाब्रिन से झगड़ा करके मैंने सबके लिए जो चिन्ता पैदा कर दी थी, उसके लिए मेरिया इवानोव्ना ने मुझे बड़े कोमल प्यार से झिड़की सुनाई।

"जब मैंने सुना," उसने कहा, "तुम द्वन्द्व युद्ध करोगे तो मैं डर के मारे घबरा गयी। मर्द कितने अजब होते हैं! सिर्फ एक शब्द के लिए, जिसे वह एक हफ्ते में ही जरूर भूल जाते, वह एक दूसरे की जान लेने पर उतारू हो जाते हैं, अपनी जिन्दगी और अपनी आत्मा बलिदान कर देने पर तुल जाते हैं और उन लोगों को भी भूल जाते हैं जो......लेकिन मुझे विश्वास है कि झगड़ा तुमने शुरू नहीं किया। क़सूर शायद अलेक्सी इवानिच का ही है।"

"तुम ऐसा क्यों सोचती हो, मेरिया इवानोव्ना?"

"ओह, मैं नहीं जानती...वह हमेशा लोगों का मखौल उड़ाता रहता है। अलेक्सी इवानिच मुझे अच्छा नहीं लगता। उसे देख कर मुझे नफ़रत होती है, फिर भी अजब बात है कि मैं किसी भी सूरत में यह गवारा नहीं कर सकती कि वह भी मुझे नापसन्द करे। इससे मुझे भयानक परेशानी होगी।"

"और तुम्हारा क्या ख्याल है मेरिया इवानोव्ना? क्या वह तुम्हें चाहता है?"

मेरिया इवानोव्ना शरमा गई और उसकी ज़ुबान लड़खड़ाने लगी।

"मैं सोचती तो हूँ.. ..." उसने कहा, "हाँ, मेरा विश्वास है

कि वह मुझे चाहता है।"

"तुम ऐसा क्यों विश्वास करती हो?"

"क्योंकि उसने मुझ से शादी का प्रस्ताव किया था।"

"उसने तुम से शादी का प्रस्ताव किया था? कब?"

"पिछले साल। तुम्हारे आने से क़रीब दो महीने पहले।"

"और तुम ने इन्कार कर दिया?"

"देखते तो हो। हाँ, ज़रूर। अलेक्सी इवानिच एक योग्य आदमी है, धनी और अच्छे ख़ानदान का। लेकिन जब सोचती हूँ कि गिरजाघर में सब लोगों के सामने मुझे उसका चुम्बन करना पड़ेगा......नहीं, किसी कीमत पर भी मैं ऐसा नहीं कर सकती। कैसा भी लालच मुझे इसके लिए राज़ी नहीं कर सकता।"

मेरिया इवानोव्ना के शब्दों ने मेरी आँखें खोल दीं और अब बहुत-सी बातें साफ़ नज़र आने लगीं। वह क्यों उसको बदनाम करता फिरता है, इसका कारण समझ में आ गया। जिन शब्दों की बिना पर हम में झगड़ा हुआ था वे अब और भी नीचतापूर्ण लगने लगे, क्योंकि उनके पीछे भद्दे मज़ाक की जगह अब मुझे जानबूझ कर मेरिया इवानोव्ना को कलंकित करने की कोशिश दिखाई दी। उसके चरित्र पर कीचड़ उछालने वाले इस बद्‌तमीज़ आदमी को सज़ा देने की मेरी इच्छा और भी प्रबल हो उठी, और मैं मौक़े का इन्तज़ार करने लगा।

मुझे ज़्यादा दिनों तक इन्तज़ार न करना पड़ा। दूसरे ही दिन जब मैं बैठा एक कविता लिख रहा था और तुक बाँधने के लिए

शब्द ढूँढ़ते समय अपनी क़लम को दांतों से दबा रहा था कि इतने में श्वाब्रिन ने मेरी खिड़की पर दस्तक दी। मैंने क़लम वहीं छोड़ा, तलवार उठा ली और बाहर निकल गया।

"इन्तज़ार क्यों करें?" श्वाब्रिन ने कहा, "इस वक्त कोई निगरानी नहीं कर रहा। चलो नदी के तट पर चलें। वहाँ हमारे काम में कोई विघ्न नहीं डालेगा।"

हम चुपचाप चले जा रहे थे। एक ढलवाँ रास्ते से नीचे उतर कर हम नदी के तट पर पहुँच गये और हमने अपनी तलवारें खींच लीं। श्वाब्रिन मुझ से ज्यादा होशयार था, लेकिन मैं उससे ज्यादा मज़बूत और साहसी था। मोशिये ब्यूप्रे ने, जो कभी सैनिक भी रहा था, मुझे चंद एक पैंतरे सिखाये थे, और इस वक्त मैंने उनका अच्छा उपयोग किया। श्वाब्रिन ने यह कल्पना भी नहीं की थी कि मैं इतना दुर्जेय प्रतिद्वन्द्वी साबित हूँगा। कुछ देर तक तो हम में से कोई भी एक दूसरे को नुक़सान न पहुँचा सका। आख़िरकार, यह देख कर कि श्वाब्रिन कमजोर पड़ने लगा है, मैं उसे दबाने लगा, यहाँ तक कि उसे नदी में धकेल देने की नौबत आ गयी। यकायक मैंने सुना कि कोई जोर से मेरा नाम पुकार रहा है। घूम कर मैंने देखा कि ढलवाँ रास्ते से सावालिच मेरी ओर बेतहाशा भागता चला आ रहा है...... इसी क्षण मुझे लगा कि मेरे दाहिने कन्धे के नीचे सीने में कोई चीज़ भोंकी गई है, और मैं बेहोशी की हालत में नीचे गिर गया।

## पाँच

●

# प्रेम

ओ किशोर बाले !
तुम इस किशोरावस्था में विवाह न करना
अभी तुम मृदुल-गात हो !
पहले तुम अनुमति लो—
अपने माता पिता औ' सगे सम्बन्धियों की
अभी अपने विवेक और सहज बुद्धि का विकास
और अपने लिए क़ीमती दहेज़ जमा होने दो

—एक लोक गीत

× × ×

अगर तुम्हें कोई मुझ से अच्छा मिल गया—
तो तुम मुझे भूल जाओगी
अगर मुझ से कोई बुरा मिल गया
तो मुझे याद रखोगी !

—एक लोक गीत

जब मैं होश में आया तो कई मिनट तक यह न समझ सका कि मैं कहाँ हूँ और मुझे क्या हो गया था। एक अपरिचित कमरे में बिस्तर पर मैं लेटा था और बहुत शिथिलता का अनुभव कर रहा था। हाथ में एक मोमबत्ती थामे सावालिच मेरे सामने खड़ा था। कोई बड़ी सावधानी से मेरी छाती और कन्धे पर बँधी पट्टियों को खोल रहा था। धीरे धीरे दिमाग़ पर छायी धुन्ध हट गयी और सारी घटना याद आ गयी। मुझे अपने द्वन्द्व-युद्ध की याद आते ही समझ में आया कि मैं घायल हो गया हूँ। उसी समय दरवाज़ा चर्राया।

'इनकी तबियत कैसी है', किसी का अस्फुट स्वर सुनायी दिया जिसने मेरे अन्दर एक लहर-सी दौड़ा दी।

"अभी तक वैसी ही है", एक आह भर कर सावालिच ने जवाब दिया। "अभी तक बेहोश हैं, आज पाँचवाँ दिन है।"

मैंने अपना सर घुमाना चाहा, लेकिन न घुमा सका।

"मैं कहाँ हूँ ? यह कौन हैं ?" चेष्टा करके मैंने पूछा।

मेरिया इवानोव्ना मेरे पलंग तक चली आयी और मुझ पर झुक गयी।

"आपको कैसा लग रहा है ?" उसने पूछा।

"खुदा का शुक्र है", मैंने शिथिल स्वर में उत्तर दिया, "यह तुम्हीं हो न, मेरिया इवानोव्ना ? ज़रा मुझे बताओ..."

आगे बोलने की मुझ में शक्ति न रही, और मैं रुक गया। सावालिच चीख़ उठा। ख़ुशी से उसका चेहरा चमक गया था।

"यह होश में आ गये ! खुदा का शुक्र करो ! प्यारे पियोत्र आन्द्रीइच आपने तो मुझे एक दम डरा दिया था ! पाँच दिन हो गये, यह कोई मजाक नहीं है !"

मेरिया इवानोव्ना ने उसे रोका।

"इनसे इतना ज्यादा न बोलो, सावालिच", उसने कहा, "यह अभी कमजोर हैं।" चुपचाप कमरे से बाहर निकल कर उसने दरवाजा फेर दिया।

मेरे मन में विप्लव मच गया। तो मैं कमान्डर के घर में था और मेरिया इवानोव्ना मुझे देखने आयी थी। सावालिच से मैं बहुत से सवाल पूछना चाहता था लेकिन उस बुड्ढे ने सर हिला कर मना करते हुए अपने कानों में उँगली दे ली। खीज कर मैंने आँखें बन्द करलीं और कुछ देर में ही सो गया।

जब उठा तो मैंने सावालिच को आवाज दी, लेकिन उसकी जगह मेरिया इवानोव्ना मेरे सामने आयी। अपने दिव्य स्वर से उसने मेरा अभिनन्दन किया। उस समय मैंने इतने सुख का अनुभव किया कि बयान नहीं कर सकता। मैंने झट से उसका हाथ पकड़ लिया और उस पर चुम्बनों के सितारे जड़ दिये, और उसे प्यार के आँसुओं से गीला कर दिया। माशा ने अपना हाथ नहीं हटाया......और सहसा उसके ओठों ने मेरे गाल का स्पर्श किया और मैंने उनका ताजा और गरम चुम्बन महसूस किया। मेरे अन्दर बिजली दौड़ गई।

"प्यारी मेरिया इवानोव्ना"—मैंने उससे कहा "मेरी पत्नी

बनना क़बूल करो, मुझे सुखी बनाओ।"

वह फिर अपने आपे में आ गई।

"ख़ुदा के लिए अपने मन को शान्त रखो" मेरे हाथ से अपना हाथ हटाते हुए वह बोली। "अभी तुम ख़तरे से बाहर नहीं हुए। जख्म के खुलने का अभी डर है। मेरी ही ख़ातिर सही, लेकिन अपनी परवाह तो करो।"

यह कहकर वह बाहर चली गई, और मुझे आनन्द के सागर में गोता खाते हुए छोड़ गई। खुशी ने मुझे नया जीवन दे दिया। वह अब मेरी हो गई। वह मुझ से प्यार करती है। इसी विचार से मेरा हृदय तरंगित हो रहा था।

इसके बाद क्षण प्रति क्षण मेरी हालत सुधरती गई। रेजिमेन्ट का नाई ही मेरी चिकित्सा कर रहा था, क्योंकि क़िले में और कोई डाक्टर नहीं था और भाग्य से इस व्यक्ति ने अपने को लुक़मान हकीम साबित करने की कोशिश नहीं की। प्रकृति और मेरे यौवन ने मुझे जल्द चंगा हो जाने में मदद दी। कमाण्डर का सारा परिवार मेरी देखभाल में लगा रहता था। मेरिया इवानोव्ना हर समय मेरी आँख के सामने बनी रहती। अपनी सफ़ाई देते हुए मैं जो बात कह रहा था वह उसके बीच में ही चली गई थी इसलिए पहला मौक़ा मिलते ही मैंने वह बात पूरी कह सुनाई और इस बार मेरिया इवानोव्ना अन्त तक बैठी ध्यान से सुनती रही। बिना किसी तरह का उपक्रम या दिखावा किये उसने भी मेरे प्रति अपना प्रेम निवेदित किया और कहा कि

उसकी खुशी से उसके माँ बाप को भी जरूर प्रसन्नता होगी।

"लेकिन अच्छी तरह सोच लो।" वह बोली "तुम्हारे मा बाप आपत्ति तो नहीं करेंगे ?"

मैंने सोचा। मुझे अपनी माँ के स्नेह के बारे में कोई सन्देह न था, लेकिन यह जानते हुए कि मेरे पिता के विचार और उनका स्वभाव कैसा है—मुझे लगा कि मेरा प्रेम उनके मर्म को न छू सकेगा और वह यही समझेंगे कि यह एक नवयुवक का मिथ्या उत्साह है। यह बात मैंने पूरी दयानतदारी से मेरिया इवानोव्ना को बता दी। लेकिन मन में यह तय कर लिया कि अधिक से अधिक आग्रह भरे शब्दों में अपने पिता को लिखकर उनसे अनुरोध करूँगा कि हम दोनों को अपना आशीर्वाद भेज दें। लिखकर मैंने अपना पत्र मेरिया इवानोव्ना को दिखाया। उसे वह इतना हृदयस्पर्शी और युक्तिपूर्ण लगा कि उसे सफलता के बारे में कोई शंका न रही और उसने अपने को यौवन और प्रेम भरे कोमल हृदय की सच्ची भावनाओं में बह जाने दिया।

जैसे ही मैं कुछ स्वस्थ होने लगा मैंने श्वाब्रिन से सुलह कर ली। द्वन्द्व-युद्ध के बारे में झिड़कते हुए इवान कुज़ामिश ने मुझ से कहा :

"आह, पियोत्र आंद्रीइच, मुझे तो चाहिए था कि तुम्हें गिरफ़्तार कर लेता, लेकिन तुम खुद ही काफ़ी सज़ा भुगत चुके हो। बहरहाल अलेक्सी इवानिच को गोदाम में बन्द कर दिया गया है और वासीलिसा यगोरोव्ना ने उनकी तलवार छीनकर ताले

में बन्द कर दी है। अच्छा हो कि वह इस सारी घटना पर शान्त मन से एक बार सोच लें और प्रायश्चित्त करें।

मेरे हृदय में इतना उल्लास भरा था कि मैं विरोध की किसी भावना को अन्दर जगह न दे सकता था। मैंने श्वाब्रिन का पक्ष लिया और उस सहृदय कमाण्डर ने अपनी पत्नी की रज़ामन्दी से उसे रिहा कर दिया। श्वाब्रिन मुझ से मिलने आया। और हमारे बीच जो कुछ गुज़रा था उस पर उसने हार्दिक दुःख प्रगट किया। उसने यह माना कि ग़लती सारी उसकी ही थी और उसने बीती बात को भुला देने का आग्रह किया। मन में किसी द्वेष को पालकर रखना मेरे स्वभाव के अनुकूल न था और मैंने सच्चे हृदय से उसे इस झगड़े के लिए, और जो ज़ख़्म उसने मुझे पहुँचाया था—उसके लिए भी क्षमा कर दिया। मैंने सोचा कि वह अपने चोट खाए अहंकार और ठुकराए प्रेम की जलन को मिटाने के लिए ही मेरिया को बदनाम करता था। इसलिए मैंने उदारतापूर्वक अपने दुःखी प्रतिद्वन्द्वी को माफ़ कर दिया।

कुछ ही दिनों में मैं बिलकुल चंगा हो गया और अपने डेरे पर आ गया। मैं बड़ी तीव्र आतुरता से अपने अन्तिम पत्र के उत्तर की प्रतीक्षा कर रहा था। आशाएँ बाँधने का साहस न कर पाता था और दुःखद आशंकाओं को उठने से दबा रहा था। अभी तक मैंने वासीलिसा यगोरोव्ना और उनके पति से अपना मन्तव्य प्रकट न किया था, लेकिन मेरी प्रार्थना पर उन्हें किसी प्रकार का आश्चर्य न होता। मेरिया इवानोव्ना और मैंने एक

दूसरे के प्रति अपनी भावनाओं को छिपाने की कोशिश न की थी और हमें पहले से ही इस बात का विश्वास था कि हमें उनकी अनुमति मिल जायगी।

आखिरकार एक दिन सुबह सावालिच एक पत्र लेकर अन्दर आया। कांपते हुए हाथों से मैंने उसे पकड़ा। पते की लिखावट मेरे पिता के हाथ की थी। इस बात ने मुझे पहले से ही चेतावनी दे दी कि पत्र में कोई चीज़ जरूर महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि साधारणतया मेरी माँ ही मुझको लिखा करती थीं और पिता अक्सर पत्र के अन्त में कुछ पंक्तियाँ लिख दिया करते थे। कई मिनट तक लिफ़ाफ़ा बिना खोले ही मैं इन गम्भीर शब्दों में लिखे पते को बार बार पढ़ता रहा। "मेरे पुत्र पियोत्र आंद्रीइच ग्रिनियोफ़ को, ओरनबर्ग के सूबे में—बेलोगोर्स्की के दुर्ग में मिले।" मेरे पिता ने यह ख़त किस मनस्थिति में लिखा होगा—इसका अनुमान मैंने पते के अक्षरों की बनावट से लगाने की कोशिश की। आख़िरकार साहस करके मैंने पत्र खोला और पहली ही पंक्ति पढ़कर समझ गया कि मेरी तमाम आशाओं पर वज्रपात किया गया है। पत्र इस प्रकार था :

चिरंजीव पियोत्र !

इस महीने की पन्द्रह तारीख़ को हमें तुम्हारा पत्र मिला, जिसमें तुमने मिरोनोफ़ की पुत्री मेरिया इवानोव्ना से विवाह करने के लिए हमारी मंजूरी और हमारा आशीर्वाद माँगा है। मैं तुम्हें न अपना आशीर्वाद दूँगा, और न अपनी स्वीकृति ही।

बल्कि सचमुच मेरा तो इरादा है कि तुमको पकड़ कर इस बेहूदे मजाक के लिए सख्त सजा दूँ, और इस बात की तनिक परवाह न करूँ कि तुम अफ़सर की पदवी पा गए हो। क्योंकि तुमने यह साबित कर दिया है कि तुम उस तलवार को धारण करने के योग्य नहीं हो जो तुम्हें अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए दी गई है, न कि अपने जैसे निर्लज्ज व्यक्तियों के साथ द्वन्द्व-युद्ध करने के लिए। मैं फ़ौरन आंद्री कारलोविच को पत्र लिखे देता हूँ कि वह तुम्हें बेलोगोर्स्की के दुर्ग से बदल कर ऐसी दूर जगह भेज दें जहाँ तुम अपनी मूर्खता पर क़ाबू पा सको। तुम्हारी माँ ने जब तुम्हारे द्वन्द्व-युद्ध और उसमें तुम्हारे घायल होने की बात सुनी तो तुम्हारे दुख से वह बीमार पड़ गईं और इस समय रोग-शय्या पर हैं। तुम्हारा क्या होने वाला है ? मैं खुदा से दुआ करता हूँ कि वह तुम्हें सुधार दे, हालांकि वह तुम पर रहम करेगा—ऐसी आशा करने का साहस मुझ में नहीं।

तुम्हारा पिता
आ० ग्रि०

इस पत्र को पढ़ कर मेरे मन में अनेक प्रकार के भाव जाग उठे। यह कठोर शब्द, जिनका प्रयोग करने में कोई कसर न उठा रखी थी, मेरे अन्दर गहरे चुभ गए। उन्होंने जिस उपेक्षा से मेरिया इवानोव्ना का हवाला दिया था, वह मुझे अभद्र ही नहीं बल्कि अन्यायपूर्ण भी लगा। बेलोगोर्स्की के दुर्ग से बदल कर कहीं और जाने के विचार ने मुझे डरा दिया। लेकिन सब से ज्यादा माँ

की बीमारी की ख़बर ने मुझे दुखी किया। मुझे सावालिच पर क्रोध हो आया क्योंकि इस में कोई सन्देह नहीं था कि उसी ने द्वन्द्व-युद्ध के बारे में मेरे माँ-बाप को सूचना दी होगी। अपने छोटे से कमरे में इधर से उधर टहलते हुए यकायक मैं उसके सामने आ कर खड़ा हो गया और क्रोध से तमतमा कर बोला—"तुम्हें इतने से ही सन्तोष नहीं हुआ कि तुम्हारे कारण मुझे जख्मी होना पड़ा और मौत के द्वार पर लेटना पड़ा, बल्कि तुम मेरी माँ को भी मारना चाहते हो।"

सावालिच हक्का-बक्का रह गया।

"या ख़ुदा! तुम क्या कह रहे हो?" उसने सिसकते हुए कहा। "मेरे कारण आप जख्मी हुए? ख़ुदा जानता है कि मैं अलेक्सी इवानिच की तलवार के सामने अपना सीना करके आपकी रक्षा के लिए दौड़ा गया था। यह तो मेरा बुढ़ापा था, लानत गिरे इस पर, जिसने मुझे समय पर न पहुँचने दिया। लेकिन माँ के साथ मैंने कौन सा बुरा सलूक किया है?"

"बुरा सलूक?" मैंने दोहराया। "तुम से किस ने कहा था कि मेरे ख़िलाफ़ उनको ख़बर दो। क्या तुम मेरे ऊपर जासूस लगाये गए हो?"

"मैंने आपके ख़िलाफ़ उन्हें ख़बर पहुँचाई?" सावालिच ने आँखों में आँसू भरकर उत्तर दिया—"या ख़ुदा, आसमान के मालिक! अच्छा तो लीजिए पढ़िए—"मालिक ने मुझे क्या लिखा है? आपको पता लगेगा कि मैंने आपके ख़िलाफ़ क्या ख़बरें भेजी हैं।"

उसने अपनी जेब से एक पत्र निकालकर पढ़ना शुरू किया—

"मेरी सख्त ताकीद के बावजूद तुमने मेरे पुत्र पियोत्र आंद्रीइच के बारे में कुछ नहीं लिखा। इसके लिए तुम जैसे पुराने कुत्ते को शर्म आनी चाहिए। तो तुम इस तरह अपने मालिक के आदेश और अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे हो? कुत्ता कहीं का! सचाई को छिपाने और इस नौजवान लड़के से सांठ-गांठ करने के अपराध में मैं तुम्हें सुअरों की देख-भाल करने पर तैनात कर दूंगा। मैं तुम्हें आदेश देता हूँ कि फौरन उसके स्वास्थ्य के बारे में लिखो। मुझ से कहा गया है कि वह अब पहले से अच्छा है। ठीक-ठीक लिखो कि किस जगह पर उसे जख्म लगा था, और उसका जख्म अच्छी तरह भर गया है या नहीं।"

यह प्रत्यक्ष हो गया कि सावालिच निर्दोष था और मैंने व्यर्थ ही अपने सन्देहों और झिड़कियों से उसका अपमान कर दिया था। मैंने उससे क्षमा माँगी। लेकिन उसके आँसू थमते ही न थे।

"मुझे यह सब भी सुनना था।" वह दुहराता गया—"मेरी सेवाओं का मेरे मालिक यह पुरस्कार दे रहे हैं। मैं एक पुराना कुत्ता हूँ और सुअरों की रखवाली करने वाला और आपके जख्म का कारण भी मैं ही हूँ।...... मेरे प्यारे पियोत्र आंद्रीइच! मैं नहीं बल्कि वह बदमाश फ्रांसीसी इस सब की जड़ में है। उसने उपेक्षा से लोगों के मर्म पर चोट पहुँचाना और अपने पाँव पटक कर डाँटना तुम्हें सिखाया था, मानो चोट पहुँचाने और पाँव पटकने

से कोई आदमी एक पापी से अपनी बचत कर सकता है। इस फ्रांसीसी को नौकर रखकर बेकार पैसा बरबाद करने की जैसे जरूरत ही थी !"

तो फिर मेरे आचरण के विरुद्ध मेरे बाप को सूचना देने का कष्ट किसने उठाया था ? जनरल ने ! लेकिन उन्होंने तो मेरे अन्दर कभी अधिक दिलचस्पी नहीं ली थी और इवान कुजामिश ने उन को मेरे द्वन्द्व-युद्ध के बारे में खबर देना जरूरी तक नहीं समझा था। मैंने अनुमान के घोड़े दौड़ाए। श्वाब्रिन पर मुझे पूरा संदेह हुआ। मुझे लगा कि मेरे विरुद्ध मुखबरी करके और इस तरह मुझे उस दुर्ग से और कमाण्डर के परिवार से अलग करके केवल उसको ही लाभ हो सकता था। मेरिया इवानोव्ना को मैं यह सब बताने गया। वह मुझे सीढ़ियों पर मिली।

"तुम्हें क्या हुआ ?" मुझे देख कर उसने कहा—"कितने पीले पड़ गए हो !"

"सब कुछ समाप्त हो गया।" मैंने उत्तर दिया और उसे अपने पिता का पत्र दे दिया।

वह भी पीली पड़ गई। पढ़कर उसने काँपते हाथों से पत्र मुझे लौटाते हुए भर्राए हुए स्वर से कहा :

"लगता है यह नहीं होगा...तुम्हारे माँ बाप मुझे अपने परिवार में नहीं लेना चाहते; खुदा की ऐसी ही मन्शा है। हमारे लिये क्या अच्छा है, इस बात को खुदा हम से ज्यादा जानता है। अब और कुछ नहीं किया जा सकता। पियोत्र आंद्रीइच,

मैं यही चाहती हूँ कि कम से कम तुम तो सुखी रहो।"

"यह नहीं होगा।" उसका हाथ पकड़ते हुए मैं चीखा—"तुम मुझ से प्यार करती हो। मैं किसी भी खतरे का सामना करने को तैयार हूँ। चलो हम दोनों जाकर तुम्हारे माता पिता के चरणों में अपने को डाल दें। वह सीधे-साधे सहृदय लोग हैं, कठोर और अहंकारी नहीं......वह हमें अपना आशीर्वाद देंगे। हम विवाह कर लेंगे......और फिर मुझे पूरा भरोसा है कि मेरे पिता का हृदय भी कुछ दिनों में पिघल जायगा। मेरी माँ मेरी ओर से बोलेंगी। और वह मुझे माफ़ कर देंगे।"

"नहीं, पियोत्र आंद्रीइच।" माशा ने उत्तर दिया—"मैं तुम्हारे माँ बाप के आशीर्वाद के बिना विवाह नहीं करूँगी। उनके आशीर्वाद के बिना तुम सुखी न हो सकोगे। खुदा की मर्ज़ी के आगे तुम्हें सर झुकाना चाहिए। अगर तुम किसी और स्त्री को प्यार करने लगो—खुदा तुम्हारा साथ दे, पियोत्र आंद्रीइच। मैं तुम दोनों के लिये दुआ माँगूँगी।"

उसके आँसू फूट पड़े और वह मुझे छोड़ कर चली गई। मैं उसके पीछे अन्दर जाने को ही था, लेकिन यह सोच कर कि मैं अपने आँसू न थाम सकूँगा, चुपचाप डेरे पर वापस चला आया।

मैं विचारों के अतल सागर में डूबा बैठा था कि सावालिच ने आकर मेरा ध्यान भङ्ग कर दिया।

"लीजिये जनाब," एक लिखा हुआ कागज़ मुझे पकड़ाते हुए बोला—"पढ़ कर जान लीजिये कि अपने मालिक के खिलाफ़ मैं

सूचनाएँ भेजता हूँ और बाप बेटे में मनमुटाव पैदा कराने की कोशिश कर रहा हूँ या नहीं ?"

मैंने उसके हाथ से कागज ले लिया। सावालिच ने इसमें मेरे पिता के पत्र का उत्तर लिखा था। उसे ज्यों का त्यों दे रहा हूँ :

हमारे प्रिय दयालु पिता आंद्रे पित्रोइच !

मुझे आपका वह कृपापत्र मिला जिसमें आपने अपने इस दास पर क्रोध प्रगट करने का अनुग्रह किया है और लिखा है कि अपने मालिक के आदेश न मानने के लिए मुझे शर्मिन्दा होना चाहिए। मैं एक जलील कुत्ता नहीं हूँ बल्कि आपका वफ़ादार सेवक हूँ। मैं आपके आदेशों का पालन करता हूँ और बड़े उत्साह से हमेशा आपकी सेवा करता आया हूँ। और ऐसा करते हुए ही मैं बूढ़ा हो गया हूँ। पियोत्र आंद्रीइच के जख्म के बारे में मैंने आपको इसलिए नहीं लिखा कि आप व्यर्थ ही घबरा जाते, क्योंकि मैंने सुना है कि हमारी मालकिन और माँ अवदोत्या व्लासीव्ना भय खाकर बीमार पड़ गई हैं। मैं उनके स्वास्थ्य के लिए खुदा से दुआ माँगूँगा। पियोत्र आंद्रीइच के दाहिने कंधे के नीचे सीने में जख्म लगा था, जो सिर्फ़ तीन इंच गहरा था और हड्डी के नीचे तक चला गया था वह कमाण्डर के घर में रखे गए थे जहाँ मैं उन्हें नदी के किनारे से उठाकर ले गया था और फिर वहाँ के एक नाई स्टीपन पारामोनोफ़ ने उनका इलाज किया। और अब खुदा का शुक्र है कि पियोत्र आंद्रीइच बिल्कुल अच्छी तरह हैं और उनके बारे में चिन्ता की कोई बात नहीं है। उनके

कमाण्डर—मैंने सुना है, उनसे बहुत खुश हैं। और वासीलिसा यगोरोव्‌ना तो उनके साथ अपने बेटे जैसा बर्ताव करती हैं। रही यह बात कि वह इस झगड़े में क्यों पड़े ? मैं समझता हूं कि इस में उनके लिए बदनामी की कोई बात नहीं। एक घोड़े के चार टांगें होती हैं फिर भी वह ठोकर खा जाता है। और आप ने अनुग्रह करके लिखा है कि आप मुझे सुअरों की देख-भाल पर भेज देंगे। मेरे मालिक होने के नाते इसका फ़ैसला करने का अधिकार आप को ही है। अन्त में विनीत भाव से सलाम।

आपका वफ़ादार ग़ुलाम

आरहिप सावालिच

इस अच्छे भले आदमी के लिखे पत्र को पढ़ते-पढ़ते मैं कई बार अपनी मुस्कराहट न रोक सका। मुझे लगा कि मैं अपने पिता को उत्तर न दे सकूँगा और माँ की चिन्ताओं को दूर करने के लिए सावालिच का पत्र ही काफ़ी होगा।

उस दिन से मेरी स्थिति बदल गई। मेरिया इवानोव्‌ना कभी ही शायद मुझ से बोलती और जहाँ तक होता वह मुझ से दूर रहती। कमाण्डर के घर मेरे लिए अब कोई आकर्षण न रहा। धीरे धीरे मैंने अपने डेरे पर ही अकेले बैठे रहने की आदत डाल ली। अपने कार्य के दौरान में ही मैं इवान कुजामिश से मिलता। श्वाब्रिन से तो शायद ही कभी भेंट करता और वह भी बेमन से, क्योंकि मुझे लगा कि वह अन्दर ही अन्दर मुझ से घृणा करता है। इससे मेरे संदेहों की और भी पुष्टि हो गई। जीवन असह्य हो

गया। मैं निराश कल्पनाओं के सागर में गोते खाने लगा, जिसे निकम्मेपन और अकेलेपन ने और गहरा कर दिया था। एकान्त में मेरे अन्दर प्रेम की आग और अधिक वेग से भड़क उठी और मुझे रह-रह कर जलाने लगी। मेरी लिखने-पढ़ने की रुचि भी मर गई। मेरा उत्साह क्षीण हो गया। मुझे डर लगा कि कहीं पागल न हो जाऊँ या किसी बुरे व्यसन में न पड़ जाऊँ। लेकिन कुछ ऐसी अप्रत्याशित घटनाएँ हुईं, जिन्होंने एकाएक मेरे समस्त जीवन पर गहरा प्रभाव डाला और मेरे मन पर एक प्रबल, पर लाभदायक आघात किया।

छः

●

# पुगाचोफ़ का विद्रोह

सुनो, ए जवानो, सुनो
हम बुजुर्गों की बात भी ।

—एक लोक गीत

इसके पहले कि उन अनोखी घटनाओं का वर्णन करूं, मैं संक्षेप में यह बता देना जरूरी समझता हूँ कि उस समय सन् १७७२ के अन्त में ओरनबर्ग सूबे में क्या स्थिति थी।

इस विशाल और सम्पन्न सूबे में कई एक अर्ध-सभ्य जातियाँ बसती थीं, जिन्होंने कुछ दिन पहले ही रूस के बादशाह का आधिपत्य स्वीकार किया था। यह क्रूर और मनमाने ढंग से रहने वाले लोग, जिन्हें सभ्य जीवन की आदतों और नियमों का पालन करना न आता था, लगातार विद्रोह करते रहते थे और उनको दबाकर रखने के लिए सरकार को हर समय चौकस रहकर उन पर कड़ी निगाह रखनी पड़ती थी। उपयुक्त स्थानों पर क़िले बनाए

गए थे, जिनमें कज़ाक जाति के लोग बसाए गए थे जो अब यायिक नदी के तट पर कई पीढ़ियों से रह रहे थे और उसके मालिक थे। लेकिन इस स्थान की शान्ति और सुरक्षा के लिए जिन कज़ाक लोगों को यहाँ बसाया गया था—वह भी कुछ दिनों से सरकार के लिए खतरा बन गए थे। सन् १७७२ में उनके मुख्य नगर में विद्रोह हुआ। कज़ाकों को क़ाबू में लाने के लिए मेजर जनरल त्रोबेन वर्ग ने कठोर दमन से काम लिया था जिसके कारण यह विद्रोह हुआ। नतीजा यह निकला कि त्रोबेन वर्ग की बर्बरता-पूर्वक हत्या कर दी गई। कज़ाक सेना के अफ़सरों को ऊपर से नीचे तक बदल दिया गया। और अन्त में इस विद्रोह को तोपों और क्रूर सज़ाओं के द्वारा दबाया गया।

बेलोगोस्की के क़िले में मेरे आने से कुछ दिन पहले ही यह घटनाएं हो चुकी थीं। अब अमन क़ायम हो गया था या कम से कम ऐसा दिखाई देता था। अधिकारियों ने बड़ी आसानी से इ। कपटी विद्रोहियों की बनावटी क्षमा-प्रार्थना पर विश्वास कर लिय जो अपने हृदय में द्वेष छिपाकर फिर से नई हलचल मचाने के लिए अवसर की प्रतीक्षा में थे।

अब अपनी कहानी फिर शुरू करें।

एक दिन शाम को ( अक्तूबर १७७३ के प्रारम्भ ) मैं घर पर अकेला बैठा पतझड़ की वायु की हूहू सुन रहा था और खिड़की में से चाँद पर होकर गुज़रते हुए बादलों को देख रहा था। कोई मुझे कमाण्डर के यहाँ से बुलाने आया। मैं तुरन्त चल दिया।

वहाँ मैंने श्वाब्रिन, इवान इग्नातीश और कज्ज़ाक सारजंट मेक्सीमिच को पाया। न वहाँ वासीलिसा यगोरोव्ना थीं और न मेरिया इवानोव्ना ही। मेरे सलाम का जवाब देते समय मुझे लगा कमाण्डर बहुत परेशान है। उसने दरवाजा बन्द कर दिया और सारजंट के अलावा—जो दरवाज़े के पास खड़ा था—बाक़ी हम सब को बैठा दिया और अपनी जेब से पत्र निकाल कर कहा—"दोस्तो एक बड़ी महत्त्वपूर्ण ख़बर है। सुनो कि जनरल ने क्या लिखा है ?" उसने अपना चश्मा लगाकर यह पत्र पढ़ सुनाया।

## बेलोगोर्स्की के क़िले के कमाण्डर मिरोनोफ़ के नाम गुप्त पत्र

मैं तुम्हें सूचित कर रहा हूँ कि एक फ़रार डोन कज्ज़ाक पुराने धर्म में विश्वास रखने वाला एमेलियन पुगाचोफ़ ने भूतपूर्व सम्राट् पीटर तृतीय का नाम धारण करके एक अक्षम्य अपराध किया है और उसने बदमाशों का एक गिरोह बनाकर यायिक नदी के किनारे बसी हुई बस्तियों में विद्रोह करा दिया है और कई क़िलों पर आक्रमण करके अपने क़ब्ज़े में कर लिया है। जहाँ हर जगह उसने हत्याकांड रचे हैं और खुलकर लूट मार की है। इसलिए इस पत्र को पाते ही तुम इस बदमाश और झूठे दावेदार को परास्त करने के लिए फ़ौरन ज़रूरी कार्यवाही करो। और यदि संभव हो जब वह आपके क़िले पर हमला करे तो उसकी ताक़त को पूरी तरह नष्ट कर दो।

"ज़रूरी कार्यवाही करो"—कमाण्डर ने अपना चश्मा उतार कर काग़ज़ को लपेटते हुए कहा "यह कहना तो बड़ा आसान है–यह बदमाश ज़ाहिर है कि बहुत मज़बूत है। और हमारे पास सिर्फ़ एक सौ तीस आदमी हैं। इसमें हम उन कज़ाक सैनिकों की गिनती नहीं कर रहे जिन पर भरोसा नहीं किया जा सकता—मेक्समिच, बुरा न मानना, तुम्हारी तरफ़ मेरा इशारा नहीं है।" (सारजन्ट मुस्कराया) "तो भी अब और कुछ नहीं किया जा सकता दोस्तो; ईमानदारी और लगन से अपनी ज़ुम्मेदारियों को निभाओ। चौकसी करने के लिए संतरी बैठाओ और रात को गश्त लगाने का प्रबन्ध करो। अगर हमला हो तो फाटक बन्द करके सैनिकों को मैदान में ले जाओ। और मेक्समिच! तुम अपने कज़ाक सैनिकों पर कड़ी निगाह रखो। तोप की मरम्मत और सफ़ाई भी निहायत ज़रूरी है। सब से बड़ी बात यह है कि इस मामले को गुप्त रखो ताकि क़िले में किसी को इसकी भनक न पड़े।

यह आदेश देकर इवानकुज़ामिश ने हम लोगों को वहाँ से जाने की आज्ञा दी। श्वाब्रिन और मैं इस ख़बर के बारे में बात करते हुए एक साथ बाहर आए।

"तुम क्या सोचते हो कि इसका क्या अन्त होगा?"

"ख़ुदा जाने क्या होगा? अभी तो सोचता हूँ कि यह सब यों ही है। लेकिन अगर..... ।"

वह सोच में पड़ गया और खोए खोए मन से एक फ्रांसीसी

लय गुनगुनाने लगा।

हमारी सावधानियों के बावजूद पुगाचोफ़ की खबर सारे क़िले में फैल गई। इवानकुज़ामिश यद्यपि अपनी पत्नी का बड़ा आदर करते थे लेकिन फ़ौज की कोई पोशीदा बात वह, चाहे दुनिया इधर से उधर हो जाए, उनको कभी न बताते। जनरल का पत्र पाकर उन्होंने बड़ी चालाकी से वासीलिसा यगोरोव्ना को यह कह कर बाहर भेज दिया था कि पिता गेरासीम ओरेनबर्ग की कोई बड़ी विलक्षण बात, जिसे उन्होंने और किसी को नहीं बताया है, उन्हें बताना चाहते हैं। वासीलिसा यगोरोव्ना तुरन्त पादरी की स्त्री से भेंट करने के लिए चल पड़ी और इवान कुज़ामिश के कहने पर माशा को भी अपने साथ ले गई ताकि वह घर पर अकेला अनुभव न करे।

इस तरह घर में अपने को अकेला पाकर इवान कुज़ामिश ने हम लोगों को तुरन्त बुलवा भेजा और पलाशा को ताले के भीतर बन्द कर दिया ताकि वह दरवाज़े से कान लगा कर न सुन ले।

वासीलिसा यगोरोव्ना को पादरी की पत्नी से कोई खबर न मिल सकी और घर आने पर उन्हें पता चला कि उनकी अनुपस्थिति में इवान कुज़ामिश ने एक कौंसिल बुलाई थी और पलाशा को ताले में बन्द कर दिया था। उन्होंने भाँप लिया कि उनके पति ने उन्हें धोखा दिया था और वह उन से सवाल पर सवाल पूछने लगी। लेकिन इवान कुज़ामिश पहले ही से इस आक्रमण के लिए तैयार बैठे थे। वह हिचकिचाए नहीं और अपनी जिज्ञासु पत्नी

को उन्होंने साहसपूर्वक उत्तर दिया—

"प्रिय वासीलिसा यगोरोव्ना बात यह है कि हमारे क़िले की औरतों ने भूसे की मदद से चूल्हे जलाने शुरू कर दिये हैं और चूंकि इससे आग लगने का डर है, इससे मैं ने सख्त ताक़ीद कर दी है कि आगे से भूसा का इस्तेमाल न करके सिर्फ लकड़ी ही काम में लायें।"

"तो तुमने पलाशा को क्यों ताले में बन्द कर दिया ?" कमाण्डर की पत्नी ने पूछा, "इस बिचारी लड़की ने क्या किया था जो इसे मेरे वापस आने तक गोदाम की कोठरी में बैठना पड़ा ?"

इवान कुज़मिश इस प्रश्न के लिए तैयार न थे। हड़बड़ा कर उन्होंने कोई ऊटपटांग बात बक दी।

वासीलिसा यगोरोव्ना की दृष्टि में अपने पति का यह विश्वास घात प्रत्यक्ष हो गया। किन्तु यह जानते हुए कि अब वह अपने पति से कोई बात निकाल नहीं सकती उन्होंने प्रश्न पूछना बन्द कर दिया और खीरे के अचार का जिक्र करने लगी, जिसे पादरी की पत्नी ने विशेष ढंग से तैयार किया था। वासीलिसा यगोरोव्ना को रात भर नींद न आई। पड़े पड़े वह यही अटकल लगाती रही कि आख़िर उनके पति के मन में ऐसी कौनसी बात है जिसे उनको नहीं बताना चाहिये।

दूसरे दिन गिरजाघर की प्रार्थना से लौटते समय उन्होंने देखा कि इवान इग्नातीच तोप के मुँह में से चीथड़े, कंकड़, पत्थर, हड्डियां

और बहुत प्रकार का कूड़ा-करकट निकाल कर फेंक रहा है जिसे लड़कों ने उसमें भर दिया था।

"इन फौजी तैयारियों का क्या मतलब हो सकता है?" कमाण्डर की पत्नी को आश्चर्य हुआ। "क्या उन्हें फिर किरग़ीज़ों के हमले का डर है। लेकिन निश्चय ही इवान कुज़ामिश ऐसी छोटी बातें मुझ से तो नहीं छिपायेंगे!" और उन्होंने अपने जिज्ञासु नारी-हृदय को कचोटने वाले रहस्य का पता लगाने का दृढ़ निश्चय करके इवान इग्नातीच को बड़े उत्साह से बुलाया।

वासीलिसा यगोरोव्ना ने घर की व्यवस्था कैसे करनी चाहिए इस बारे में इवान इग्नातीच से कुछ बातें कीं। जैसे एक मजिस्ट्रेट क़ैदी का बयान लेते समय इधर उधर के प्रश्न पूछने लगता है ताकि वह अपराधी असावधान हो जाये। फिर कुछ देर की ख़ामोशी के बाद वासीलिसा यगोरोव्ना ने एक गहरी साँस ली और अपना सर हिला कर कहा—

"अरे भाई! सोचो तो कैसी भयानक ख़बर है! इसका क्या नतीजा निकलेगा?"

"आप चिन्ता न करें!" इवान इग्नातीच ने कहा—"ख़ुदा ने चाहा तो सब ठीक हो जाएगा। हमारे पास काफ़ी सैनिक हैं, काफ़ी बारूद है और मैंने तोप की सफ़ाई कर दी है। पुगाचोफ़ को हम परास्त कर सकते हैं। जाको राखे साइयाँ मार सके न कोय।"

"लेकिन यह पुगाचोफ़ कैसा आदमी है?"

इवान इग्नातीच को लगा कि उससे मुँह से बात निकल गई

और उसने ख़ामोश रहना चाहा। लेकिन समय चूक गया था। वासीलिसा यगोरोव्ना ने किसी और से न बताने का वचन देकर उसे सब कुछ कहने पर विवश कर दिया।

उसने अपना वायदा पूरा किया और पादरी की पत्नी के अलावा और किसी को एक शब्द तक नहीं बताया। और उनको भी सिर्फ इसलिए ही बताया क्योंकि उनकी गाय अभी तक स्टेपी के चरागाह में ही चर रही थी और हो सकता था कि विद्रोही उसे हांक ले जाते।

फिर तो हर जगह पुगाचोफ़ के बारे में चर्चा होने लगी। कमाण्डर ने पास पड़ोस के गाँव और किलों में पता करने के लिए मैक्सीमिच को भेजा। दो दिन के बाद सार्जेंट ने लौट कर बताया कि उनके क़िले से कोई चालीस मील दूर स्टेपी के मैदान में उसने बहुत सी बत्तियों का प्रकाश देखा था। और बश्कीर लोगों से सुना था कि एक गिरोह बढ़ता हुआ आ रहा था जिसके बारे में यह नहीं कहा जा सकता कि वह कितना बड़ा था। सार्जेंट इससे ज्यादा और कुछ न बता सका क्योंकि बहुत दूर तक जाने का उसे साहस न हुआ था।

क़िले में रहने वाले कज़ाक तो अत्यन्त व्यग्र थे ही। हर गली कूचे में वह एक गोल बांधकर खड़े हो जाते और आपस में कानाफूसी करते और जैसे ही किसी घुड़ सवार या पैदल सैनिक को देखते, तितर बितर हो जाते। उनके बीच जासूस छोड़ दिए गए। यूले एक कलमुख जाति का सैनिक, जिसने ईसाई मत

स्वीकार कर लिया था, एक दिन कमान्डर के पास बड़ी महत्त्वपूर्ण खबर लेकर आया। यूले ने बताया कि सार्जंट की रिपोर्ट ग़लत थी। लौट कर इस चालाक कज़ाक सार्जंट ने अपने कज़ाक साथियों से कहा था कि वह विद्रोहियों से मिला था। उनके नेता के आगे पेश हुआ था। जिसको चूमने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ा दिया था और दोनों बड़ी देर तक आपस में बातें करते रहे थे। कमान्डर ने तुरन्त मैक्सीमिच को गिरफ़्तार करके यूले को उसके स्थान पर नियुक्त कर दिया। स्पष्ट है कि कज़ाकों को यह बात बुरी लगी। वह जोर से अपनी नाराज़गी ज़ाहिर करते रहे और इवान इग्नातीच, जो कमान्डर का आदेश पालन करने गया था, उसने स्वयं अपने कानों से सुना "गारद के कुत्ते, तुम भी इसी तरह नहीं बचोगे!" कमान्डर ने उसी दिन क़ैदी से पूछताछ करने का इरादा किया था, लेकिन संभवतः अपने साथियों की मदद से मैक्सीमिच भाग गया था।

एक और बात ने कमाण्डर की चिन्ताओं को बढ़ा दिया। राजद्रोह फैलाने वाले कुछ काग़ज़ों के साथ बश्कीर पकड़ा गया। इस मौक़े पर कमाण्डर ने फिर अपने अफ़सरों को बुलाना चाहा और वासीलिसा यगोरोव्ना को किसी बहाने बाहर भेजना चाहा। लेकिन इवान कुज़ामिश सच्चे और साफ़दिल आदमी थे, इसलिए उन्हें नया बहाना न सूझा।

मैंने कहा, "वासीलिसा यगोरोव्ना।" उन्होंने गला साफ़ करते हुए कहा "मैंने सुना है कि पिता गेरासीम को शहर से..."

"पहेलियां न बुझाओ, इवान कुज़ामिश।" उनकी पत्नी ने बात काट कर कहा, "मैं जानती हूँ कि तुम एमेलियन पुगाचोफ़ के बारे में सोचने के लिए कौंसिल बुलाओगे, जिससे मुझे अलग रखना चाहते हो, लेकिन तुम मुझे धोखा नहीं दे सकते।"

इवान कुज़ामिश उसे देखते ही रह गए। "ख़ैर" उन्होंने कहा, "अगर तुम सब कुछ जान चुकी हो तो तुम भी रुक जाओ। हम तुम्हारे सामने ही बातें कर लेंगे।"

"ऐसा ही करना चाहिए भले आदमी।" उसने उत्तर दिया। "तुम्हें धोखा देना नहीं आता। जाओ अफ़सरों को बुलवा भेजो।"

हम फिर एकत्र हुए। इवान कुज़ामिश ने अपनी पत्नी की मौजूदगी में पुगाचोफ़ का घोषणा पत्र जिसे किसी अर्धशिक्षित कज़ाक ने लिखा होगा, पढ़कर हमें सुनाया। उस बदमाश ने फ़ौरन हमारे क़िले पर धावा बोलने के इरादे की घोषणा की। कज़ाकों और सैनिकों को उसके गिरोह में शामिल हो जाने की दावत दी थी और कमान्डरों से अपील की थी कि वह उसका मुक़ाबला न करें। नहीं तो वह उन्हें मौत के घाट उतार देगा। यह घोषणा पत्र अटपटी किन्तु ओजस्वी भाषा में लिखा गया था और इस में संदेह नहीं कि आम सीधे सादे लोगों पर उसका तीव्र प्रभाव पड़ा होगा।

"बदमाश कहीं का।" वासीलिसा यगोरोव्ना ने चीख़ कर कहा, "इसकी जुर्रत तो देखो कि हमारे सामने ऐसी शर्तें पेश

करता है। चाहता है कि हम जाएँ, उस से मिलें और उसके क़दमों पर झण्डे रख दें। आह कुत्ता कहीं का! शायद उसे मालूम नहीं कि हमने भी फ़ौज में चालीस साल काटे हैं और दो एक लड़ाइयाँ भी देखी हैं। मुझे भरोसा है कि किसी कमाण्डर ने इस बदमाश की बकवास पर ध्यान नहीं दिया होगा।"

"मैं भी ध्यान न देता।" इवान कुज़ामिश ने उत्तर दिया—"लेकिन ऐसा लगता है कि यह बदमाश कई क़िलों पर कब्ज़ा कर चुका है।"

"तब तो वह सचमुच बहुत ताक़तवर होगा।" श्वाब्रिन ने कहा।

"हम फ़ौरन उसकी सही सही ताक़त का पता लगवा लेंगे।" कमाण्डर ने कहा—"वासीलिसा यगोरोव्ना, गोदाम की चाबियाँ मुझे दो। और इवान इग्नातीच बश्कीर को यहाँ ले आओ और यूले से कहो कि हंटर उठा लाए।"

"ठहरो, इवान कुज़ामिश।" कमाण्डर की पत्नी ने उठते हुए कहा, "मुझे माशा को लेकर घर से बाहर जाने दो। चीख़ पुकार सुनकर वह डर जायगी। वैसे मुझे इसकी परवाह नहीं है। आप का काम सफल हो!"

पुराने ज़माने में यन्त्रणा देना न्याय-विधान का इतना अभिन्न अङ्ग होता था कि जिस भले क़ानून ने इसको अवैध बना दिया वह क़ानून ही बहुत दिनों तक कार्यान्वित नहीं किया गया। उन दिनों यह धारणा थी कि किसी अपराधी को सज़ा देने के लिए

यह ज़रूरी था कि वह अपने जुर्म का इक़रार कर ले। यद्यपि यह धारणा उचित न्याय दृष्टि के विरुद्ध और निराधार है, क्योंकि अगर अभियुक्त अपने ऊपर लगाए गए अभियोग से इन्कार करता है और इस बात को उसके निरपराधी होने का सबूत नहीं माना जाता तो फिर उसके इक़रार को तो और भी उसके अपराधी होने का सबूत नहीं समझा जा सकता। आज भी मैं पुराने समय के जजों को इस बर्बर प्रथा के ख़त्म किये जाने पर खेद प्रगट करते हुए सुनता हूँ, लेकिन उन दिनों कोई भी यन्त्रणा देने की आवश्यकता पर सन्देह न करता था। न जज और न अभियुक्त ही। इसलिए कमाण्डर का हुक्म सुनकर न हमें आश्चर्य हुआ और न भय ही। इवान इग्नातीच बश्कीर को लाने के लिये चला गया जो उस समय वासीलिसा यगोरोव्ना के गोदाम में क़ैद था। कुछ देर में ही क़ैदी को लाकर दरवाज़े पर खड़ा किया गया। कमाण्डर ने उसे अन्दर लाने का इशारा किया।

कठिनाई से ड्योढ़ी पार करके ( पाँव-पड़ी बेड़ियों के कारण ) वह बश्कीर अन्दर आया और अपनी लम्बी टोपी उतार कर दरवाज़े के पास खड़ा हो गया। मैंने उसकी ओर देखा और काँप गया। उस आदमी की सूरत मैं कभी भूल नहीं सकता। उसकी उम्र सत्तर वर्ष से भी ऊपर लगती थी। उसके नाक कान दोनों नहीं थे। उसका सर मुँड़ा हुआ था और दाढ़ी की जगह सिर्फ़ थोड़े से सफ़ेद बाल लटक रहे थे। वह क़द का बहुत छोटा, दुबला पतला और झुकी कमर का आदमी था लेकिन उसकी संकुचित

आँखों में अभी भी चमक बाक़ी थी।

"आहा"—कमाण्डर ने सन् १७४१ के विद्रोहियों को सज़ा के रूप में अङ्गभङ्ग कर देने वाले उन चिन्हों को पहचानते हुए कहा—"देखता हूँ कि तुम बहुत पुराने भेड़िये हो और एक बार हमारे शिकंजे में भी आ चुके हो। तुम्हारे सर को देखकर ऐसा लगता है कि विद्रोह करना तुम्हारा बहुत पुराना शुगल है। मेरे पास आओ। बताओ तुम्हें किसने भेजा है?"

वह बूढ़ा बश्कीर मौन खड़ा कमाण्डर को बिल्कुल विमूढ़ भाव से एकटक देखता रहा।

"बोलते क्यों नहीं?" इवान कुज़ामिश ने फिर पूछा—"क्या रूसी भाषा नहीं समझते? यूले, तुम अपनी भाषा में इससे पूछो कि हमारे क़िले में इसको किसने भेजा है?"

यूले ने इवान कुज़ामिश का प्रश्न तातार भाषा में दोहराया। लेकिन बश्कीर उसकी ओर भी उसी विमूढ़ भाव से देखता रहा और एक शब्द भी न बोला।

"अच्छा यह बात है।" कमाण्डर ने कहा—"तुम को मैं बुलवाऊँगा। लड़को, इसका यह बेहूदा धारीदार चोगा उतार दो और इसकी पीठ पर कोड़े लगाओ। खूब कस करके। समझ गए यूले।"

इस काम में प्रवीण दो सैनिकों ने बश्कीर को नँगा करना शुरू किया। इस अभागे आदमी के मुख पर चिन्ता के भाव प्रगट हो आए। वह अपने इर्दगिर्द इस तरह देख रहा था मानो किसी

जँगली जानवर को बच्चों ने पकड़ लिया हो। लेकिन जब उसे एक आदमी की गर्दन में हाथ डालने के लिए विवश करके जमीन से उठा लिया गया और यूले ने अपना हंटर फटकारा तो बश्कीर एक क्षीण दया की याचना करने वाले स्वर से कराहा और अपना सर हिला कर उसने अपना मुँह खोला जिसमें जीभ के स्थान पर एक ठूँठ सा दिखाई दिया।

जब मैं यह याद करता हूँ कि यह सब मेरे ही जीवन में गुज़रा था और यह कि अब मैं सम्राट् अलेक्जेन्डर के उदार शासन की नियामतें देखने के लिए जीवित हूँ तो इस नवजागरण की तीव्र प्रगति और मानव सिद्धान्तों के व्यापक प्रसार पर आश्चर्य किए बिना नहीं रह पाता। ऐ नौजवान! अगर मेरे लिखे ये कागज़ कभी तुम्हारे हाथ पड़ जायं तो याद रखना कि वह परिवर्तन ही सब से अच्छे और स्थायी होते हैं, जो आचरणों और नीतियों की उदारता के कारण होते हैं न कि हिंसाजनक उथल-पुथल के कारण।

यह देखकर हम सबको भीषण धक्का सा लगा।

"ख़ैर!" कमाण्डर ने कहा, "ज़ाहिर है कि इससे हम कोई बात नहीं निकाल सकते। यूले, इस बश्कीर को फिर गोदाम में ले जा कर बन्द कर दो। दोस्तो, हमें चन्द बातें और करनी हैं।"

हम अपनी स्थिति के संबंध में अभी बहस कर ही रहे थे कि अचानक वासीलिसा यगोरोवना हांफती हुई कमरे में दाख़िल हुई। वह अत्यन्त घबराई हुई सी लग रही थी।

"तुम्हें क्या हुआ ?" कमाण्डर ने आश्चर्य से पूछा।

"मैं एक भयानक ख़बर लाई हूँ।" वासीलिसा यगोरोवना ने उत्तर दिया। "निज़नियो ज़रनी क़िले पर आज सुबह दुश्मनों ने कब्ज़ा कर लिया। पादरी गेरासीम का नौकर अभी अभी वहाँ से लौटा है। उसने कब्ज़ा करते हुए देखा। कमाण्डर और दूसरे सारे अफ़सरों को फाँसी लगा दी गई। तमाम सैनिकों को बन्दी बना लिया गया। यह बदमाश किसी समय भी यहाँ पहुँच सकते हैं।"

इस आकस्मिक ख़बर से मुझे गहरा आघात पहुँचा। मैं निज़नियो ज़रनी क़िले के कमाण्डर को जानता था। वह एक सीधा सादा शान्त स्वभाव का नौजवान था। लगभग दो महीने पहले ही वह ओरेन्बर्ग से आते समय अपनी तरुण पत्नी के साथ इवान कुज़ामिश के यहाँ ठहरा था। निज़नियो ज़रनी का क़िला हमारे क़िले से क़रीब पन्द्रह मील दूर थे। पुगाचोफ़ अब किसी क्षण हम पर आक्रमण कर सकता था। मेरिया इवानोवना का क्या हाल होगा यह सोच कर मेरा दिल बैठ गया।

"सुनिए, इवान कुज़ामिश" मैंने कमाण्डर से कहा—"यह हमारा कर्त्तव्य है कि अपनी आख़िरी सांस रहते हम इस क़िले की रक्षा करें। यह बात तो साफ़ है लेकिन हमें औरतों के बचाव की बात भी सोचनी चाहिए। अगर सड़क पर अभी तक ख़तरा न हो तो उनको ओरेन्बर्ग भेज देना चाहिए या उनको किसी ऐसे भरोसे के क़िले में जहाँ उस बदमाश की पहुँच न हो सके।"

इवान कुज़ामिश ने अपनी पत्नी से कहा—"सुना प्रिय! क्या यह अच्छा न होगा कि जब तक मैं इन विद्रोहियों से न निबट लूं उस समय तक तुम और माशा कहीं और चली जाओ।"

"ओह यह क्या फ़जूल बात है।" उसने उत्तर दिया। "कोई क़िला गोलियों से सुरक्षित नहीं है। फिर बेलोगोर्स्की में क्या बिगड़ा है? ख़ुदा के फ़जल से इसमें हमने बाईस साल काटे हैं। पहले भी बश्कीरों और क़िरगीज़ों से हमारा पाला पड़ चुका है ख़ुदा ने चाहा तो यह पुगाचोफ़ भी हमारा बाल बांका न कर सकेगा।"

'तो प्रिय, तुम्हारी यही मंशा है तो यहीं रहो"। इवान-कुज़ामिश ने कहा, "क्योंकि तुमको हमारे क़िले पर पूरा भरोसा है। लेकिन माशा का क्या करें? अगर हम दुश्मन को मार भगाएँ या जब तक दूसरी फौजी कुमक न आए तब तक किसी तरह जमे रह जायँ तब तो ठीक है। लेकिन अगर यह बदमाश क़िले पर कब्ज़ा कर लें तो······"

"तो···"—वासीलिसा यगोरोव्ना कहते-कहते रुक गइ। उन के मुख पर तीव्र व्याकुलता का भाव था।

'नहीं, वासीलिसा यगोरोव्ना"—कमाण्डर, यह भांपते हुए कि आज जीवन में पहली बार उनके शब्दों ने प्रभाव डाला है, कहते गए—"किसी भी सूरत में माशा को यहाँ नहीं ठहरना चाहिए। उसे ओरेन्बर्ग में अपनी पुरानी आपा के पास भेज देना चाहिए। वहाँ सैनिकों की कमी नहीं है और तोपें भी काफ़ी हैं

और पत्थर की चारदीवारी है। मैं तो तुम्हें भी उसके साथ जाने की सलाह दूंगा। माना कि तुम बुजुर्ग औरत हो लेकिन उन्होंने अगर क़िले पर कब्ज़ा कर लिया तो वह तुम्हारे साथ भी जाने क्या क्या अत्याचार न करें।"

"अच्छी बात है।" कमाण्डर की पत्नी ने कहा—"यही सही। माशा को भेज दो। लेकिन मुझ से सपने में भी ऐसी बात न कहना—मैं नहीं जाऊँगी। अपने बुढ़ापे में तुम से अलग होकर अपने लिए कहीं अकेली क़ब्र की तलाश करने का मैं ख़याल भी नहीं कर सकती। साथ रहे हैं साथ मरेंगे।"

"इस बात में कुछ सार है।" कमाण्डर ने कहा—"ख़ैर! हमें समय नष्ट नहीं करना चाहिए। तुम जाकर माशा को सफ़र के लिये झटपट तैयार कराओ। उसे हम कल पौ फटते ही भेज देंगे। साथ में रक्षा के लिए कुछ सैनिक भी कर देंगे हालाँकि हमारे पास एक आदमी भी फालतू नहीं है। लेकिन माशा कहाँ है?"

"अकुलीना पाम्फीलोवना के यहाँ" कमाण्डर की पत्नी ने उत्तर दिया। "जब उसने सुना कि निज़्नीयो ज़रनी का क़िला दुश्मनों के हाथ चला गया तब वह मूर्छित हो गई। मुझे डर है कि कहीं वह बीमार न पड़ जाए।"

वासिलिसा यगोरोव्ना अपनी बेटी के जाने की तैयारी करने के लिए चली गई। बातचीत जारी रही लेकिन मैं ने उसमें न कोई हिस्सा लिया और न सुना ही। रात को मेरिया इवानोवना

खाने में शामिल हुई। वह पीली पड़ गई थी और उसकी आंखें आंसुओं से गीली थीं। हमने चुपचाप खाना खाया और आज जल्दी ही मेज से उठ गए। परिवार के लोगों को सलाम करके हम अपने अपने डेरों पर चले गए, लेकिन मैं जान बूझ कर अपनी तलवार वहाँ छोड़ आया था जिसे लेने के लिए मैं फिर वहाँ वापस गया। मेरा मन कह रहा था कि मेरिया इवानोव्ना से किसी प्रकार अकेले में भेंट हो जाए। दरअसल वह मुझे दरवाजे पर ही मिली और उसने मुझे तलवार ला कर दी।

"अलविदा! पियोत्र आंद्रोइच" उसने आंखों में आंसू भर कर कहा, "मुझे ओरेन्बर्ग भेजा जा रहा है। मेरी यही कामना है कि तुम जीते रहो और सुखी बनो। शायद खुदा हमें फिर मिलाए लेकिन अगर ऐसा न हो······"

वह सिसकियां भर कर फूट पड़ी। मैंने उसे आलिंगन में भर लिया।

"अलविदा, मेरे हृदय की देवी" मैंने कहा—"अलविदा, मेरी मधुर कल्पना, मेरी प्यारी! मुझ पर चाहे जो गुजरे इतना विश्वास रखो कि मेरा आखिरी ख्याल और मेरी आखिरी प्रार्थना तुम्हारे लिए ही होगी।"

मेरे कन्धों पर सर रख कर माशा सुबकती रही। मैंने पूरे आवेश से उसका चुम्बन लिया और झटपट कमरे से बाहर चला आया।

सात

●

# आक्रमण

आह मेरा बेचारा सर—एक सैनिक का सर
इसने ज़ार की सेवा की है—
सचाई और वफ़ादारी से
तैंतीस साल तक।
बदले में इसे न सोना मिला न ख़ुशी
न शाबाशी, न ऊँची पदवी।
अगर कुछ मिला तो फाँसी का तख्ता
और उसके साथ उपर टँगी शहतीर से
लटका ऐंठे हुए रेशम का फन्दा।

—एक लोक गीत

उस रात मैंने न कपड़े बदले और न सोया ही। मैंने इरादा किया था कि पौ फटने के समय जब मेरिया इवानोव्ना अपनी यात्रा पर चलने को होंगी, मैं क़िले के दरवाज़े पर जाकर उसे अन्तिम बार अलविदा कहूँगा। मैं अपने अन्दर एक बड़े परिवर्तन

का अनुभव कर रहा था। मेरे मन की उद्विग्नता अब उतनी दुख-दायी न रही थी जितना कि मन में एक गहरा अवसाद सा भरा था। जो कुछ दिन से मुझ पर ·········छा गया था। विदाई की वेदना में एक धुंधली पर सुखद आशा के कण मिश्रित थे। साथ ही खतरे के प्रति तीव्र उत्सुकता का भाव और एक उदात्त महत्वा-कांक्षा भी जग गई थी। आंखें ही आंखों में रात गुज़र गई। मैं बाहर जाने को ही था कि दरवाज़ा खुला और एक फ़ौजी कारपोरल ने आकर बताया कि हमारे सारे कज़ाक रात को ही क़िला छोड़ कर चले गए। वह अपने साथ यूले को भी जबरन उठा ले गए और बहुत से अजनबी घुड़सवार क़िले के इर्द गिर्द चक्कर काट रहे हैं। इस विचार ने कि शायद मेरिया इवानोव्ना क़िला छोड़ कर न जा सकी हों मुझे आतंकित कर दिया। मैंने जल्दी से कारपोरल को कुछ आदेश दिए और कमाण्डर के घर की ओर दौड़ा।

पौ फट चुकी थी जब मैं सड़क पर दौड़ा जा रहा था। मैंने पीछे से किसी की पुकार सुनी, मैं रुक गया।

"तुम कहाँ जा रहे हो?"--इवान इग्नातीच ने मेरे नजदीक पहुँचते हुए पूछा। "इवान कुज़ामिश क़िले की दीवार पर हैं और मुझे आप को बुलाने के लिए भेजा है। पुगाचोफ़ आ गया।"

"क्या मेरिया इवानोव्ना चली गई?" मैंने धड़कते दिल से पूछा।

"उन्हें समय ही न मिला।" इवान इग्नातीच ने उत्तर दिया

"दुश्मन ने ओरेन्बर्ग की सड़क काट दी है। क़िले को चारों ओर से घेर लिया है। बुरे लक्षण हैं पियोत्र आंद्रीइच।"

हम क़िले की दीवार पर गए जो ऊँची उठी हुई ज़मीन पर कठघरा लगा कर बनाई गई थी। क़िले के सारे निवासी वहाँ जमा थे। रक्षक सैनिकों का दल हथियार बंद खड़ा था।

पिछले दिन तोप को वहां ले आया गया था। इस छोटी सी टुकड़ी के सामने कमाण्डर इधर से उधर टहल रहा था। ख़तरे की मौजूदगी ने इस बूढ़े सैनिक में प्रेरणा भर कर अद्भुत स्फूर्ति पैदा कर दी थी। क़िले से कुछ ही दूर स्टेपी के मैदान में लगभग बीस घुड़ सवार इधर से उधर चक्कर काट रहे थे। वे कज़ाक लगते थे लेकिन उन में कुछ बश्कीर भी थे। जो बनबिलाव के चमड़े की टोपियों और पीठ पर बंधे तरकशों से सहज ही पहचाने जा सकते थे। सैनिक पंक्ति के बीच से गुज़रते हुए कमाण्डर सैनिकों से कहता फिर रहा था—"मेरे नौनिहालो, आओ आज सम्राज्ञी के लिये अपना सब कुछ निछावर कर दें और दुनिया के आगे साबित कर दें कि हम बहादुर और वफ़ादार लोग हैं।"

सैनिकों ने ऊंचे स्वर से अपना उत्साह प्रकट किया। श्वाब्रिन मेरे निकट खड़ा दुश्मन की ओर एकटक देखता रहा। क़िले में फैली दौड़ भाग देखकर स्टेपी के मैदान में चक्कर काटने वाले घुड़ सवार एकत्र हुए और आपस में बातें करने लगे। कमाण्डर ने इवान इग्नातीच से कहा कि तोप से उस गिरोह का निशाना बांधे और उसने फिर स्वयं तोप चला दी। तोप का गोला उन

लोगों के सर के ऊपर से बिना किसी को नुक़सान पहुँचाये ही सनसनाता हुआ निकल गया। घुड़ सवार तितर बितर हो गये और तुरन्त घोड़ों को दौड़ाते हुए भाग गए और स्टेपी का मैदान खाली हो गया।

उसी समय वासीलिसा यगोरोव्ना वहां आई। उनके साथ माशा भी थी, जो किसी भी दशा में उन से अलग होने को तैयार न थी।

"हां तो क्या हो रहा है?" कमाण्डर की पत्नी ने पूछा— "लड़ाई कैसी चल रही है? दुश्मन कहां है?"

"दुश्मन दूर नहीं है।" इवान कुज़ामिश ने उत्तर दिया— "खुदा ने चाहा तो सब कुछ ठीक हो जायगा। अरे माशा, तुम्हें डर तो नहीं लग रहा।"

"नहीं पापा।" मेरिया इवानोव्ना ने उत्तर दिया—"घर पर अकेले बैठना तो इस से भी बुरा लगता है।"

उसने मेरी ओर देखा और मुस्कराने की कोशिश की। मैंने अपनी तलवार की मूंठ थाम ली। मुझे याद आया कि कल उसके ही हाथों मुझे यह तलवार मिली थी मानो अपनी प्रेयसी की रक्षा के लिए दी गई हो। मेरे हृदय में एक उल्लास भर गया। मैंने उसके वीर प्रेमी के रूप में अपने को कल्पना की आंखों से देखा। मैं उसके विश्वास के योग्य अपने को प्रमाणित कर सकूं इसकी उत्कट साध मन में पैदा हो गई और मैं बेचैनी से उस निर्णय-कारी क्षण की प्रतीक्षा करने लगा।

उसी समय एक आध मील दूर पहाड़ी के पीछे से घुड़ सवारों का एक नया गिरोह दिखाई दिया। और देखते देखते स्टेपी का सारा मैदान तीर कमान और भालों से लैस विद्रोहियों से भर गया। उनके बीच लाल कोट पहने, हाथ में नंगी तलवार उठाये, सफ़ेद घोड़े पर सवार एक आदमी घूम रहा था। वह पुगाचोफ़ था। वह रुक गया और दूसरों ने उसको घेर लिया। वहां से चार घुड़ सवार निश्चय ही उसके हुक्म से सरपट घोड़े दौड़ाते हुए क़िले की सीमा तक आये। हमने उन्हें पहचाना कि वे हमारे ही धोखा देकर निकल भागे कज़ाक थे। उन में से एक अपने सर से ऊँचा एक काग़ज़ थामे हुए था। दूसरा अपने भाले की नोक पर यूले का सर टांगे था। जिसने उसे कठघरे के ऊपर हमारी ओर फेंक दिया। उस बेचारे कलमुख का सिर कमाण्डर के चरणों में आकर गिरा। उन विश्वासघातियों ने चिल्ला कर कहा :

"गोली मत चलाओ। ज़ार का अभिनन्दन करने के लिये बाहर निकल आओ। ज़ार यहीं पर हैं।"

"ठहर तो जाओ तुम्हें अभी मज़ा चखाता हूँ।" इवान कुज़ामिश ने चीख़ कर कहा—"जवानो गोली की एक बाढ़ छोड़ दो।"

हमारे सैनिकों ने एक बाढ़ दाग़ी। जिस कज़ाक के हाथ में चिट्ठी थी वह ढुलक कर घोड़े से नीचे गिर गया। उसके दूसरे साथी वहां से घोड़े दौड़ाते हुए भाग गये। मैंने मेरिया इवानोव्ना की ओर देखा। यूले के ख़ून में सने सर के वीभत्स दृश्य से

आतंकित और गोलियों की आवाज़ से अवसन्न वह जैसे स्तम्भित हो गई थी। कमाण्डर ने कारपोरल को बुला कर उस मरे हुए कज़ाक के हाथ से कागज़ का टुकड़ा लाने को कहा। कारपोरल मैदान में गया और वहाँ से मरे हुए व्यक्ति के घोड़े को भी अपने साथ लगाम पकड़ कर लेता आया। उसने आकर कमाण्डर के हाथ में चिट्ठी थमा दी। इवान कुज़ामिश ने उसे मन ही मन पढ़ा फिर उसके टुकड़े टुकड़े करके फेंक दिया। ज़ाहिर है कि इस बीच विद्रोही हमला करने की तैयारी कर रहे थे। चन्द मिनिटों में गोलियाँ हमारे कानों के पास से सनसनाती हुई गुज़रने लगीं और तीर आकर हमारे निकट ज़मीन में या कठघरे में घुसने लगे।

"वासीलिसा यगोरोव्ना"—कमाण्डर ने कहा—"यह जगह औरतों के लिये नहीं है। माशा को घर ले जाओ। देखती नहीं लड़की अधमरी हो रही है।"

वासीलिसा यगोरोव्ना ने, जो गोलियाँ चलते समय चुप हो गई थी, अब आँख उठा कर स्टेपी के मैदान की ओर देखा। जहाँ बड़ी दौड़ धूप दिखाई दे रही थी। फिर उन्होंने अपने पति की ओर मुड़ कर कहा:

"इवान कुज़ामिश, जिन्दगी और मौत तो खुदा के हाथ है। माशा को दुवा दो! माशा जाओ अपने पापा के पास आओ!"

पीली और काँपती माशा इवान कुज़ामिश के पास गई। उनके आगे घुटनों के बल बैठकर वह जमीन पर झुक गई। बूढ़े कमाण्डर ने उस पर तीन बार क्रास का चिन्ह बनाय। फिर उन्होंने

उसे उठाया और उसका माथा चूम कर एक बदली हुई आवाज़ में कहा :

"माशा बेटी खुश रहो ! खुदा से दुआ मांगो ! वह तुम्हें अनाथ नहीं छोड़ेगा। अगर तुम्हें कोई भला आदमी मिल जाए तो खुदा करे तुम्हें प्यार और मुहब्बत मिले। उसी तरह रहना जिस तरह वासीलिसा यगोरोव्ना और मैंने एक साथ जिन्दगी काटी है। अच्छा माशा अलविदा ! वासीलिसा यगोरोव्ना इसको जल्द यहाँ से ले जाओ !"

माशा आवेग से कमाण्डर के गले में बाहें डाल कर सुबक सुबक कर रोने लगी।

"आओ हम भी एक दूसरे को चूम लें !" कमाण्डर की पत्नी ने कहा और जोर से रो पड़ी, "हाय मेरे इवान कुज़ामिश अलविदा ! अगर मैंने तुम्हें किसी तरह भी तँग किया हो तो मुझे माफ़ करना।"

"अलविदा, अलविदा !" कमाण्डर ने अपनी पत्नी को अंक में भरते हुए कहा—"अच्छा, बस इतना काफ़ी है। जल्द घर चली जाओ। और अगर वक़्त मिले तो माशा को सराफ़ा पहना देना।"

कमाण्डर की पत्नी और पुत्री वहाँ से चले गए। मैं अपनी निगाहों से मेरिया इवानोव्ना का पीछा करता रहा। उसने पीछे मुड़ कर देखा और सर हिला दिया। उनके जाने पर इवान क़ुज़ामिश हमारी ओर मुड़े और उनका समूचा ध्यान दुश्मन पर

केन्द्रित हो गया। विद्रोही अपने नेता के चारों ओर जमा हुए और फिर अचानक घोड़ों से उतरने लगे।

"अपनी जगह मज़बूती से जमे रहो!" कमाण्डर ने कहा—"वह हमला करने वाले हैं।"

उसी समय भयानक चीत्कारें और आवाजें सुनाई दीं। विद्रोही तेज़ी से क़िले की ओर भागते हुए आ रहे थे। हमारी तोप भरी हुई थी। कमाण्डर ने दुश्मन को काफ़ी नज़दीक आ जाने दिया और फिर तोप दाग़ दी। गोला उनके बीचोबीच गिरा। विद्रोही तितर बितर होकर पीछे की ओर भागे। सिर्फ़ उनका नेता पीछे नहीं हटा ......... वह अपनी तलवार घुमाता रहा और उनको बुलाता रहा...... .....जो चीत्कारें और आवाजें एक क्षण को बंद हो गई थीं वह फिर शुरू हो गईं।

"अच्छा जवानो, दरवाज़ा खोल दो और नगाड़े पर चोट दो। जवानो आगे आओ! बाहर चलो मेरे पीछे आओ।" कमाण्डर इवान इग्नातीच और मैं एक क्षण में ही दीवार के बाहर निकल आए लेकिन रक्षक सैनिकों की हिम्मत टूट गई थी। वह टस से मस न हुए।

"तुम क्यों बुत बने खड़े हो!" इवान कुज़ामिश ने चिल्ला कर कहा, "अगर हमें मरना है तो मरेंगे—आज ही इसका फ़ैसला हो जाएगा।"

इसी समय विद्रोही भागते हुए हम तक पहुँच गए और क़िले में घुस आये। नगाड़ा बन्द हो गया। सैनिकों ने अपनी राइफ़लें

नीचे फेंक दीं। एक ठोकर खा कर मैं गिर गया लेकिन उठकर विद्रोहियों के साथ क़िले के अन्दर चला गया। कमाण्डर के सर में चोट आई थी। बदमाश उन्हें घेर कर उन से चाबियाँ माँग रहे थे। मैं उनकी मदद के लिए झपटा। कई लहीम सहीम कज़ाकों ने मुझे पकड़ लिया और अपनी पेटियों से बांध कर बोले, "तुम्हें अभी मज़ा चखने को मिलेगा। ज़ार के दुश्मनों!"

वह हमें घसीटते हुए सड़क से ले चले। गाँव के लोग अपने घरों से निकल कर उन्हें रोटी और नमक की भेंट देने लगे। गिरजाघर के घंटे बज रहे थे। अचानक उस भीड़ में से उन्होंने चिल्ला कर कहा कि ज़ार चौक में वह इन्तज़ार कर रहा है सब से वफ़ादारी की क़सम उठवाने के लिए। लोग चौक की तरफ़ दौड़े। हम भी उधर खींच कर ले जाए गए।

कमाण्डर के घर की सीढ़ियों पर एक आराम कुर्सी पर पुगाचोफ़ बैठा हुआ था। वह एक लाल रंग की कज़ाक कफ़्तान पहने हुए था जिस की किनारी पर सुनहली गोट लगी थी। वह बिज्जू की पोस्तीन की लम्बी टोपी लगाए था। जिसकी सुनहली झब्बा उसकी चमकती हुई आँखों तक लटका था। उसका मुख मुझे पहचाना सा लगा। उसे कज़ाक मुखियों ने घेर रखा था। पादरी गेरासीम भय से पीला और काँपता हुआ सीढ़ियों के पास अपने हाथ में एक क्रास थामे खड़ा था और लगता था कि जैसे वह उन लोगों के लिए दया की मूक याचना कर रहा हो, जो विजेसी के कोप भाजन बनने वाले थे। चौक में झटपट फाँसी कि टिकटियाँ

खड़ी की जा रही थीं। हमारे पहुँचने पर बश्कीरों ने भीड़ को एक तरफ़ हटा दिया। और हमें पुगाचोफ़ के सामने पेश कर दिया। घंटों का बजना बन्द हो गया। गम्भीर निस्तब्धता छा गई।

"कमाण्डर कौन सा है ?" झूठे दावेदार ने पूछा—

हमारे कज़ाक सार्जेंट ने भीड़ से बाहर निकल कर इवान कुज़ामिश की ओर इशारा किया। पुगाचोफ़ ने बूढ़े कमाण्डर की ओर दर्प से देख कर कहा—"अपने ज़ार का तुमने मुक़ाबला करने की जुर्रत की ?"

अपने जख़्म की वजह से शिथिल कमाण्डर ने अपनी अन्तिम शक्ति को एकत्र करके दृढ़ स्वर से उत्तर दिया—"तुम मेरे ज़ार नहीं हो। लो तुम्हें साफ़ बताता हूँ कि तुम एक चोर और ढोंगी हो !"

पुगाचोफ़ गुस्से से तमतमा उठा और उसने एक सफ़ेद रूमाल हिलाया। कई कज़ाकों ने झपट कर कप्तान को पकड़ लिया और खींच कर फाँसी की टिकटिकी की ओर ले गया। वह बूढ़ा बश्कीर जिसका गई रात पहले हमने बयान लेने की कोशिश की थी, एक शहतीर पर बैठा था। उसके हाथ में एक रस्सी थी और एक मिनट के बाद मैंने बेचारे इवान कुज़ामिश को हवा में लटकते हुए देखा। फिर इवान इग्नातीच को पुगाचोफ़ के सामने लाया गया।

"क्या तुम ज़ार पीटर तृतीय के वफ़ादार होने की क़सम उठाते हो ?" पुगाचोफ़ ने उससे पूछा।

"तुम हमारे सम्राट नहीं हो!" इवान इग्नातीच ने अपने कप्तान के शब्द दुहराते हुए कहा, "तुम चोर और ढोंगी हो प्यारे!"

पुगाचोफ़ ने अपना रूमाल फिर हिलाया और यह नेक लेफ्टीनेन्ट भी अपने कमाण्डर की बगल में लटका दिया गया।

अब मेरी बारी थी। मैं ने साहस पूर्वक पुगाचोफ़ की ओर देखा और अपने शानदार साथियों के उत्तर को दुहराने के लिए तैयार हो गया। उसी समय श्वाब्रिन को विद्रोही कज़ाकों के बीच खड़ा देखकर मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। वह एक कज़ाक कोट पहने था और उसने अपने बाल उनकी ही तरह कटवा रखे थे। वह पुगाचोफ़ के पास गया और कान में फुसफुसा कर कुछ कहा।

"इसको फाँसी पर चढ़ा दो!" पुगाचोफ़ ने मेरी ओर बिना देखे ही हुक्म दिया।

मेरे गले में फन्दा डाल दिया गया। मैं मन ही मन प्रार्थना करने लगा और अपने सच्चे हृदय से खुदा के सामने अपने तमाम गुनाहों के लिए माफी माँग कर उससे विनय करने लगा कि वह उन सब की रक्षा करे जो मेरे हृदय के निकट और बहुत प्रिय थे। मुझे टिकटिकी के नीचे घसीट कर ले जायगा।

"घबराओ मत!" जल्लादों ने कहा—शायद वह सचमुच मुझे धीरज बंधाना चाहते थे।

यकायक मैंने एक चीख़ सुनी! "ठहरो बदमाशो, ठहरो!" फांसी लगाने वाला जहाँ का तहाँ रुक गया। मैंने सावालिच को पुगाचोफ़

के चरणों में गिरते देखा।

"प्यारे मालिक!" बेचारा बुड्ढा बोला, "एक कुलीन खानदान के लड़के की मौत से आप को क्या फ़ायदा होगा? इसे छोड़ दीजिए! इसके लिए वह लोग आप को एक बड़ी रक़म देंगे। लोगों को चेतावनी देने के लिए एक मिसाल के रूप में मुझ बूढ़े को फांसी पर लटका दीजिए!"

पुगाचोफ़ ने इशारा किया और उन लोगों ने फौरन रस्सी खोल कर मुझे छोड़ दिया। "हमारे मालिक ने तुम्हें माफ कर दिया!"—उन्होंने मुझ से कहा।

यह मैं ठीक ठीक नहीं बता सकता कि उस समय मुझे अपनी जान बचने से खुशी हुई या अफसोस हुआ। मेरी समझ में कुछ न आ रहा था। मुझे फिर इस झूठे दावेदार के सामने पेश किया गया और जबरन घुटनों के बल उसके आगे झुकाया गया पुगाचोफ़ ने अपना मजबूत हाथ मेरी ओर बढ़ा दिया।

"इनका हाथ चूमो, इनका हाथ चूमो!" मेरे इर्द गिर्द जमा लोगों ने उकसाया। लेकिन मुझे इस नीच हरकत से ज्यादा क्रूर मौत प्यारी थी।

"पियोत्र आंद्रीइच, मेरे प्यारे!" पीछे खड़े सावालिच ने मुझे आगे धक्का देते फुसफुसाते हुए कहा—"हठ न करो! इससे क्या बिगड़ जायेगा, थूक कर चूम लो! इस बद—मेरा मतलब है—इसका हाथ चूम लो।"

मैं टस से मस न हुआ। पुगाचोफ़ ने अपना हाथ नीचे गिरा

कर अट्टहास करते हुए कहा—"हजूर खुशी से पागल हो गये होंगे। इसको उठाओ !"

उन्होंने मुझे खींचकर उठाया और वहीं छोड़ दिया। मैं इस भयानक नाटक को देखने लगा।

गाँव के लोग आ आकर उसके आगे वफ़ादारी की क़समें खा रहे थे। वह एक एक कर आते क्रास को चूमते और फिर इस झूठे दावेदार के आगे सर झुकाते। रक्षक सेना के सिपाही भी वहाँ थे। रेजिमेंन्ट का नाई अपनी कुन्द क़ैंची से उनकी चोटियाँ काटता जा रहा था। अपने सर के बाल झाड़ कर वह आगे आते और पुगाचोफ़ का हाथ चूमते। उसने उन्हें माफ़ करके अपने गिरोह में शामिल कर लिया। आख़िरकार पुगाचोफ़ आराम कुर्सी से उठ खड़ा हुआ और अपने मुखियों के साथ सीढ़ियों से नीचे उतर आया। एक सफ़ेद घोड़ा, जिस पर क़ीमती जीन बंधी हुई थी, उसके पास लाया गया। दो क़ज़ाकों ने बाह से पकड़ कर उसे घोड़े पर चढ़ाया। उसने पादरी जरासीम से कहा कि रात का खाना वह उनके यहाँ खायेगा। उसी क्षण एक औरत की चीख़ने की आवाज़ें सुनाई दीं। कई बदमाश वासीलिसा यगोरोव्ना को नंगी और अस्तव्यस्त दशा में खींच कर सीढ़ियों पर ले आये थे। उन में से एक ने तो उस बेचारी का कोट भी पहन रखा था। और लोगों में से कोई उनके गद्दे, कोई बक्स, कोई कपड़े और कोई चीनी के बर्तन आदि घर की हर क़िस्म की चीज़ें उठाये चला आ रहा था।

"अरे मुझे छोड़ दो।" वह बेचारी बूढ़ी औरत चिल्लाई, "मुझ पर रहम खाओ, मुझे भी इवान कुज़ामिश के पास भेज दो।"

यकायक उसकी दृष्टि टिकटिकियों पर पड़ी और उसने अपने पति को पहिचाना।

"हत्यारो!" वह पागल की तरह चिल्लाई, "उनका यह क्या कर डाला।" इवान कुज़ामिश, मेरी आँखों की रोशनी, बहादुर सिपाही, प्रूसियों की तलवारें तुम्हारा बाल न बांका कर सकीं, न तुर्कों की गोलियाँ ही तुम्हें छू सकीं, ईमानदारी से लड़ने वालों के हाथ तुमने अपनी जान नहीं गँवाई बल्कि एक भगोड़े चोर के हाथों तुम्हें बर्बाद होना पड़ा।"

"इस बूढ़ी कुतिया को चुप कराओ।" पुगाचोफ़ गरजा।

एक कज़ाक ने अपनी तलवार से उसके सर पर वार किया और वह वहीं सीढ़ियों पर ढेर हो गई। पुगाचोफ़ घोड़े पर चढ़ कर चलता बना। लोग उसके पीछे पीछे दौड़े।

## आठ

# एक अनचाहा मेहमान

अनचाहा मेहमान तातार से भी बुरा होता है।

—एक कहावत

चौक खाली हो गया। दिन के भयानक अनुभवों से परेशान मैं अपने अस्तव्यस्त विचारों को एकत्र करने में असमर्थ अभी तक वहीं खड़ा था। मेरिया इवानोव्ना पर न जाने क्या बीती होगी। यह चिन्ता मुझे सब से अधिक सता रही थी। वह कहाँ थी? उसका क्या हुआ? क्या उसे रूपोश होने का अवसर मिल सका? उसके छिपने का स्थान क्या सुरक्षित है? इन चिन्ताओं में डूबा मैं कमाण्डर के घर में दाखिल हुआ। मकान खाली पड़ा था। कुर्सियाँ, मेजें और बकस टूटे फूटे पड़े थे। चीनी के बर्तन फूटे पड़े थे। आततायी काम की हर चीज़ उठा ले गए थे। छोटी सी सीढ़ी से चढ़ कर मैं ऊपर की मंज़िल में पहुँचा और जीवन में पहली बार मेरिया इवानोव्ना के कमरे में दाख़िल हुआ। मैंने

देखा कि लुटेरों ने उसके पलँग के टुकड़े टुकड़े कर डाले थे। कपड़े रखने की अलमारी को लूट कर तोड़ डाला था। खाली पड़े मूर्तिस्तम्भ के सामने दीपक अब भी जल रहा था। खिड़कियों के बीच जो छोटा सा दर्पण टँगा था, वह भी अपनी जगह पर सुरक्षित था···इस साधारण अछूते कमरे की देवी कहाँ थी? मेरे मानसपट पर एक भयानक विचार भूल गया। मैंने कल्पना की कि शायद वह लुटेरों के हाथों में पड़ गई हो···मेरा दिल बैठ गया······मैं फूट फूट कर रोने लगा और अपने प्रेम की देवी का नाम पुकारने लगा······उसी समय एक हल्का खटका हुआ और कपड़ों की अलमारी के पीछे से भय से पीली और कांपती हुई पलाशा निकली।

"आह, पियोत्र आंद्रीइच!" वह अपने हाथ भींच कर चिल्लाई, "कैसी क़यामत का दिन! कितने भयानक अत्याचार!"

"और मेरिया इवानोव्ना कहाँ है?" मैंने व्यग्रता पूर्वक पूछा, "उसको क्या हुआ?"

"वह जिन्दा है।" पलाशा ने उत्तर दिया, "वह अकुलिना पाम्फ़ीलोव्ना के घर में छिपी है।"

"पादरी के यहाँ।" घबराकर मैं चिल्लाया—"या खुदा! पुगाचोफ़ भी तो वहीं है।"

मैं एक झपाटे से कमरे से बाहर निकल कर तुरन्त सड़क पर आ गया और बिना कुछ देखे या सोचे पादरी के घर की ओर सरपट भागा। वहाँ से लोगों के चिल्लाने, हँसने और गाने की

आवाजें आ रही थीं····· पुगाचोफ़ अपने साथियों के साथ दावत उड़ा रहा था। पलाशा मेरे पीछे पीछे दौड़ी आई। उसे मैंने लोगों का ध्यान बटाए बिना चुपचाप अकुलिना पाम्फ़ीलोव्ना को बाहर बुला लाने के लिए अन्दर भेज दिया। एक मिनट के अन्दर पादरी की पत्नी हाथ में एक ख़ाली बोतल लिए देहलीज़ में मुझ से मिलने आ गई।

"ख़ुदा के लिए बताओ मेरिया इवानोवना कहाँ है?" मैंने असह व्यग्रता से पूछा।

"वह बेचारी पर्दे के पीछे मेरे बिस्तर में लेटी हुई है।" पादरी की पत्नी ने उत्तर दिया। "पियोत्र आंद्रीइच, वह तो सँकट में पड़ ही गई थी, लेकिन ख़ुदा के फ़ज़ल से सब ठीक हो गया। यह बदमाश खाने पर बैठा ही था कि माशा बिचारी की मूर्छा भँग हुई और उसने कराहा। मेरी तो भय के मारे साँस अटक गई। उस बदमाश ने सुन लिया। 'यह कौन कराह रहा है? बूढ़ी माँ!' उसने पूछा। मैंने इस डाकू के सामने नीचे झुक कर कहा 'मेरी भतीजी बीमार है, सरकार। वह एक पखवारे से खाट से लगी पड़ी है।' 'तुम्हारी भतीजी जवान है?' 'हाँ सरकार।' 'अच्छा मुझे अपनी भतीजी दिखाओ।' मेरा दिल बैठ गया। लेकिन और चारा भी क्या था। 'जैसी आपकी मर्जी सरकार। बस इतनी बात है कि वह उठ कर आपके सामने तक आने लायक़ नहीं है।'—'कोई फ़िकर नहीं—बूढ़ी मां! मैं ख़ुद जा कर उसको एक नज़र देखूँगा।' और जानते हो यह बदमाश पर्दे के

पीछे गया। सोचते क्या हो ? उसने पर्दा हटा कर गिद्ध की नज़र से उसे घूर कर देखा—पर कुछ नहीं हुआ······खुदा ने हमें बचा लिया। लेकिन क्या इस पर भरोसा करोगे ? मैं और मेरे पति शहीदों की तरह अपनी जान देने को तैयार थे। सौभाग्य से यह प्यारी बच्ची इस बदमाश को नहीं पहचानती। या खुदा क्या क्या देखना बाक़ी है ! बेचारे इवान कुज़ामिश ! कोई ऐसी बात सोच भी सकता था ! और वासीलिसा यगोरोव्ना ! और इवान इग्नातीच ! उसको इन्होंने किस लिये फाँसी पर लटकाया ? तुम कैसे बच गये ? श्वाब्रिन के बारे में क्या सोचते हो ? यह तो जानते ही हो कि उसने कज़ाकों की तरह अपने बाल कटवा लिये हैं, और यहाँ बैठा दावत उड़ा रहा है। बड़ा चालाक आदमी है इस में कोई संदेह नहीं। और जब मैंने अपनी बीमार भतीजी की बात की तो उसकी आँखें मेरे भीतर छुरी की तरह आरपार हो गईं। लेकिन उसने हमारे साथ विश्वासघात नहीं किया। कम से कम इस एक बात के लिये हम उसके कृतज्ञ हैं।"

उसी समय शराब के नशे में चूर मेहमानों की चीखें और पादरी गेरासीम की आवाज़ सुनाई दी। मेहमान और शराब लाने के लिये ज़ोर ज़ोर से माँग कर रहे थे, और पादरी अपनी पुत्री को बुला रहा था। अकुलिना पाम्फ़ीलोव्ना हड़बड़ा गई।

"तुम अपने डेरे पर जाओ, पियोत्र आंद्रीइच।" उसने कहा—"मेरे पास समय नहीं है। यह बदमाश शराब पी रहे हैं। अगर इस समय तुम उनके सामने पड़ गये तो अपना काम तमाम

समझो। अलविदा पियोत्र आंद्रीइच! जो होना है सो होकर रहेगा! मेरे अन्दर अब भी आशा बाक़ी है कि ख़ुदा हमें बेसहारे न छोड़ देगा।"

पादरी की पत्नी मुझे छोड़ कर चली गई। मन में किंचित शान्त और आश्वस्त होकर मैं अपने डेरे की ओर चल पड़ा। जब मैं बाज़ार के अन्दर से गुज़रा तो मुझे कई बश्कीर दिखाई दिये जो फाँसी की टिकटियों को घेर कर खड़े थे। और फाँसी लगे आदमियों के जूते खींच कर उतार रहे थे। अपने क्रोध को दबाना मेरे लिये कठिन हो गया, लेकिन मैं जानता था कि इस मामले में दख़ल देना व्यर्थ होगा। यह लुटेरे सारे क़िले में चक्कर काट रहे थे और अफ़सरों के डेरों को लूट रहे थे। नशे में चूर विद्रोहियों की आवाज़ें हर तरफ़ गूँज रही थीं। मैं अपने डेरे पर पहुँचा। सावालिच मुझे द्वार पर ही मिला।

"ख़ुदा का शुक्र है!" मुझे देख कर वह चिल्लाया। "मुझे तो डर था कि इन बदमाशों ने तुम्हें फिर न पकड़ लिया हो। मेरे प्यारे पियोत्र आंद्रीइच, क्या तुम इस बात पर विश्वास कर सकते हो कि डाकुओं ने हमारा सब कुछ लूट लिया है। कपड़े-लत्ते बर्तन-भांडे, उन्होंने कुछ नहीं छोड़ा। लेकिन ख़ुदा का शुक्र है कि उन्होंने तुम्हें ज़िन्दगी बख़्श दी। तुम ने उनके नेता को पहचाना जनाब?"

"नहीं मैंने नहीं पहिचाना। क्यों कौन है वह?"

"क्या जनाब उस शराबी को भूल गए जो तुमसे ख़रगोश

के चमड़े की जाकेट ले गया था। वह कोट नया जैसा अच्छा था। और इस वहशी ने जबरन पहनने की कोशिश करके उसकी बखिया उधेड़ दी थी !"

मैं आश्चर्यचकित रह गया। सचमुच मेरे उस पथ-दर्शक से पुगाचोफ़ की सूरत बहुत मिलती जुलती थी। मुझे निश्चित रूप से ऐसा लगा कि पुगाचोफ़ और वह एक ही आदमी थे और उसने मुझे क्यों छोड़ दिया ? इसका कारण मेरी समझ में आ गया। परिस्थितियों के इस विचित्र संयोग पर मुझे रह रह कर आश्चर्य होने लगा। एक भिखमंगे को लड़के का कोट देने ने मुझे फाँसी के तख्ते से उतार लिया था और एक शराबी जो एक सराय से दूसरी सराय में भीख माँगता फिरता था वह आज क़िलों को घेरता फिरता था और राज्य की नींव हिला रहा था।

"तुम कुछ खाओगे नहीं ?" सावालिच ने अपनी आदत के अनुसार पूछा, "घर में तो कुछ नहीं है। लेकिन मैं कहीं से ढूंढढांढ कर कुछ ले आऊँ और तुम्हारे लिए पका दूँ।"

अकेला पड़ कर मैं विचारों में डूब गया। मुझे क्या करना चाहिए ? एक अफ़सर को यह शोभा नहीं देता कि वह उस क़िले में रहे जिस पर बदमाश का कब्ज़ा हो गया हो या उसके गिरोह में शामिल हो जाए। मेरा कर्त्तव्य तो यह था कि मैं कहीं ऐसी जगह चला जाऊँ जहाँ इस विकट परिस्थिति में मेरी सेवाएँ मेरे देश के काम आ सकें............लेकिन प्रेम मुझे मेरिया इवानोव्ना के निकट रह कर उसकी रक्षा करने के लिए उकसाता है। यद्यपि

मुझे इस बात में कोई सन्देह न था कि यह परिस्थिति जल्द बदल जाएगी फिर भी जब मैं उस खतरे की बात सोचता जिस में वह पड़ी हुई थी तो ऊपर से नीचे तक काँप जाता।

एक कज़ाक ने आकर मेरा ध्यान भङ्ग कर दिया। वह मुझ से यह कहने के लिये दौड़ा आया था कि "ज़ार महान् आप को बुला रहे हैं!"

"वह कहाँ पर हैं?" मैंने चलने को तैयार होते हुए पूछा।

"कमान्डेन्ट के घर में।" कज़ाक ने उत्तर दिया। "दावत के बाद हमारे मालिक नहाये और अब वह आराम कर रहे हैं। जनाब यह सब देख कर आप इतना तो समझ ही गये होंगे कि वह एक बहुत बड़ी हस्ती हैं। आज दावत में उन्होंने सुअर के दो बच्चों का क़बाब अकेले खाया और वह इतने गर्म पानी से नहाना पसन्द करते हैं कि तारा क्रोचकिन भी न बर्दाश्त कर सके— उन्होंने कोड़ा फेंका बिगवेफ़ को पकड़ा दिया और अपने ऊपर ठंडा पानी डलवाया। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि उनकी हर बात बड़ी है...... कहते हैं कि गुसलखाने में उन्होंने अपने सीने के शाही चिह्न दिखाये। एक तरफ़ एक पैसे के बराबर दो सर वाले गरुड़ का चिह्न था और दूसरी तरफ़ उनकी जैसी आकृति बनी हुई थी।"

कज़ाक की बात का खण्डन करना मैंने आवश्यक न समझा और उसके साथ कमाण्डर के घर गया। रास्ते में मन ही मन पुगाचोफ़ से अपने मिलने की तस्वीर खींचता गया और इस भेंट

का क्या अन्त होगा—इस पर आश्चर्य करता गया। पाठक आसानी से अन्दाजा लगा सकते हैं कि मैं कितना उद्विग्न रहा हूँगा।

जब मैं पहुँचा, उस समय शाम हो चुकी थी। अन्धेरे में फाँसी की टिकटियाँ भयानक लग रही थीं। बिचारी वासीलिसा यगोरोव्ना की लाश अभी तक सीढ़ियों के नीचे पड़ी हुई थी जहाँ दो कज़ाक खड़े पहरा दे रहे थे। जिस कज़ाक के साथ मैं गया था—उसने अन्दर जाकर मेरे आने की सूचना दी और फ़ौरन लौटकर मुझे उस कमरे में ले गया, जिस में पिछली रात मैंने मेरिया इवानोव्ना से इतनी मधुर विदा ली थी।

एक असाधारण दृश्य देखने को मिला। पुगाचोफ़ और एक दर्जन कज़ाक सरदार रंगीन कमीज़ें और टोपियाँ पहने एक मेज़ के चारों ओर बैठे थे जिस पर कपड़ा बिछा था और बोतलें और गिलास बिखरे पड़े थे। शराब के नशे से उनके चेहरों पर उन्माद छाया था और उनकी आँखें चमक रही थीं। उनके बीच श्वाब्रिन और हवलदार—ये दोनों देशद्रोही नहीं थे।

"आह जनाब" मुझे देखते ही पुगाचोफ़ ने कहा। "आइए मेरी मेहमानी क़बूल कीजिए! इस जगह यहाँ तशरीफ़ रखिये! आप से मिलकर बड़ी खुशी हुई।"

लोगों ने इधर उधर सरक कर मेरे लिए जगह बनाई। बिना कुछ बोले ही मैं चुपचाप मेज़ के छोर पर बैठ गया। मेरे पास में बैठे एक दुबले पतले सुन्दर आकृति वाले जवान कज़ाक ने मेरे लिए

वोद्का का गिलास भरा जिसे मैंने छुआ तक नहीं। उन लोगों की ओर मैं कौतूहल पूर्वक देखता रहा। बीच में पुगाचोफ़ बैठा था जो मेज़ के सहारे झुक कर अपनी चौड़ी मुट्ठी से अपनी काली दाढ़ी को उठाये हुए था। उसके चेहरे की सीधी सादी रेखाएँ भली लगती थीं, भयानक नहीं। अक्सर वह एक पचास वर्ष के आदमी की ओर मुख़ातिब होता। उसे कभी काउन्ट कह कर बुलाया और कभी तिमोफ़ीच या फिर चाचा कहकर बुलाता। वह लोग आपस में एक दूसरे से साथियों जैसा व्यवहार कर रहे थे और अपने लीडर को विशेष रूप से आदर-सम्मान देने का विचार किसी में न था। वह सुबह के आक्रमण, विद्रोह की सफलता और आगे की योजनाओं के बारे में बात करते रहे। हर व्यक्ति डींग मार रहा था। अपनी राय देता और खुल कर पुगाचोफ़ से बहस करता। इस अनोखी युद्ध कौंसिल में ओरेन्बर्ग जाने का फैसला हुआ। यह एक साहसपूर्ण क़दम था जिसमें एक खतरनाक सफलता उन्हें मिलनी थी। अगले दिन ही उन्हें धावा बोलना था।

"अच्छा भाइयो!" पुगाचोफ़ ने कहा। "सोने से पहले मेरी पसन्द का गीत हो जाए। चुमाकोफ़ शुरू करो।"

मेरी बग़ल में बैठे व्यक्ति ने ऊँचे स्वर से मल्लाहों का यह सोज़ भरा गीत गाना शुरू किया जिसमें सब शामिल हो गए।

वन देवी किसलय दल से कर मर्मर
मत वीर युवक का ध्यान भङ्ग कर

कल जाना है मुझ को न्याय पीठ के सम्मुख
एकछत्र उस ज़ार निरंकुश न्यायी के सम्मुख
वह ज़ार हमारा, हमारा मालिक तब पूछेगा मुझ से
बता बता ए किसान-सुत कह तू मुझ से
संग गया था किस के करने तू लूटमार
कितने थे तेरे साथी औ' उत्साही सरदार ?
कह दूँगा मैं उस से सच सच हर एक बात
चार हमारे थे संगी अति पुष्ट गात
सच्चा संगी था एक निशा का अन्धकार
और दूसरी साथिन मेरी फ़ौलादी कटार
और तीसरा संगी था मेरा घोड़ा वफ़ादार
चौथा संगी था धन्वा मेरा दृढ़ अपार
मेरे तरकश के तीर मेरे हरकारे थे
तब देगा यों शाबाश मेरा ईसाई ज़ार
जीते रहो नेक बड़े हो तुम किसान-सुत
तुम्हें पता है कैसे लूटो बन उत्तरदायी
दूँगा मैं तुम को पुरस्कार एक शानदार
फैले नभ के नीचे दो ऊँचे खम्भों के ऊपर
रखी हुई शहतीर और फाँसी का फन्दा
दूँगा मैं तुम को यह पुरस्कार

—एक लोक गीत

फाँसी की टिकटियों से सम्बंधित किसानों के इस गीत को

उन लोगों के मुख से सुन कर, जो स्वयं फाँसी के तख्ते पर झूलने वाले थे—उस समय मुझ पर जो प्रभाव पड़ा उसका वर्णन मैं नहीं कर सकता। उनके सदर्प चेहरे, लयपूर्ण स्वर, उनके मुखों की शोकपूर्ण मुद्राऐं—इन सब ने मिल कर शब्दों के अर्थ को साकार कर दिया था। इस ने मुझे इतना रोमांचित किया कि एक भय की भावना जग गई।

मेहमानों ने एक एक गिलास और पी। फिर उठ कर पुगाचोफ़ से विदा लेकर चले गये। उनके साथ मैं जाने ही वाला था कि पुगाचोफ़ ने कहा:—

"चुपचाप बैठो! मैं तुम से बात करना चाहता हूँ।"

हम अकेले रह गये। कुछ क्षणों तक हम दोनों खामोश बैठे रहे। पुगाचोफ़ मेरी ओर ध्यान से देखता रहा। वह कभी कभी अपनी बाईं आँख को ऊपर चढ़ा लेता, जिस से शर्म और मुँह चिढ़ाने का असाधारण मिश्रित भाव टपक रहा था। आखिरकार वह ऐसे निश्छल भाव से अट्टहास कर के हँस पड़ा कि उसकी ओर देख कर अकारण ही मेरी हँसी भी छूट गई।

"अच्छा जनाब!" उसने मुझ से कहा—"जब मेरे लड़कों ने आप के गले में फाँसी का फन्दा डाला तब आप का कलेजा दहल गया था, सच है न? मुझे उम्मीद है कि उस समय आप को यह आसमान भेड़ की खाल से अधिक बड़ा न लगा होगा। ......और निश्चय ही आप भी फाँसी पर लटक गये होते अगर आप का नौकर न आ गया होता। उस बुड्ढे को मैं एक नज़र में

ही पहिचान गया। तो जनाब, क्या आप ने इस बात पर भी कभी ग़ौर किया कि जो आप को रास्ता दिखाता हुआ सराय तक ले गया था वह ख़ुद ज़ार महान् था।" (उसने रहस्यपूर्ण महत्त्व का उपक्रम किया) "आप ने अनेक अपराध किये हैं लेकिन मैंने आप की उदारता के कारण आज आप को छोड़ दिया। जब मैं अपने दुश्मनों से छिपता फिर रहा था उस समय आप ने मेरी मदद की थी। लेकिन अब जो आप को आगे देखने को मिलेगा उसके सामने यह कुछ भी नहीं है। जब मुझे अपना राज मिल जायगा, उस समय आप को मैं जितना पुरस्कृत करूँगा उसके मुक़ाबले में यह क्या है! क्या आप पूरे उत्साह और लगन से मेरी सेवा करने का वायदा करते हैं?"

उस बदमाश का प्रश्न और उसका अहंकार मुझे इतना हास्यास्पद लगा कि मैं हँसे बिना न रह सका।

"आप किस बात पर हँस रहे हैं?" उसने क्रुद्ध होकर पूछा। "क्या तुम को विश्वास नहीं कि मैं ज़ार हूँ। साफ़ साफ़ जवाब दो।"

मैं घबरा गया। मेरा मन इस भिखमंगे को ज़ार मानने के लिये तैयार न था। ऐसा करना अक्षम्य कायरता मालूम पड़ी और उस के मुँह पर ही उस को झूठा और ढोंगी कहने का मतलब था—मौत। और जो बात मैं फाँसी की टिकटियों के नीचे खड़े होकर तमाम लोगों की नज़रों के सामने अपने ग़ुस्से के उबाल में कहने को तैयार था—वह इस समय व्यर्थ का दुस्साहस दिखाई

दिया। मैं हिचकिचाया। पुगाचोफ़ गम्भीरतापूर्वक मेरे उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा। आख़िरकार (और आज तक मैं उस क्षण को बड़े आत्मसंतोष से याद किया करता हूँ) कर्त्तव्य की भावना ने मानवीय कमजोरियों पर विजय पाई। मैंने पुगाचोफ़ से कहा—

"सुनिए, मैं आपको सचसच कह देना चाहता हूँ। सोचिए तो मैं कैसे आप को अपना ज़ार क़बूल कर लूँ। आप ख़ुद एक समझदार आदमी हैं। अगर मैं बहाना करके कह भी दूँ तो वह आप की नज़र से छिप न सकेगा।"

"तो तुम क्या सोचते हो कि मैं कौन हूँ?"

"यह तो ख़ुदा ही जानता है। लेकिन आप चाहे जो भी हों बस इतना कहना चाहता हूँ कि आप एक ख़तरनाक खेल खेल रहे हैं।"

पुगाचोफ़ ने मुझ पर एक तेज़ नज़र फेंकी।

"तो तुम को इस बात पर विश्वास नहीं कि मैं ज़ार पीटर तृतीय हूँ?" उसने कहा, "अच्छी बात, न सही। लेकिन हिम्मत करने वाले सफल होते हैं। कम से कम यह बात तो सत्य है। पुराने ज़माने में ग्रीश्का ओत्रिपीफ़[1] ने राज नहीं किया था। मुझे तुम जो मन में आए समझते रहो! लेकिन मेरे पीछे चलो! इस में तुम्हारा क्या बिगड़ता है? जैसा यह मालिक वैसा और मालिक। ईमानदारी से और वफ़ादारी से मेरी सेवा करो। और मैं

[1] दिमेत्रियस प्रथम के नाम से एक झूठे दावेदार ने रूस पर १६०५-६ में राज किया था।

तुम्हें सेनापति का पद देकर राजकुमार बना दूँगा! बोलो क्या कहते हो ?"

"नहीं !" मैंने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया। "मैं एक कुलीन घर में जन्मा हूँ। मैंने साम्राज्ञी के प्रति वफ़ादार रहने की शपथ ली है। मैं तुम्हारी सेवा नहीं कर सकता। अगर तुम सचमुच मेरा भला चाहते हो तो मुझे ओरेन्बर्ग जाने दो !"

पुगाचोफ़ सोच में पड़ गया।

"और अगर मैं तुम्हें जाने दूँ तो क्या यह वायदा करोगे कि कम से कम मेरे विरुद्ध नहीं लड़ोगे ?" उससे पूछा

"यह वायदा मैं कैसे कर सकता हूँ? मैंने उत्तर दिया, तुम ख़ुद जानते हो कि मैं अपने मन की करने को आज़ाद नहीं। वह अगर तुम्हारे खिलाफ़ लड़ने को भेजेंगे तो मैं जाऊँगा। मेरे सामने इसके अलावा और कोई चारा नहीं रहेगा। तुम ख़ुद इस समय एक नेता हो। तुम्हारे नीचे रहकर जो लोग काम कर रहे हैं तुम उनसे आज्ञापालन की अपेक्षा रखते हो। जब मेरी सेवा की जरूरत होगी उस समय अगर मैं लड़ने से इन्कार कर दूँ तो उसको तुम क्या कहोगे ? इस समय मेरी जिन्दगी तुम्हारे हाथ में है। अगर तुम मुझे जाने दोगे तो मैं तुम्हें धन्यवाद दूँगा। अगर तुम मुझे फाँसी पर चढ़ा दोगे तो ख़ुदा तुम्हारा न्याय करेगा। लेकिन मैंने तुम से सच बात कह दी है।"

मेरी ईमानदारी का पुगाचोफ़ पर प्रभाव पड़ा।

"अच्छा यही सही !" उसने मेरे कन्धे पर थपकी देते हुए

कहा, "आधा काम करने की मेरी आदत नहीं है। तुम जहाँ चाहो वहाँ जाओ और जो ठीक समझो वह करो! कल सुबह मुझ से विदा लेने के लिए आना और इस समय जाकर सो रहो। मुझे भी नींद आ रही है।"

पुगाचोफ़ के यहाँ से निकल कर मैं सड़क पर आया। रात ख़ामोश थी और कोहरा छाया था। चाँद और तारे की तेज़ चमकती हुई रोशनी चौक और फाँसी की टिकटियों पर पड़ रही थी। क़िले में अंधेरा और ख़ामोशी छाई थी। सिर्फ सराय की खिड़कियों से रोशनी और देर तक शराब पीने वालों की आवाज़ें आ रही थीं। मैंने पादरी के घर की ओर नज़र उठा कर देखा। दरवाज़े और खिड़कियाँ बन्द थे। वहाँ भी निस्तब्धता छाई थी। मैं अपने डेरे पर पहुँचा और वहाँ मैंने सावालिच को मेरी अनुपस्थिति के कारण दुखी बैठा देखा मेरी आज़ादी पाने की ख़बर ने उस को इतना खुश कर दिया कि मैं कह नहीं सकता।

"ख़ुदा का शुक्र!" अपने ऊपर क्रास का चिन्ह बनाते हुए उसने कहा। "सुबह झुटपुटा होते ही हम क़िला छोड़ कर सीधे चल देंगे। मैंने तुम्हारे लिए कुछ खाना पका रखा है। कुछ खा कर आराम से सुबह तक सोओ!"

उसकी सलाह मान कर खूब स्वाद ले ले कर मैंने खाना खाया। और मन और शरीर से शिथिल दशा में नंगे फर्श पर ही सो गया।

नौ

●

# विदाई

मधुर था कितना ओ, प्रियतम !
तुम्हारा मिलन और मधु-प्यार
बिछुड़ना तुम से पर दुख पूर्ण
छुट गया तन से जैसे प्राण ।

—खेरस्कोफ

सवेरे सवेरे डंके की आवाज़ ने मुझे जगा दिया। मैं चौक की तरफ़ गया। पुगाचोफ के आदमी इससे पहले ही वहाँ पहुँच कर फाँसी की टिकटियों के निकट, जिन पर कल की लाशें अब तक टंगी हुई थीं अपनी पंक्तियाँ बना रहे थे। कज़ाक घोड़ों पर थे और सिपाही अस्त्रशस्त्र से लैस खड़े थे। झण्डे फहरा रहे थे। गाड़ियों पर अनेक तोपें रक्खी हुई थीं। उनमें हमारी तोप भी थी। गाँव के तमाम रहने वाले भी वहाँ मौजूद थे और इस झूठे दावेदार के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। कमाण्डर के घर की सीढ़ियों के पास एक सुन्दर सफ़ेद घोड़े को लगाम से

थामे एक कज़ाक खड़ा था। निगाह दौड़ा कर मैंने वासीलिसा यगोरोवना की लाश को खोजना चाहा। वह एक किनारे की तरफ़ सरका दी गई थी और उस पर चटाई का एक टुकड़ा ढक दिया गया था। आख़िरकार पुगाचोफ़ दरवाज़े पर निकल आया। सब ने अपनी टोपियाँ उतार लीं। पुगाचोफ़ ने सीढ़ियों पर खड़े हो कर सब का अभिनन्दन किया। एक सरदार ने पैसों का एक थैला उसके हाथ में दे दिया और वह उसमें से मुट्ठियाँ भर भर के पैसे लुटाने लगा। शोर-गुल मचाती हुई भीड़ उनको उठाने के लिए झपट पड़ी और इस धक्का-मुक्की में कुछ लोगों को चोट भी आ गई। पुगाचोफ़ अपने मुखिया सरदारों से घिरा खड़ा था। श्वाब्रिन भी उनमें था। एक दूसरे से हमारी आँखें मिलीं। उसने मेरी आँखों से घृणा का भाव ताड़ लिया और हार्दिक कटुता और उपेक्षा दिखाते हुए दूसरी तरफ़ मुँह मोड़ लिया। भीड़ में से मुझे पहचान कर पुगाचोफ़ ने सर हिला कर इशारे से बुलाया।

"सुनो!" उसने मुझ से कहा। "तुम फ़ौरन ओरेन्बर्ग जाओ और मेरी ओर से वहाँ के गवर्नर और तमाम जनरलों से कहो कि एक सप्ताह के अन्दर अन्दर मेरे वहाँ पहुँचने की आशा रखें। उनको यह सलाह देना कि वे मुझ से बच्चों जैसे निश्छल प्यार और वफ़ादारी के साथ मिलें नहीं तो हर एक को कुत्ते की मौत मिलेगी। जाइए आपकी यात्रा सुखद हो!"

फिर उसने लोगों की ओर मुख़ातिब होकर श्वाब्रिन की तरफ इशारा करते हुए कहा, "बच्चो, देखो यह तुम्हारे नए कमाण्डर

हैं। इनके हर आदेश का पालन करो। और यह तुम्हारी और क़िले की ओर से मेरे प्रति उत्तरदायी होंगे।"

ये शब्द सुनकर मैं दंग रह गया। श्वाब्रिन क़िले का कमाण्डर होगा और मेरिया इवानोव्ना उसके चंगुल में। मेरे ख़ुदा! उस का क्या होगा? पुगाचोफ़ सीढ़ियों से उतर कर नीचे आया। उसका घोड़ा उसके पास लाया गया। तेज़ी से छलाँग लगा कर वह उसकी पीठ पर बैठ गया। इस बार उसने कज़ाकों की सहायता की प्रतीक्षा नहीं की। उसी समय भीड़ में से निकल कर सावालिच को मैंने पुगाचोफ़ के हाथ में एक कागज़ पकड़ाते देखा। इसका क्या नतीजा होगा? इसकी मैं उस समय कल्पना भी नहीं कर पाया।

"यह क्या है?" पुगाचोफ़ ने रोब से पूछा।

"पढ़ कर देख लीजिए!" सावालिच ने उत्तर दिया।

कागज़ हाथ में लेकर पुगाचोफ़ कुछ देर तक अर्थ पूर्ण मुद्रा में उसकी ओर देखता रहा।

"तुम इतने भद्दे अक्षर क्यों लिखते हो?" उसने अन्त में कहा। "मेरी तेज़ निगाह भी इसका सिर-पैर नहीं निकाल पाती। मेरा प्रधान सैक्रेटरी कहाँ गया?"

कारपोरल की वर्दी पहने एक नौजवान तुरन्त दौड़ कर पुगाचोफ़ के पास पहुँचा।

"ज़ोर से पढ़ कर सुनाओ!" उस झूठे दावेदार ने उसको कागज़ पकड़ाते हुए कहा। सावालिच ने पुगाचोफ़ को क्या लिखा होगा, यह जानने के लिए मैं बेहद उत्सुक था। चीफ़ सैक्रेटरी ने

अक्षर प्रति अक्षर ज़ोर से पढ़ कर सुनाना शुरू किया।

"दो ड्रेसिंग गाउन—एक सूती और एक धारीदार रेशम का। कीमत छः रूबल।"

"इसके क्या माने हैं?" पुगाचोफ़ ने क्रोध से पूछा।

"उससे कहिए कि आगे पढ़ता जाए!" सावालिच ने शान्त-भाव से उत्तर दिया।

चीफ़ सैक्रेटरी आगे पढ़ता गया :

"बहुत अच्छे हरे रंग के कपड़े का वर्दी का कोट—क़ीमत सात रूबल। सफेद कपड़े की पतलून—क़ीमत पाँच रूबल। लीनन की चुन्नटदार कफों वाली बारह कमीज़ें—क़ीमत दस रूबल। चाय के बर्तनों का एक सेट—क़ीमत ढाई रूबल......"

"क्या बेहूदा बकवास है।" पुगाचोफ़ ने उसे टोक कर कहा। "चाय का सेट, चुन्नटदार कफ़ें और पतलूनें—मुझे इन से क्या मतलब?"

सावालिच ने गला साफ़ करके बताना शुरू किया :

"जनाब, देखिए यह मेरे मालिक की उन चीजों की सूची है जिन्हें बदमाश लूट......।"

"कौन से बदमाश?" पुगाचोफ़ ने दर्प से गरज कर पूछा।

"माफ़ कीजिए जनाब! यह शब्द यों ही ज़ुबान से निकल गया।" सावालिच ने उत्तर दिया। "ये लोग बदमाश नहीं हैं। मेरा मतलब आपके आदमियों से है। लेकिन उन्होंने तमाम चीज़ों को उलट पुलट कर देखा और उन में से यह चीज़ें उठा लाए।

नाराज़ न हों। एक घोड़े के चार पाँव होते हैं, फिर भी वह ठोकर खा जाता है। बहरहाल उनसे कहिए कि वह उसको आखिर तक पढ़ कर सुना दें।"

"आगे पढ़ो!" पुगाचोफ़ ने कहा। सैक्रेटरी ने आगे पढ़ कर सुनाया :

"एक सूती चद्दर। एक रेशमी मच्छरदानी—क़ीमत चार रूबल। एक लाल कपड़े का कोट जिसमें लोमड़ी की पोस्तीन का अस्तर लगा था – क़ीमत चालीस रूबल। इसके अतिरिक्त ख़रगोश के चमड़े का एक जैकेट, जो जनाब आपको सराय में दिया था—क़ीमत पन्द्रह रूबल......"

"और भी कुछ?" पुगाचोफ़ जलती हुई आँखों से चीख़ उठा।

सावालिच का क्या हश्र होगा यह सोच कर मैं घबड़ा गया। वह अभी कुछ और सफ़ाई पेश करने वाला था कि पुगाचोफ़ ने उसे रोक कर कहा :

"ऐसी तुच्छ बातों के लिए तुम मुझे तंग करने की जुर्रत करते हो?" सेक्रेटरी के हाथ से कागज़ छीन कर सावालिच के मुँह पर फेंकते हुए वह चीख़ा। "अहमक़ बुड्ढा। लूट लिए गए, यह भी परेशान होने की बात है! अरे बुड्ढे तुझे तो सारी ज़िन्दगी मेरे और मेरे आदमियों के लिये दुवाएँ माँगनी चाहिए। अपने भाग्य को सराहो कि तुम और तुम्हारा मालिक दूसरे विद्रोहियों के साथ लटक नहीं रहे हो. ...ख़रगोश की खाल का जाकेट, क्यों?

देता हूँ तुम्हें ख़रगोश की खाल का जाकेट। क्या हुआ? अभी तुम्हारी जिन्दा खाल खिचवा कर तुम्हारी खाल का जाकेट बनवाता हूँ।"

"यह आप की मर्जी!" सावालिच ने उत्तर दिया। "लेकिन मैं एक गुलाम हूँ और मुझे अपने मालिक के सामान के लिए उत्तर-दायी होना पड़ता है।"

पुगाचोफ़ निश्चय ही उस समय एक उदार मनः स्थिति में था। बिना कुछ कहे वह दूसरी ओर को मुँह फेर कर आगे बढ़ गया। श्वाब्रिन और दूसरे कज़ाक सरदार उसके पीछे चल दिए। यह गिरोह तरतीब से मार्च करता हुआ क़िले से बाहर निकल गया। गाँव के लोग कुछ दूर तक पुगाचोफ़ के पीछे चलते गए। चौक में सिर्फ़ मैं और सावालिच रह गए। वह हाथ में कागज़ थामे उसे हार्दिक खेद के साथ जाँच रहा था।

उसने यह देखकर कि पुगाचोफ़ से मेरी पट गई थी इसका लाभ उठाना चाहा था। लेकिन उसकी सदिच्छाएं सफल न हुईं। मैंने उसे इस ग़लत उत्साह के लिए डाँटना चाहा, लेकिन मेरी हँसी रोके न रुकी।

"जनाब, हँसना तो बहुत आसान है, लेकिन जब हमें हर चीज़ नए सिरे से ख़रीदनी पड़ेगी उस समय यह हँसी काम न आएगी।"

मेरिया इवानोवना को देखने के लिये मैं लपक कर पादरी के यहाँ गया। पादरी की पत्नी ने मुझे बुरी ख़बर सुनाई। रातोंरात

बुखार चढ़ आया था। उसे सरसाम हो गया था और वह अचेत पड़ी थी। अकुलिना पाम्फीलोवना मुझे अपने कमरे में ले गई। आहिस्ते चलकर मैं उसके पलँग तक पहुँचा। उसके मुख की आकृति बदल गई थी। उसने मुझे नहीं पहचाना। बड़ी देर तक उसके पलँग के किनारे खड़ा रहा। पादरी गेरासीम और उनकी दयालु पत्नी शायद मुझे धीरज बँधाने के लिए कुछ कहते जा रहे थे लेकिन मैंने कुछ न सुना। निराशाजनक विचार रह रह कर मेरे हृदय को छेद रहे थे। प्रतिहिंसा की आग में जलते विद्रोहियों के बीच इस अपनी निरीह और अनाथ प्रेयसी की दशा ने और खुद अपनी असहाय अवस्था ने मुझे आतंकित कर दिया। श्वाब्रिन का विचार सब से अधिक मुझे यन्त्रणा पहुँचा रहा था। उस झूठे दावेदार ने इसके हाथ में शक्ति देकर क़िले का शासन सौंप दिया था, जहाँ यह दुखिया लड़की बीमार पड़ी थी। जिसे श्वाब्रिन नफ़रत करता था। उसका वह सब कुछ बिगाड़ सकता था। मैं क्या करूँ? इसकी कैसे सहायता करूँ? बदमाश के हाथ से कैसे उसकी रक्षा करूँ? मेरे सामने सिर्फ़ एक चारा बाक़ी था। मैंने उसी क्षण ओरेन्बर्ग जाने का और वहाँ से बेलोगोर्स्की के क़िले के लिये कुमक की मदद लाने का फ़ौरन फ़ैसला किया। मैंने अकुलिना पाम्फ़ीलोव्ना और पादरी से मेरिया इवानोव्ना की, जिसे मैं अब अपनी पत्नी की तरह समझने लगा था, की पूरी देख-भाल रखने का आग्रह करते हुए विदा ली। मैंने उस ग़रीब लड़की का हाथ उठा कर चूमा और उसे अपने आँसुओं से गीला कर दिया।

"अलविदा ! पियोत्र आंद्रीइच, मुझे उम्मीद है कि अच्छा समय आने पर हम फिर मिलेंगे। हमें भूल मत जाना और अक्सर लिखते रहना। बेचारी मेरिया इवानोव्ना को सुख और सहारा देने वाला अब तुम्हारे सिवा कोई न रहा।"

चौक में आकर मैं एक क्षण के लिए फाँसी की टिकटियों के सामने रुका और मैंने उनके आगे अपना सर झुकाया। फिर सावालिच के साथ मैं क़िला छोड़ कर ओरेन्बर्ग की सड़क पर पड़ गया।

अपने विचारों में ही डूबा मैं चलता ही चला जा रहा था कि अचानक पीछे से घोड़े की टाप सुनाई दी। मैंने मुड़कर देखा कि क़िले से एक कज़ाक घोड़ा दौड़ाए चला आ रहा है। वह एक बश्कीर घोड़े की लगाम पकड़े चला आ रहा था और मुझे दूर से ही रुकने का इशारा कर रहा था। मैं रुक गया और कुछ ही देर में मैंने अपने हवलदार को पहचाना। मेरे पास पहुँचकर वह घोड़े से उतरा और दूसरे घोड़े की लगाम मुझे थमाते हुए बोला—"जनाब, हमारे मालिक ने यह घोड़ा और पोस्तीन का कोट बतौर भेंट के रूप में भेजा है।" भेड़ की पोस्तीन का एक कोट जीन से बँधा हुआ था। "और उन्होंने," मेक्सीमिच ने हिचकिचाते हुए कहा, "नग़द पचास कोपक भी भेजे थे...... लेकिन मैंने उन्हें रास्ते में ही गिरा दिया। मेहरबानी करके मुझे माफ़ कीजिए।"

सावालिच ने उसे कनखियों से देखा और बड़बड़ाने लगा। "रास्ते में गिरा आया ! और यह तुम्हारी बग़ल की जेब में क्या

खनक रहा है ? तुमने ईमान भी खो दिया !"

मेरी बग़ल की जेब में क्या खनक रहा है ?"—हवलदार ने तनिक भी लज्जित हुए बिना उत्तर दिया—"अरे, भले आदमी कुछ तो रहम खाओ। वह मेरी लगाम है, पचास कोपक नहीं।"

"अरे जाने भी दो !" इस बहस को बीच में ही रोकते हुए मैंने कहा। "जिसने तुम्हें भेजा है उसे मेरी ओर से धन्यवाद देना और लौटते समय रास्ते में से गिराए हुए पैसे तलाश करने की कोशिश करना और उनकी वोद्का पीना।"

"आप का बहुत शुक्रिया जनाब !" उसने घोड़े को मोड़ते हुए कहा। "ज़िन्दगी भर मैं आप के लिए दुवा माँग रहूँगा !"

इन शब्दों के साथ उसने एक हाथ से अपने कोट का सीना पकड़ते हुए घोड़े को सरपट छोड़ दिया और एक मिनट में ही आँख से ओझल हो गया। मैंने भेड़ की पोस्तीन का कोट चढ़ा लिया और घोड़े पर अपने पीछे सावालिच को भी बैठा कर चल दिया।

"देखते हैं जनाब !" बूढ़े ने कहा। "बेकार ही मैंने उन लुटेरों को अर्ज़ी पेश नहीं की। उस डाकू की आत्मा भी उसे कचोटने लगी। यह सच है कि यह लम्बी टाँग वाला बश्कीर खच्चर और भेड़ की पोस्तीन के कोट की कीमत उन चीजों की क़ीमत से आधी भी नहीं है, जो इन बदमाशों ने चुरा ली हैं और जो आप ने उसको दान दे दी। लेकिन यह काम आएगी। कभी कभी खूँखार कुत्ते से भी काम लायक ऊन निकल आती है "

दस

●

# नगर का घेरा

पहाड़ियों और चरागाहों में
उसने अपना खेमा गाड़ दिया।
और गिद्ध की तरह उसने नगर की ओर ताक कर देखा
खेमे के पीछे आग छिपाने के लिये
उसने एक टीला बनवाया
जिसे रात को वह क़िले की दीवार पर जलाता

—खेरस्कोफ़

ओरेन्बर्ग के निकट पहुँचने पर हमें अपराधियों का एक समूह मिला। उनके सर मुंडे हुए थे और उनके चेहरे लोहे से दाग़ कर विकृत कर दिये गये थे। ये लोग गारद के सैनिकों की देख-रेख में क़िलेबन्दी के काम में लगे थे। कुछ लोग खाई में पड़े कूड़े-करकट को गाड़ियों में भरकर ले जा रहे थे। कुछ उसे खोद कर निकाल रहे थे। नगर की चारदीवारी पर राजगीर ईंटें

जमा कर रहे थे और दीवार की मरम्मत कर रहे थे। नगर के प्रवेश-द्वार पर सन्तरियों ने रोक कर हम से पासपोर्ट माँगे। हवलदार ने जैसे ही सुना कि मैं बेलोगोर्स्की के क़िले से आया हूँ, वह मुझे सीधे जनरल के मकान पर ले गया।

जनरल मुझे अपने बगीचे में मिले। वह उस समय सेब के पेड़ों का निरीक्षण कर रहे थे जिन्हें पतझर की वायु ने नँगा कर दिया था, और एक पुराने माली की सहायता से वह उन पेड़ों को गरम पुआल की तहों में लपेट कर बंधवा रहे थे। उनकी मुखमुद्रा से गम्भीर शान्ति, स्वास्थ्य और मृदुस्वभाव का आभास मिलता था। मुझे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुये और मेरी आँखों देखी भयँकर घटनाओं के बारे में पूछ-ताछ करने लगे। मैंने उन्हें सब कुछ बता दिया। पेड़ों की टहनियाँ छाँटते हुए वह एकाग्र मन से मेरी बातें सुनते रहे।

"बेचारा मिरोनोफ़!" इस दुःखपूर्ण कथा को सुनकर उन्होंने कहा "मुझे उसके लिए हार्दिक दुःख है। वह एक नेक अफ़सर था और मिरोनोफ़ की पत्नी एक शानदार औरत थी। वह गुच्छी का कितना अच्छा मुरब्बा बनाती थीं! और हाँ, कप्तान की बेटी माशा का क्या हुआ?"

मैंने उत्तर दिया कि पादरी की पत्नी के साथ वह क़िले में ही है।

"अय अय अय!" जनरल ने कहा, "यह बुरा हुआ! बहुत बुरा हुआ! उन बदमाशों के आचरण पर भरोसा नहीं किया जा

सकता । उस बिचारी लड़की का क्या होगा ”

मैंने उत्तर में कहा कि बेलोगोर्स्की का क़िला बहुत दूर नहीं है और शायद माननीय सेनापति उसके ग़रीब निवासियों को मुक्त करने के लिये फ़ौजें भेजने में विलम्ब न करेंगे। जनरल ने संदिग्ध भाव से सर हिला कर कहा “देखा जायगा, देखा जायगा। इस बारे में बात करने का अभी बहुत वक्त है। अभी आप आएँ और मेरे साथ एक प्याला चाए पिएँ। मैं आज युद्ध-समिति की बैठक बुला रहा हूँ। उस समय तुम उस बदमाश पुगाचोफ़ और उसकी सेना के बारे में सही सही सूचनाएँ हमें देना। और इस बीच आप जाकर आराम कीजिए!”

मैं वहाँ से निकल कर अपने डेरे पर आया जो मुझे रहने को दिया गया था। वहाँ सावालिच पहले से ही मौजूद था और चीजें अपने स्थान पर सजा रहा था। वहाँ बैठकर मैं नियत समय का बेसब्री से इन्तज़ार करने लगा। पाठक यह कल्पना कर सकते हैं कि उस युद्ध-समिति की बैठक में, जो मेरे भविष्य के लिए इतनी महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुई, मेरा न पहुँचना असम्भव था। नियत समय पर मैं जनरल के यहाँ पहुँच गया।

वहाँ मुझे नगर का एक अफ़सर मिला। अगर भूलता नहीं हूँ तो वह चुंगी का डाइरेक्टर था। एक मोटा ताज़ा, गुलाबी गालों वाला, किमख़ाब का कोट पहने बूढ़ा आदमी। इवान कुज़ामिश पर क्या क्या बीती? इसके बारे में वह मुझ से पूछ-ताछ करता रहा और वह नए प्रश्नों और नीति-वाक्यों से अक्सर

बात चीत में रह रह कर दखल देता रहा, जिससे यदि युद्ध कला में उसकी योग्यता सिद्ध नहीं होती थी तो कम से कम उसकी स्वाभाविक वाक्पटुता और बुद्धिमानी का आभास अवश्य मिल जाता था। इस बीच और मेहमान भी आ गये। जब सब लोग बैठ गये और चाय के प्याले उनके सामने रख दिये गये तब जनरल ने बड़ी सफ़ाई और विस्तार से एकत्र होने का कारण समझाया।

"तो अब, दोस्तो हमें इस बात का निर्णय करना चाहिये कि विद्रोहियों के खिलाफ़ हम क्या कुछ करें। हम उन पर आक्रमण करें या अपना बचाव करने की सोचें? दोनों तरीक़े ऐसे हैं जिन को बरतने में लाभ भी है और हानि भी है। आक्रमण करने से यह आशा की जा सकती है कि हम दुश्मन को कम से कम समय में नष्ट कर देंगे। अपना बचाव करने तक ही सीमित रहने का मार्ग अधिक निरापद और भरोसे का है......इसलिये आइए इस प्रश्न पर हम नियम के अनुसार आप सब के वोट ले लें! कहने का मतलब यह कि सब से नीची श्रेणी के आदमी से शुरू करें। ध्वजवाहक!" मेरी ओर संकेत करते हुए जनरल ने कहा, "अपनी राय दो।"

मैं उठ खड़ा हुआ और मैंने पुगाचोफ़ और उसके गिरोह के बारे में पहले कुछ शब्द कहे। मैंने बिल्कुल स्पष्ट शब्दों में स्थिति बताते हुए कहा कि उस झूठे दावेदार के पास नियमित सेना का मुक़ाबिला करने के कुछ भी साधन नहीं हैं।

वहाँ बैठे अफ़सरों ने मेरी राय को उपेक्षा पूर्वक सुना। उन को मेरी राय में जवानी के अवज्ञापूर्ण उद्धत-भाव की झलक मिली। आपस में फुसफुसाहट शुरू हो गई और दबी ज़ुबान में किसी को कहते हुए मैंने सुना 'अनाड़ी'।

जनरल ने मेरी ओर मुड़कर मुस्कराते हुए कहा, "ध्वजवाहक युद्ध-समिति की पहली राय तो आक्रमण के पक्ष में है। ऐसा होना भी चाहिए था। अब हम मतगणना करेंगे। नागरिक-सदस्य महोदय, अब अपनी राय दीजिये।"

किमख़ाब का कोट पहने छोटे क़द वाले बूढ़े आदमी ने रम (एक शराब) घोल कर बनाई हुई चाय का तीसरा प्याला झटपट ख़तम करते हुए जनरल को उत्तर दिया, "माननीय महोदय, मेरा विचार है कि हमें न आक्रमण करना चाहिये न बचाव ही।"

"यह कैसे संभव है, जनाब।" जनरल ने आश्चर्य से प्रत्युत्तर देते हुए कहा, और कोई तीसरी कार्य नीति संभव ही नहीं हो सकती। आदमी या तो आक्रमण कर सकता है या अपना बचाव......"

"माननीय महोदय, रिश्वत खिलाने का रास्ता अपनाइए!"

"आह, आह, आह! आप का सुझाव बिल्कुल युक्तिसँगत है। फ़ौजी नियमों में रिश्वत देना स्वीकृत है और हम आप की सलाह पर चलेंगे। हम सत्तर रूबल दे सकते हैं......या शायद एक सौ रूबल भी। उस बदमाश के सर के लिए......यह रुपया गुप्त रक़म में से दिया जायगा।"

"तब तो—" चुँगी के प्रधान अफ़सर ने बात काट कर कहा, "अगर वह चोर हाथ पाँव बांध कर अपने नेता को न ले आएँ तो मुझे नागरिक सदस्य नहीं किरगीज़ भेड़ कहना।"

"इसके बारे में हम फिर सोचेंगे और बात करेंगे।" जनरल ने उत्तर दिया, "लेकिन चाहे जो हो हमें फौजी क़दम उठाने चाहियें ! दोस्तो, नियमानुसार अपने अपने वोट दीजिए।"

सब लगों की रायें मेरे विरुद्ध थीं। सभी अफ़सरों ने यही कुछ कहा कि सैनिकों पर भरोसा नहीं किया जा सकता। युद्ध में क़िस्मत धोखा दे सकती है। हमें आगे क़दम फूँक फूँक कर रखना चाहिए। सब लोगों का यही ख्याल था कि खुले मैदान में उतरने की अपेक्षा तो तोपों से रक्षित पत्थर की मज़बूत चारदीवारी के अन्दर बैठे रहने में ही ज्यादा बुद्धिमानी है। सब लोगों की राय सुनने के बाद जनरल ने अपने पाइप की राख गिराते हुए कहा—

"दोस्तो, जहाँ तक मेरा संबंध है मैं ध्वजवाहक की राय से पूरी तरह सहमत हूँ। क्योंकि यह राय उच्च कोटि की युद्धिनीति के नियमों के अनुसार है। युद्ध-नीति के अनुसार अपने बचाव में लगे रहने की अपेक्षा आक्रमण करना अधिक उपयुक्त है।"

रुक कर वह फिर अपने पाइप में तम्बाकू भरने लगे। मेरे अहँकार को सन्तोष मिला। मैंने गर्व पूर्वक अफ़सरों की ओर देखा, जो चिन्ता और आशँका से आपस में फुस फुस बातें कर रहे थे।

"लेकिन दोस्तो, जनरल ने मुँह से तम्बाकू का धुआँ छोड़ने के साथ एक गहरी आह भरते हुए कहा, "ऐसे समय, जब कि उन प्रान्तों का जीवन सँकट में हो, जिनकी रक्षा का भार हमारी महान् साम्राज्ञी ने मेरे कन्धों पर रखा है, मैं अपने ऊपर इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी लेने का साहस नहीं कर सकता। इसलिए मैं बहुमत को स्वीकार करता हूँ, जिसका यह फैसला है कि नगर की चारदीवारी के अन्दर बैठकर दुश्मन के हमले का इन्तजार करना, तोपों की गोलाबारी से दुश्मन के हमलों को रोकना और यदि सम्भव हो तो छुट पुट हमले करना ही अधिक सुरक्षित और विवेकपूर्ण क़दम है।"

अफ़सरों ने मेरी ओर व्यँग्यपूर्वक देखा। युद्ध-समिति की बैठक समाप्त हो गई। इस सम्मानित सैनिक की कमजोरी पर मुझे खेद हुआ जिसने अपने विश्वास के विरुद्ध अज्ञान और अनुभव-हीन लोगों की राय के अनुसार चलने का निश्चय किया था।

युद्ध-समिति की इस उल्लेखनीय बैठक के कई दिन बाद हमें पता चला कि अपने वायदे के अनुसार पुगाचोफ़ ओरेन्बर्ग की ओर बढ़ा चला आ रहा है। टाउन-हाल की छत पर खड़े होकर मैंने विद्रोहियों की सेना का निरीक्षण किया। मुझे लगा मानों पिछले आक्रमण के समय से, जिसको मैंने आँखों से देखा था, उनकी संख्या दस गुनी हो गई है। उनके पास अब तोपखाना था, जिसे पुगाचोफ़ अपने जीते हुए क़िलों से उठा लाया था। युद्ध-समिति के फ़ैसले की याद करके मैंने पहले से ही अनुमान कर

लिया था कि नगर की चारदीवारी के अन्दर हमें बहुत दिनों तक बन्द रहना पड़ेगा और इस विचार से व्यथित होकर मैं रो पड़ा।

मैं ओरेन्बर्ग के घेरे का वर्णन नहीं करूँगा। वह इतिहास की चीज़ है और एक घरेलू संस्मरण का विषय नहीं हो सकता। मैं केवल इतना ही कहूँगा कि स्थानीय अधिकारियों की लापरवाही के कारण क़िले के निवासियों के लिये यह घेरा भयँकर नाश का कारण बन गया। उन्हें भुखमरी और दूसरी अनेक विपत्तियों का सामना करना पड़ा। आप कल्पना कर सकते हैं कि उन दिनों ओरेन्बर्ग में जीना दूभर हो गया होगा। सभी लोग आशा छोड़कर अपने भाग्य के निर्णय की प्रतीक्षा कर रहे थे। सभी लोग चीजों की आसमान को छूने वाली क़ीमतों के शिकार हो गए थे। नगर के रहने वाले अपने घर के बाड़ों में तोप के गोलों को गिरते हुए देखने के आदी हो चुके थे! यहाँ तक कि पुगाचोफ़ के हमले भी अब आम लोगों में कोई उत्तेजना नहीं पैदा करते थे। मैं बिल्कुल ऊब गया था। समय गुज़रा जाता था। बेलोगोर्स्की के क़िले से मुझे कोई पत्र न मिला था। सारे मार्ग कटे हुए थे। मेरिया इवानोव्ना का बिछोह असह्य होता जा रहा था। उसके भाग्य की अनिश्चितता मेरे हृदय को छेदे डाल रही थी। छुट-पुट लड़ाइयाँ ही मेरा मन बाँटने का एकमात्र साधन थीं। पुगाचोफ़ की कृपा से मेरे पास एक शानदार घोड़ा था जिसको मैं अपने अल्प भत्ते में से हिस्सा निकाल कर खिलाता था और नित्य उसपर चढ़कर पुगाचोफ़ के लोगों पर गोलियाँ बरसाता था। यों

तो इन छुटपुट लड़ाइयों में उन बदमाशों का ही पल्ला भारी रहता था क्योंकि उन्हें पेट भर खाने को और खूब ढेर शराब पीने को मिलती थी और उनके घोड़े अच्छे और मजबूत थे। नगर के भूखे घोड़े उनका मुक़ाबला न कर पाते। कभी कभी हमारी भूखी पैदल सेना भी लड़ाई के मैदान में जाती लेकिन बरफ़ की मोटी तहें उसे दुश्मन की चतुर्दिक फैली घुड़सवार सेना के विरुद्ध सफलतापूर्वक लड़ने से रोक देती। चारदीवारी के ऊपर से तोपें व्यर्थ ही गरजती रहतीं और मैदान में ले जाने पर तोपें बरफ़ में गड़ जातीं और थके हुए घोड़े उन्हें टस से मस न कर पाते। हमारे फ़ौजी हमले इस प्रकार के थे! और इसी को ओरेन्बर्ग के अफ़सर सावधान रहकर बुद्धिमानी से लड़ना कहते थे!

एक दिन जब हम दुश्मन की एक बड़ी टुकड़ी को तितर बितर करके भगाने में सफल हुए तो उस समय मैंने लपक कर एक कज़ाक को पकड़ लिया, जो औरों से पीछे रह गया था। मैं अपनी तुर्की तलवार का वार उस पर करने ही वाला था कि एकाएक अपनी सर की टोपी उतार कर वह चिल्लाया।

"गुड मार्निङ्ग, प्योत्र आंद्रीइच! आप अच्छी तरह हैं न?"

मैंने उसकी ओर देखकर पहचाना कि वह हमारा कज़ाक हवलदार था। उसे सामने पाकर मैं खुशी से नाच उठा।

"तुम कैसे हो मेकसीमिच?" मैंने उससे कहा, "हाल में कभी बेलोगोर्स्की गए थे?"

"हाँ, जनाब! कल मैं वहीं था। आप के लिए एक ख़त लाया

हूँ पियोत्र आंद्रीइच ।'

"कहाँ है ?" ऊपर से नीचे तक रोमांचित हो कर मैंने पूछा।

"यह रहा।" मेक्सीमिच ने अपने कोट की अन्दर की जेब में हाथ डालते हुए कहा, "मैंने पलाशा से वायदा किया था कि किसी न किसी तरह यह पत्र आप तक पहुँचा दूँगा।"

उसने मुझे एक तह किया हुआ कागज़ दिया और घोड़े को एड़ लगा कर हवा हो गया। उसे खोल कर मैंने कांपते हुए नीचे लिखी पंक्तियाँ पढ़ीं।

यकायक मेरे माँ और बाप दोनों से मुझे वंचित कर देना ही खुदा को मंजूर था। इस दुनिया में अब कोई मेरा मित्र या सगा संबंधी नहीं रहा। यह जानकर कि आप हमेशा मेरा भला चाहते रहे हैं और हर किसी की सहायता करने को तैयार रहते हैं, मैं आप से अपील कर रही हूँ। मेरी प्रार्थना है कि यह पत्र आप तक पहुँच जाए। मेक्सीमिच ने इसे आप तक पहुँचाने का वायदा किया है। मेक्सीमिच के मुँह से पलाशा ने सुना है कि छुटपुट हमलों के समय उसने आप को अक्सर दूर से देखा है और यह कि आप न अपने जीवन की कुछ भी परवाह करते हैं और न उन लोगों का ही सोचते हैं, जो अपने आँसुओं से आपके लिए दुआएँ माँगते रहते हैं। एक लम्बे अरसे तक मैं बीमार पड़ी रही और जब अच्छी हुई तो एलेक्सी इवानोविच ने, जो मेरे पिता की जगह अब यहाँ कमाण्डर हैं, पादरी गेरासीम को पुगाचोफ़ से बता देने की धमकी देकर मुझे देने के लिए विवश कर दिया। मैं

अब अपने पुराने घर में ही एक क़ैदी की तरह रहती हूँ। एलेक्सी इवानोविच मुझे अपने साथ विवाह करने को विवश कर रहे हैं। वह कहते हैं कि उन्होंने मेरी ज़िन्दगी बचाई है क्योंकि अकुलिना पाम्फ़ीलोव्ना ने जब इन बदमाशों को यह बताया था कि मैं उसकी भतीजी हूँ तो उस समय उन्होंने यह भेद नहीं खोला और मैं चाहे मर जाऊँ लेकिन मैं एलेक्सी इवानोविच जैसे आदमी से विवाह नहीं कर सकती। वह मुझ से क्रूरता से पेश आते हैं और धमकी देते हैं कि अगर मैं अपना निश्चय बदल कर उनसे शादी नहीं करूँगी तो वह मुझे बदमाशों के कैम्प में ले जाएँगे। और वहाँ मेरे ऊपर वैसी ही बीतेगी जैसी लिजाबेता खारलोवा के साथ बीती। मैंने एलेक्सी इवानोविच से सोचने के लिये समय माँगा है। वह तीन दिन और इन्तजार करने को राजी हो गये हैं और अगर तीन दिन के अन्दर मैं उनसे विवाह नहीं कर लेती तो वह मेरे ऊपर दया नहीं करेंगे। प्यारे पियोत्र आंद्रीइच! एक तुम्हीं मेरे रक्षक हो। मेरी मुसीबत में मेरी सहायता करो! अपने जनरल को और दूसरे कमाण्डरों से आग्रह करो कि वह जल्द से जल्द हमारी मदद के लिये एक टुकड़ी भेजें और यदि हो सके तो आप भी आएँ।

आपकी आज्ञाकारिणी
एक अनाथ अबला
मेरिया इवानोव्ना

इस पत्र को पढ़कर मैं हतबुद्धि हो गया। अपने थके घोड़े को

बेरहमी से दौड़ाता हुआ मैं नगर में वापस आया। रास्ते में लगातार माशा का उद्धार करने के उपाय सोचता रहा लेकिन कुछ न सूझा। नगर में पहुँच कर मैं सीधा जनरल के यहाँ गया और हड़बड़ाता हुआ उनके घर में घुसा।

जनरल अपना पाइप पीते हुये कमरे में इधर से उधर टहल रहे थे। मुझे देख कर वह रुक गये। मेरी इस घबराहट को देख कर उन्होंने उत्सुकता से मेरे आने का कारण पूछा।

"मान्यवर!" मैंने उनसे कहा, "आप को अपने पिता के तुल्य समझ कर मैं आप से अपील करता हूँ। खुदा के लिये मेरी अपील को ठुकराएँ न। मेरी जिन्दगी की सारी खुशी संकट में है।"

"क्या बात है भई?" जनरल ने आश्चर्य से पूछा, "तुम क्या चाहते हो मुझे बताओ।"

"मान्यवर, मुझे सैनिकों की एक टुकडी और पचास कज़ाक दीजिये और बेलोगोर्स्की क़िले को दुश्मनों से आजाद करने की आज्ञा दीजिए।"

जनरल ध्यान पूर्वक मेरी ओर देखते रहे। कदाचित वह यह सोचते रहे कि मैं कहीं पागल तो नहीं हो गया—उनका अनुमान ग़लत न था।

"तुम्हारा मतलब क्या है?—बेलोगोर्स्की से क़िले को आज़ाद कराना?" आख़िर उन्होंने कहा—

"सफलता का वचन देता हूँ।" मैंने उत्सुकतापूर्वक कहा, "केवल

मुझे जाने दीजिए।"

"नहीं मेरे जवान दोस्त!" उन्होंने अपना सर हलाते हुए कहा, 'इतनी दूरी पर तुम्हें पाकर दुश्मन बड़ी आसानी से तुम्हारे सारे रास्ते काट कर तुम पर विजय पालेगा। एक बार भी रास्ता कट जाए तो ·········· ·····।"

मुझे डर लगा कि कहीं वह रणनीति की बहस न शुरू कर दे और मैंने जल्द बात काट कर कहा—

'कप्तान मिरोनोफ़ की बेटी ने मुझे ख़त भेजा है। उन्होंने सहायता भेजने के लिए प्रार्थना की है। श्वाब्रिन उनको अपने साथ शादी करने के लिए विवश कर रहा है।"

"सच! ओह, श्वाब्रिन पक्का धूर्त है और अगर मेरे हाथ लग गया तो मैं उसको चौबीस घंटे के अन्दर फ़ौजी सजा दिलवाऊँगा और क़िले की दीवार पर खड़ा करके उसे गोली से उड़वा दूँगा। लेकिन तब तक तुम को धैर्य से काम लेना चाहिए···········?"

"धैर्य से काम लेना चाहिए!" अपने आपे से बाहर होकर मैं चिल्लाया, "लेकिन इस बीच तो वह मेरिया इवानोव्ना से शादी कर लेगा!"

"ओह, यह कोई बुरी बात नहीं होगी।" जनरल ने पलट कर जवाब दिया "उसके लिए यह अच्छा ही होगा कि वह तब तक श्वाब्रिन की पत्नी बन कर रहे। श्वाब्रिन इस समय उस का देख-भाल कर सकेगा और बाद को जब हम उसे गोली मार देंगे तो

लड़की को अनेक प्रेमी मिल जाएँगे। सुन्दर विधवाएँ बुढ़ापे तक विधवा ही नहीं रहतीं। मेरे कहने का मतलब यह कि एक जवान विधवा एक कुमारी लड़की की अपेक्षा जल्दी अपना पति तलाश कर लेती है।"

"मुझे चाहे मौत का सामना करना पड़े, मैंने क्रोध से तमतमाते हुये कहा, "लेकिन उसे श्वाब्रिन के लिये नहीं छोड़ दूँगा।"

"ओह! यह बात है!" जनरल ने कहा, "तो तुम मेरिया इवानोव्ना से प्रेम करते हो! ओह, तब तो दूसरी बात है भले आदमी! लेकिन कुछ भी हो मैं तुम्हें सैनिकों की एक टुकड़ी और पचास कज़ाक नहीं दे सकता। इस तरह की युद्ध यात्रा बिलकुल मूर्खता होगी। मैं इस तरह की जिम्मेदारी नहीं ले सकता।"

मैंने अपना सर झुका लिया। मैं हताश हो गया। यकायक एक विचार विद्युत की तरह मेरे मन में कौंध गया। अगले परिच्छेद में पाठकों को पता चल जायगा कि यह विचार क्या था—जैसा कि पुराने ढर्रे के उपन्यासकार कहा करते हैं।

ग्यारहवाँ

●

# विद्रोहियों का कैम्प

शेर अभी खा पीकर उठा
वह जितना हिंस्र है उतनी ही नम्रता से
उसने मुझ से पूछा
क्या कारण है मेरी मांद पर तुम्हारे आने का ?

—सुमाराकोफ़

जनरल के यहाँ से निकल कर मैं तेजी से अपने डेरे पर पहुँचा। नित्य की तरह आज भी उलाहने और उपदेश देता हुआ सावालिच मुझे वहाँ मिला।

"आप जनाब उन पियक्कड़ लुटेरों से लड़ने के लिए रोज़ रोज़ क्यों निकल जाते हैं। एक भद्र पुरुष को यह शोभा नहीं देता। व्यर्थ ही आप किसी दिन अपनी जान से हाथ धो बैठेंगे। अगर वह कम से कम तुर्क या स्वीड जाति के होते तो भी कोई बात थी—लेकिन इन कलमुहों का तो नाम भी नहीं लेना चाहिए..."

बीच में ही बात काट कर मैंने उस से पूछा कि हमारे पास कितने पैसे बचे हैं ?

"काफ़ी हैं।" उसने संतोष की साँस लेकर कहा, "बदमाशों ने हर चीज़ उलट पुलट कर देखी थी लेकिन यह रक़म मैंने किसी तरह उनकी आँखों से छिपा ली।" यह कह कर उसने अपनी जेब से एक लम्बी बुनी हुई थैली निकाली, जिसमें चाँदी के सिक्के भरे थे।

"अच्छा तो सावालिच" मैंने उस से कहा, "इस में से आधी रक़म मुझे दे दो बाक़ी तुम रखो। मैं बेलोगोर्स्की जा रहा हूँ।"

"प्यारे पियोत्र आंद्रीइच !" दयालु बूढ़े ने काँपते हुए स्वर में कहा, "यह कौन सी धुन सवार हुई आपको! ऐसे समय जब लुटेरे सब तरफ़ छाये हों, आप वहाँ कैसे जा सकते हैं ? आपको अगर अपनी चिन्ता न हो तो कम से कम अपने माँ बाप पर तो दया करें। आप कैसे जाएँगे ? किस लिए ? कुछ दिन और ठहरें। फौजें आ जाएँगी और इन बदमाशों को गिरफ्तार कर लेंगी। उस समय जहाँ जी में आए आप जाएँ।"

किन्तु मेरा निर्णय अटल था।

"बहस करने का समय नहीं रहा।" मैंने उत्तर दिया, "मुझे जाना ही पड़ेगा। रुकना मेरे बस की बात नहीं। दुखी मत हो। सावालिच, ख़ुदा ने चाहा तो हम फिर मिलेंगे और देखो अपने लिए कँजूसी न करना। जिस किसी चीज़ की ज़रूरत हो, वह ख़रीद लेना चाहे तिगने दाम ही क्यों न देने पड़ें। यह रुपया

तुम को पुरस्कार के रूप में देता हूँ। अगर मैं तीन दिन में वापस न आजाऊँ तो......"

"क्या कहते हैं जनाब !" सावालिच ने मेरी बात काट दी, "क्या सोचते हैं कि मैं आप को अकेला जाने दूँगा। सपने में भी ऐसी बात न सोचें। अब चूँकि आप जाने पर तुले ही बैठे हैं तो मैं भी आप के पीछे पीछे चलूँगा। चाहे पैदल ही दौड़ना पड़े लेकिन मैं आप को छोड़ नहीं सकता। आपके बिना मैं पत्थर की चारदीवारी के भीतर बैठा रह सकता हूँ। अभी तक मैंने, अक़्ल से छुट्टी नहीं ले ली है। आप चाहे कुछ कहें लेकिन मैं तो आपके साथ जाऊँगा ही।"

मैं जानता था कि सावालिच के साथ बहस करना व्यर्थ है। इसलिए मैंने उसे यात्रा की तैयारी करने की आज्ञा दे दी। आध घण्टे के बाद मैं अपने शानदार घोड़े पर सवार हुआ और सावालिच एक लँगड़े जर्जर टट्टू पर चढ़ा, जिसे नगर वालों ने खिलाने को कुछ न होने पर सावालिच को भेंट कर दिया था। हम नगर के द्वार पर पहुँचे। संतरियों ने हमें बाहर जाने दिया। हम ओरेन्बर्ग छोड़ कर चल दिए।

गोधूली का समय था और अन्धेरा धीरे धीरे व्याप्त होता जा रहा था। हमें मार्ग के गाँव बर्दा में से हो कर गुज़ारना था जिस पर पुगाचोफ़ की सेनाओं ने कब्ज़ा कर रखा था। सड़क पर बरफ़ जमा थी लेकिन स्टेपी के मैदान पर चारों ओर घोड़े के पैरों के निशान बने हुए थे, जो रोज़ ताज़े हो जाते थे। मैं तेज़ दुलकी

की चाल से घोड़े को ले जा रहा था। सावालिच किसी तरह काफी पीछे भी नहीं चल पाता था और लगातार चिल्लाता जाता था।

"जनाब इतने तेज़ नहीं! ख़ुदा के लिए इतने तेज न चलिए। यह लानत का मारा टट्टू आप के लम्बी टाँगों वाले शैतान के साथ नहीं लग पाता। इतनी कौन सी जल्दी पड़ी है? हमें दावत पर तो नहीं पहुंचना है—शायद अपना जनाज़ा निकलवाने जा रहे हैं!..........पियोत्र आंद्रीइच................प्यारे पियोत्र आंद्रीइच.............या ख़ुदा यह बालक मुसीबत में पड़ के रहेगा!"

बर्दा गांव के चिराग़ जल्द ही दिखाई देने लगे। हम उन खारों तक जा पहुँचे जो गाँव की सुरक्षा के कुदरती साधन थे। सावालिच मेरे पीछे पीछे लगा रहा और लगातार अपनी दयनीय विनती दोहराता रहा। मैं कतरा कर गाँव की बगल से निकल जाना चाहता था कि अचानक उस टिमटिमाती रोशनी में मैंने अपने सामने लाठियों से लैस पाँच किसानों को खड़ा पाया। पुगाचोफ़ के कैम्प की रक्षा करने वाला यह अग्रिम दस्ता था। उन्होंने हमें पुकारा। संकेत शब्द न जानने के कारण, मैंने बिना कुछ कहे ही उनकी बगल से आगे गुजर जाना चाहा लेकिन उन्होंने तुरन्त मुझ को घेर लिया और उनमें से एक ने बढ़ कर मेरे घोड़े की लगाम पकड़ ली। मैंने झट से अपनी तलवार खींच कर उस किसान के सर पर वार किया। उसकी टोपी ने उसे बचा लिया

लेकिन वह लड़खड़ा गया और उसके हाथ से लगाम छूट गई। उसके दूसरे साथी घबरा कर भागे इस मौके का फायदा उठाकर मैंने घोड़े को एड़ लगाई और तेजी से आगे बढ़ा। रात का सघन अंधेरा मुझे हर प्रकार के संकट से बचा लेता लेकिन मैंने जब पीछे मुड़कर यकायक देखा कि सावालिच मेरे साथ नहीं है। वह बूढ़ा आदमी अपने लँगड़े घोड़े पर लुटेरों से पिंड छुड़ा कर आगे नहीं आ सकता था। फिर मैं क्या करता? चन्द मिनट उसकी इन्तजार करने के बाद और इस निश्चय पर पहुँचकर कि उसे रोक लिया गया है, मैंने घोड़ा मोड़ दिया और उसकी रक्षा के लिए चल पड़ा। खार के निकट पहुँचने पर मुझे शोरगुल सुनाई दिया। उसमें सावालिच की आवाज़ भी पहचान में आई। मैं तेजी से आगे बढ़ा और कुछ ही क्षणों में मैं फिर उन किसान पहरेदारों के बीच में जा पहुँचा, जिन्होंने मुझे पहले रोका था। सावालिच उनके साथ था। उन्होंने इस बिचारे बूढ़े आदमी को टट्टू से नीचे खींच लिया था। और अब उसकी आखें फोड़ने की तैयारी कर रहे थे। मेरी वापसी से वे लोग प्रसन्न हुए। हुँकार भर कर वे मुझ पर झपट पड़े और देखते देखते मुझे घोड़े से नीचे घसीट लिया। उन में से एक ने, जो निश्चय ही उनका मुखिया रहा होगा, कहा कि वह हमें फौरन ज़ार के पास ले जाएगा।

"और इस बात का फैसला तो हमारे पिता ज़ार ही करेंगे कि हम तुम्हें तुरन्त फाँसी लगा दें या सुबह का इन्तज़ार करें।"—उसने कहा।

मैंने प्रतिरोध नहीं किया। सावालिच भी मेरी देखादेखी शान्त रहा और पहरेदार विजय के गर्व का अनुभव करते हुए हमें ले चले।

खार को पार करके हमने गाँव में प्रवेश किया। तमाम खिड़कियों में से रोशनी आ रही थी। हर तरफ़ से शोरगुल और पुकारें सुनाई दे रही थीं। गलियों में बहुत से लोग आते जाते मिले लेकिन अंधेरे में किसी ने हमारी ओर ध्यान नहीं दिया और न किसी ने मुझे पहिचाना ही कि मैं ओरेन्बर्ग का अफ़सर था। चौराहे पर स्थित एक मकान में हमें सीधे ले जाया गया। वहाँ शराब के बहुत से पीपे और दरवाज़े पर दो तोपें पड़ी हुई थीं।

"यह राज प्रासाद है।" एक किसान ने कहा, "मैं सूचना दे आऊँ।"

वह अन्दर चला गया। मैंने सावालिच की ओर देखा। वह बूढ़ा आदमी मन ही मन ख़ुदा से प्रार्थना कर रहा था और अपने ऊपर क्रास का चिन्ह बना रहा था। बड़ी देर तक हम इन्तजार करते रहे। अन्त में वह किसान लौटा और उसने मुझ से कहा, "अन्दर चले जाओ! हमारे पिता कहते हैं कि वह अफ़सर से मिलने को तैयार हैं।"

मैं उस मकान में दाख़िल हुआ या राज प्रासाद कह लें जैसा कि किसान कहते हैं। अन्दर दो मोमबत्तियाँ जल रही थीं और दीवारों पर सुनहला कागज़ मढ़ा हुआ था, लेकिन वहाँ की बेंचें, मेज़

मुँह हाथ धोने की जगह खूँटी पर टँगी तौलिया, कमरे पर रखा भट्टी का चिमटा और चौड़ी चूल्हे की अलमारी—जिस पर की बर्तन रखे थे—यह सब चीजें अन्य मकानों जैसी ही थीं। एक लाल कोट और लम्बी टोपी पहने पुगाचोफ़ धर्म-चिन्हों के नीचे कमर पर हाथ रखे बैठा था। उसके कई प्रमुख साथी एक बनावटी आज्ञाकारिता की मुद्रा बनाए खड़े थे। ओरेन्बर्ग से एक अफ़सर के आने की बात ने निश्चय ही विद्रोहियों की उत्सुकता को जगा दिया था और उन्होंने मुझ से मिलने के लिए एक रौबदार स्वागत की तैयारी की थी। पहली ही नज़र में पुगाचोफ़ ने मुझे पहिचान लिया और उसके कृत्रिम रौब की मुद्रा उसके मुख से यकायक—ग़ायब हो गई।

"आह, मान्यवर! आप हैं!" उसने विनम्रता से कहा, "आप कैसे हैं? कैसे आए?"

"मैंने उत्तर दिया कि मैं अपने ही काम से जा रहा था और उसके आदमियों ने मुझे रोक लिया।"

"आप का अपना काम कौन सा है?" उसने मुझ से पूछा।

मेरी समझ में न आया कि उसका क्या उत्तर दूँ। यह सोच कर कि शायद मैं और लोगों के सामने नहीं बताना चाहता, पुगाचोफ़ ने मुड़कर अपने साथियों को कमरा छोड़ कर जाने का आदेश दिया। दो व्यक्तियों को छोड़ कर और सब बाहर चले गए।

"इन लोगों के सामने निःसंकोच हो कर आप बताएँ!" पुगाचोफ़ ने मुझ से कहा, "इन लोगों से मैं कोई बात नहीं छिपाता।"

पुगाचोफ़ के विश्वस्त साथियों को मैंने कनखियों से देखा। उनमें से एक दुबला पतला झुकी कमर और सफ़ेद दाढ़ी वाला बूढ़ा आदमी था, जिसके बारे में और कोई बात नहीं, सिवाय इसके कि वह अपने भूरे रंग के किसानों जैसे कोट पर नीले रंग का फ़ीता कंधे के चारों ओर बाँधे हुए था। लेकिन मैं उसके साथी को कभी नहीं भूल सकता। वह लम्बा तगड़ा और चौड़े कन्धों वाला लगभग चालीस वर्ष की आयु का व्यक्ति था। उसकी घनी लाल दाढ़ी, भूरी चमकती आँखें, बिना नथुनों की नाक, माथे और गालों पर पड़े ललछौंहें दाग़—इन सब ने मिलकर उसके चेचक के दाग़ वाले चौड़े मुँह की भावभंगिमा को ऐसा बना दिया था, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। वह एक लाल रंग की कमीज़ किरग़ीज़ो जैसा चोग़ा और कज़ाकों जैसा पैजामा पहिने हुए था। जैसा कि मुझे बाद में पता चला—पहले वाला आदमी बेलोबोरोडोफ़ एक भागा हुआ फ़ौजी कारपोरल था। दूसरा आदमी अफ़नासी सोकोलोफ़, जिसे ख़ुलोपूशा का नाम लोगों ने दे रखा था, एक अपराधी था जो सायबेरिया की खानों से तीन बार बच कर निकल भागा था। मैं जिन भावनाओं में डूबा था, उनके बावजूद इन लोगों की जिस अप्रत्याशित संगत में पड़ गया था, उसने मेरी कल्पना को तीव्रता से आकर्षित किया। लेकिन पुगाचोफ़

ने यह कह कर मुझे फिर अपने आपे में ला दिया :

"बताइए, किस काम से ओरेन्बर्ग छोड़ कर आए हैं ?"

एक विचित्र ख्याल मेरे मन में उठा। मुझे लगा मानो जिस नियति ने मुझे दुबारा पुगाचोफ़ तक पहुँचा दिया है, वही मेरी कामना-पूर्ति का भी अवसर मुझे दे रही है। मैंने इस स्थिति से लाभ उठाने की ठान ली और अपने निर्णय पर दुबारा सोचे बिना ही पुगाचोफ़ को उत्तर दिया :

"मैं बेलोगोर्स्की के क़िले में एक अनाथ की रक्षा करने जा रहा हूँ जिसके साथ वहाँ बहुत बुरा बर्ताव किया जा रहा है।"

पुगाचोफ़ की आखें चमकने लगीं। "मेरा कौन सा आदमी है ? जिसने एक अनाथ के साथ बुरा सलूक करने की हिम्मत की है।" वह चिल्लाया, "वह चाहे जितना चालाक हो, मेरी सज़ा से निकल कर नहीं जा सकता। बताइए वह अपराधी कौन है ?"

"श्वाब्रिन।" मैंने उत्तर दिया, "उसने उस लड़की को ताले में बन्द कर रखा है, जिस को आपने पादरी के घर में बीमार पड़ा देखा था। और वह उससे बलपूर्वक विवाह कर लेना चाहता है।"

"श्वाब्रिन को मैं सबक़ सिखाऊँगा।"—पुगाचोफ़ ने क्रोध से दाँत चबाते हुए कहा, "मैं उसे दिखाऊँगा कि अपने हाथ में क़ानून लेकर लोगों से बुरा सलूक करने का क्या नतीजा होता है। मैं उसे फाँसी पर लटका दूँगा।"

"मुझे भी एक शब्द कहने दीजिए !" खुलोपूशा ने कर्कश-

स्वर में कहा।

"उस समय आपने श्वाब्रिन को क़िले का कमाण्डर नियुक्त करने की जल्दी की और इस समय आपको उसे फाँसी पर लटका देने की जल्दी पड़ गई है। एक भद्र पुरुष को उनका कमाण्डर बना कर आपने पहले ही कज़ाकों को नाराज़ कर दिया है। अब आप पहले ही जुर्म की बात से उसको फाँसी पर लटका कर भद्रलोगों को न भड़का दीजिये!"

"उनके साथ किसी तरह की दया करने या उनको खुश करने की कोई जरूरत नहीं है" नीले रंग के फ़ीते वाले बूढ़े आदमी ने कहा, "श्वाब्रिन को फाँसी पर लटकाने में कोई हर्ज नहीं लेकिन यह ग़लत न होगा कि इस अफ़सर से पूरी बात अच्छी तरह जान लीजाए। यह क्यों यहाँ आया है? अगर यह आपको अपना ज़ार नहीं मानता तो उसे आप से न्याय की माँग नहीं करनी चहिए! और अगर वह आपको ज़ार मानता है तो आज तक आपके दुश्मनों के साथ वह ओरेन्बर्ग में क्यों बैठा रहा? क्या आप मुझे इस बात की आज्ञा नहीं देंगे। कि उसे दफ्तर में ले जाऊँ और इसके अंगूठों के नीचे आग जलवाऊँ। मुझे लगता है कि इन महाशय को ओरेन्बर्ग के कमाण्डरों ने भेजा है।"

इस बूढ़े शैतान का तर्क मुझे बुद्धिसंगत लगा। मैं किन लोगों के हाथ में आ पड़ा था यह सोचते ही मेरे सारे शरीर में कंपकपी सी दौड़ गई। पुगाचोफ़ ने मेरी परेशानी भाँप ली।

"ओह महाशय!" उसने आँख मारते हुए मुझ से कहा, "मैं

सोचता हूँ कि मेरे युद्ध-सेनापति ने अक़्ल की बात कही है। आप का क्या ख़याल है?"

पुगाचोफ़ के व्यँग्य से मेरा साहस लौट आया। मैंने शान्त भाव से उत्तर दिया कि मैं उसके क़ब्ज़े में था और वह मेरा चाहे जो कुछ कर सकता था।

"बिल्कुल ठीक" पुगाचोफ़ ने कहा "और अब बताइए कि वहाँ नगर में क्या हो रहा है? कैसा हाल चाल है?"

"ख़ुदा का शुक्र है कि वहाँ सब ठीक-ठीक है।" मैंने उत्तर दिया।

"सब ठीक-ठीक है?" पुगाचोफ़ ने दुहराया, "और लोग भूखों मर रहे हैं?" उसकी बात सच थी लेकिन अपने कर्त्तव्य के अनुसार मैं उसे विश्वास दिलाने लगा कि यह एक झूठी अफ़वाह थी और ओरेन्बर्ग में खाने पीने की अपार सामग्री भरी हुई है।

"देखा आप ने?" उस बूढ़े ने बात जड़ दी, "आप के मुँह पर यह आप को धोखा दे रहे हैं। वहाँ से आए तमाम शरणार्थी एक स्वर से यही कहते हैं कि ओरेन्बर्ग में भुखमरी फैली है। लोग पड़ी हुई लाशें खाते हैं और उसे भी एक नियामत समझते हैं। और यह महाशय आप को विश्वास दिला रहे हैं कि वहाँ हर चीज़ की बहुतायत है। अगर आप श्वाब्रिन को फाँसी पर लटकाना चाहते हैं तो उसी टिकटी पर इस आदमी को भी लटका दें ताकि दोनों के साथ बराबर का बर्ताव हो।"

इस लानत के मारे बूढ़े के शब्दों ने जैसे पुगाचोफ़ को हिला

दिया। सौभाग्य से खुलोपूशा ने अपने साथी का विरोध किया।

"जाने भी दो नोमिच।" उसने उससे कहा, "तुम्हें हमेशा लोगों को फाँसी पर लटकाने और क़तल कराने की ही पड़ी रहती है। और वैसे तुम देखने में कोई आदमी में आदमी हो—मुश्किल से अपनी देह-प्राण को ज़िन्दा रखे हो। तुम्हारा एक पाँव तो क़ब्र में है मगर फिर भी दूसरों को नष्ट करने में लगे रहते हो। तुम्हारी अन्तरात्मा पर हत्याओं का बोझ क्या काफ़ी नहीं है ?"

"तुम बड़े साधू हो ?" बेलोबोरोडोफ़ ने पलट कर जवाब दिया, "तुम क्यों दया करना चाहते हो ?"

"यह ठीक है कि मेरे भी अन्तरमन पर बहुत सी बातें छायी हैं" खुलोपूशा ने उत्तर दिया, "और इस हाथ ने (उसने कमीज़ की बाँह चढ़ा कर घने बालों से ढकी कठोर हड्डियों वाले हाथ की मुट्ठी बाँधी) ईसाइयों का रक्त बहाने का अपराध किया है। लेकिन मैंने दुश्मनों को मौत के घाट उतारा है, मेहमानों को नहीं। राज-मार्ग पर और घने जँगलों में, न कि बुखारी के पीछे घर के अन्दर। लाठी और कुल्हाड़े से, न कि औरतों जैसी चुग़लियों से !"

वह बूढ़ा आदमी दूसरी ओर को बड़बड़ाया, "टूटे हुए नथने......"

"तुम क्या बड़बड़ा रहे हो ? बूढ़ा खूसट कहीं का !" खुलो-पूशा ने चीख कर कहा, "मैं अभी तुम्हें 'टूटे हुए नथुने' बताता

हूँ! कुछ और ठहरो! तुम्हारा भी वक़्त आएगा। ख़ुदा ने चाहा तो तुम्हें भी फाँसी की रस्सी सूँघनी पड़ेगी......और तब तक सावधानी से चलो नहीं तो तुम्हारी बेहूदी दाढ़ी उखाड़ लूँगा।"

"मेरे सेनापतियो!" पुगाचोफ़ ने दबदबे के साथ कहा, "काफ़ी झगड़ चुके। इसमें कोई हर्ज की बात नहीं अगर ओरेन्बर्ग के तमाम लोग एक ही फाँसी की रस्सी में लटके कुलबुलाएँ; लेकिन यह ज़रूर बुरी बात होगी अगर हमारे कुत्ते भी एक दूसरे के गला नोचने के लिए झपट पड़ें। इसलिए आपस में सुलह करो।"

खुलोपूशा और बेलोबोरोडोफ़ ने एक शब्द भी न कहा और चुपचाप उदास मन से एक दूसरे को देखते रहे। मैंने सोचा कि बातचीत के विषय को तुरन्त बदलना ज़रूरी है नहीं तो मेरे लिए उसका बुरा नतीजा निकल सकता है इसलिए प्रसन्न मुद्रा बना कर मैंने पुगाचोफ़ से कहा:

"ओह, घोड़े और भेड़ की खाल के लिए आप को धन्यवाद देना तो भूल ही गया। आप की इस दया के बिना मुझे सड़क का पता लगाना भी असंभव होता और मैं रास्ते में ही बरफ़ से जम गया होता।"

तीर निशाने पर बैठा था। पुगाचोफ़ पुनः अपनी प्रसन्न मुद्रा में आ गया।

"एक भलाई करने के बाद दूसरी भलाई करने की भी ज़रूरत होती है।" उसने आँख मार कर कहा, "अच्छा यह बताइए कि

आप उस लड़की के लिए इतने परेशान क्यों हैं ? जिसके साथ श्वाब्रिन बुरा बर्ताव कर रहा है। क्या वह आप की प्रेयसी है ?"

"वह मेरी मंगेतर है !" यह देख कर कि हवा का रुख अनुकूल हो गया है और अब सत्य को छिपाना बेकार होगा मैंने उत्तर दिया।

"आपकी मंगेतर !" पुगाचोफ़ उछल पड़ा, "आप ने यह पहले क्यों नहीं बताया ? अरे ! हम आपकी शादी कराएँगे और इस उत्सव पर खूब खुशियाँ मनाएँगे।"

फिर बेलोबोरोडोफ़ की ओर मुड़ कर वह बोला, "सुनो सेनापति ! मैं और यह महाशय बहुत पुराने दोस्त हैं। इसलिए आओ हम सब बैठ कर खाना खाएँ। शाम की अपेक्षा सुबह ज्यादा बुद्धिमान होती है। कल हम इस पर विचार करेंगे कि इनके बारे में क्या किया जाय।"

मैं इस आतिथ्य से इन्कार कर देता लेकिन उस समय और कोई चारा न था। उस मकान के मालिक कज़ाक की दो युवती लड़कियों ने आकर मेज पर एक सफ़ेद कपड़ा बिछाया और रोटियाँ, मछली का शोरबा, और वोदका और बीयर की कई बोतलें ले आईं। एक बार फिर मैंने पुगाचोफ़ और उसके भयंकर साथियों के साथ एक मेज़ पर बैठ कर खाना खाया।

खाने पीने का यह उच्छृंखल उत्सव, जिस में मुझे विवशतापूर्वक शामिल होना पड़ा, देर रात तक चलता रहा। आखिरकार शराब के नशे ने सबको निश्चेत बना दिया। पुगाचोफ़ ऊँघने

लगा। उसके दोस्त उठ खड़े हुए और मुझे वहाँ से उन्होंने जाने का संकेत किया। मैं उनके साथ ही कमरे से बाहर आया। खुलोपूशा के आदेश पर पहरेदार मुझ को उस झोपड़ी में ले गया, जो दफ़्तर का काम देती थी। मुझे वहाँ सावालिच मिला और रात भर के लिए हम लोग बन्द कर दिए गए। वह बेचारा अपने चतुर्दिक होने वाली घटनाओं से इतना चकित हो रहा था कि उसने मुझ से एक भी प्रश्न न पूछा। वह अँधेरे में लेट गया और बड़ी देर तक आहें भरता और कराहता रहा। अन्त में उसने खुर्राटे लेने शुरू कर दिए और मैं ऐसे विचारों में डुबकियाँ लगाने लगा कि मुझे रात भर एक पल भी नींद न आई।

सुबह होते ही मुझे पुगाचोफ़ ने बुलवा भेजा। मैं उसके पास गया। द्वार पर एक घोड़ागाड़ी खड़ी थी, जिस में तीन तातार घोड़े जुते हुए थे। सड़क पर एक भीड़ जमा थी। दालान में ही पुगाचोफ़ से भेंट हो गई। वह पोस्तीन का कोट पहने और किरगीज़ टोपी लगाए यात्रा पर जाने को तैयार था। उसके रात वाले साथी खुशामद के भाव से उसे घेरे खड़े थे। रात को मैंने उन्हें जिस रूप में देखा था, उससे उनका इस समय का रूप भिन्न था। पुगाचोफ़ ने मेरा सहर्ष स्वागत किया और अपने साथ घोड़ागाड़ी में चढ़ने का आदेश दिया। हम दोनों अन्दर बैठ गए।

"बेलोगोर्स्की के क़िले चलो।" चौड़े कँधे वाले तातार से पुगाचोफ़ ने कहा जो खड़ा होकर गाड़ी हाँक रहा था। मेरा दिल ज़ोर ज़ोर से धड़कने लगा। घोड़े दौड़ चले, घँटियाँ बज उठीं और

घोड़ागाड़ी हवा की तरह आगे बढ़ने लगी.........

"रोको रोको !" एक जानी पहिचानी आवाज़ ने पुकारा। मैंने देखा सावालिच हमारी ओर भागता चला आ रहा है। पुगाचोफ़ ने गाड़ी रोकने का आदेश दिया।

"प्यारे पियोत्र ऑन्द्रिइच !" सावालिच चिल्लाया, "इस बुढ़ापे में मुझे इन बदमाशों के बीच छोड़ कर न जाओ।"

"ओह, तुम हो !" पुगाचोफ़ ने उस से कहा, "तो ख़ुदा ने हमें एक बार फिर मिला दिया। अच्छा बकस पर चढ़ जाओ।"

"शुक्रिया जनाब ! शुक्रिया हमारे माई बाप !" सावालिच ने चढ़ते हुए कहा, "एक बूढ़े पर दया करने के लिए ख़ुदा आप को सौ बरस की जिन्दगी दे। जिन्दगी भर आप के लिए दुवाएँ मांगूंगा और ख़रगोश की खाल वाले जाकेट का आगे फिर जिकर न करूँगा।"

यह ख़रगोश की खाल वाला जाकेट पुगाचोफ़ का सचमुच क्रोध उभार सकता था। सौभाग्य से या तो उसने सुना ही नहीं या इस बेहूदी बात पर ध्यान देना उचित न समझा। घोड़े सरपट दौड़ चले। सड़क पर लोग रुक कर सर झुकाने लगे। पुगाचोफ़ दाएँ-बाएँ झुक झुक कर उनके अभिनन्दन का उत्तर देता। एक मिनट बाद गाँव से निकल कर हम चौड़ी चिकनी सड़क पर तेज़ी से आगे बढ़ने लगे।

उस समय मैं कैसा अनुभव कर रहा था—इस की कल्पना कोई भी कर सकता है। कुछ घँटों बाद ही मैं उससे मिलने वाला

था, जिससे मिलने की आशा मैं छोड़ चुका था। मैं इस मिलन का चित्र अपने मन में बना रहा था......। साथ ही मैं उस व्यक्ति के बारे में सोच रहा था, जिसके हाथ में आज मेरा जीवन है और जो परिस्थितियों के विचित्र सँयोग से मेरे साथ एक रहस्य-पूर्ण ढँग से बँध गया था। अपनी प्रेयसी के इस भावी रक्षक की विचाररहित क्रूरता और रक्तपिपासु स्वभाव का बार बार स्मरण करता था। पुगाचोफ़ को यह न मालूम था कि वह कप्तान मिरोनोफ़ की बेटी है। कटुतावश श्वाब्रिन उसे बता सकता था या शायद पुगाचोफ़ ही किसी और तरह इस भेद का पता लगा ले......तब मेरिया इवानोव्ना का क्या होगा? मेरे शरीर में एक कम्पन छूट गया और मेरे सर के बाल खड़े हो गए।

यकायक पुगाचोफ़ ने मेरी विचार श्रंखला भंग करते हुए प्रश्न किया, "इतनी गम्भीरता से क्या सोच रहे हैं आप, मान्यवर?"

"सोचे बिना कैसे रह सकता हूँ। मैं एक अफ़सर और भद्र पुरुष हूँ। कल तक मैं आपके खिलाफ़ लड़ता रहा और आज आप के साथ गाड़ी में सवार हूँ और मेरे समस्त जीवन की खुशी आप पर निर्भर है।" मैंने उत्तर दिया।

"तो क्या आप को डर है?" पुगाचोफ़ ने पूछा।

मैंने उत्तर दिया कि चूंकि उसने एक बार मुझे जीवन दान दिया था तो वह फिर ऐसा करेगा और सचमुच मेरी सहायता करेगा।

"और आप बिल्कुल ठीक कहते हैं। अपनी क़सम आप

बिल्कुल ठीक कहते हैं।" पुगाचोफ़ ने कहा, "आप ने तो देखा होगा कि मेरे लोग आप पर सन्देह कर रहे थे और उस बूढ़े ने आज सुबह भी जोर देकर कहा था कि आप एक जासूस हैं और खूब यन्त्रणा देकर आप को फाँसी लगा देनी चाहिए।" अपनी आवाज़ धीमी करते हुए वह कहने लगा ताकि सावालिच और तातार को सुनाई न दे सके, "लेकिन आपने वोदका का जो गिलास पिलाया था और खरगोश के चमड़े का जाकेट दिया था, उसकी याद करके मैं राजी नहीं हुआ। अब आप को पता चला कि मैं उतना खून का प्यासा नहीं हूँ जितना कि आपके लोग मुझे बताते हैं "

बेलोगोर्स्की के क़िले पर जब उसने क़ब्ज़ा किया था, उस समय का भयानक दृश्य आँखों के आगे घूम गया। लेकिन इस समय उसकी बात काटना जरूरी नहीं समझा और न कोई उत्तर दिया। ओरेन्बर्ग में लोग मेरे बारे में क्या कहते हैं?" पुगाचोफ़ ने कुछ देर के मौन के बाद कहा।

"लोग कहते हैं कि आप पर विजय पाना आसान काम नहीं। इससे तो इन्कार नहीं किया जा सकता कि आपने अपनी धाक बैठा दी।"

इस झूठे दावेदार के मुख पर संतुष्ट अहंकार की रेखाएँ खिच गईं।

"हाँ क्यों नहीं!" उसने उल्लासपूर्वक कहा, "युद्ध कला में मैं काफ़ी पटु हूँ। ओरेन्बर्ग वालों को यूज़ेईवा की लड़ाई की ख़बर

है। चालीस जनरल मारे थे और चार फौजों को हथियार रखवा कर गिरफ्तार कर लिया था। क्या ख्याल है ? प्रशिया का बादशाह क्या मेरा मुक़ाबला कर सकता है ?"

इस लुटेरे का डींग हाँकना मुझे मनोरंजक लगा।

"आप स्वयं क्या सोचते हैं ?" मैंने उससे पूछा, "क्या आप फ्रीड्रिक को हरा सकते हैं ?"

"क्यों नहीं ! मैंने आपके जनरलों को हराया और वह उसको हराया करते थे। आज तक युद्ध में मेरा सितारा ऊँचा रहा है। अभी ठहरिए जब मैं मास्को पर चढ़ाई करूँगा उस समय आप इससे भी बड़े बड़े कारनामें देखेंगे।"

"क्या आप ऐसा करने की सोच रहे हैं ?"

पुगाचोफ़ गम्भीर हो कर सोचने लगा और फिर धीमे स्वर में बोला, "खुदा ही जानता है। मेरे हाथ-पाँव बंधे हैं। जो कुछ चाहता हूँ, कर नहीं सकता। मेरे लोग अपनी मनमानी करते हैं। वे चोर और उठाईगीर हैं। मुझे उनपर कड़ी निगाह रखनी पड़ती है। पहली ही हार खाकर वह मेरा सर काट लेंगे और गले में बाँधकर घूमेंगे।"

"बिलकुल ऐसा ही होगा।" मैंने कहा, "क्या ही अच्छा हो अगर आप समय रहते इन लोगों को छोड़ दें और साम्राज्ञी की दया के लिए अपील करें !"

पुगाचोफ़ कटुतापूर्वक मुस्कराया। "नहीं !" उसने कहा, "पश्चात्ताप करने का समय निकल गया। मेरे प्रति दया नहीं की

जायगी। जिस रास्ते पर चल पड़ा हूँ अब उसी पर चलता जाऊँगा। कौन जानता है कि एक न एक दिन सफल हो जाऊँ। ग्रिश्का ओत्रीपीफ़ ने भी तो मास्को पर राज किया था। आप तो जानते हैं।"

"और आप को मालूम है कि उसका क्या अन्त हुआ? उन्होंने उसे उठा कर खिड़की में से फैंक दिया, मार कर जला दिया और उसकी राख का गोला बना कर तोप चलाई थी।"

"सुनो!" पुगाचोफ़ ने जैसे वन्य प्रेरणा में भर कर कहा, मैं आपको एक परियों की कहानी सुनाता हूँ। एक कालमुख औरत ने मुझे बचपन में सुनाई थी। गरुड़ ने एक दिन कौवे से पूछा, 'कौवा राजा, यह बताओ कि इस दुनिया में तुम तीन सौ बरस क्यों जीते हो और मैं तैंतीस वर्ष?—'इसलिए गरुड़ राज, कि तुम जिन्दा खून पीते हो और मैं मुर्दों को खाता हूँ।' कौवे ने उत्तर दिया। गरुड़ ने सोचा मैं भी इसकी ही तरह खाया करूँगा। बहुत खूब गिद्ध और कौवा दोनों साथ साथ उड़ते जा रहे थे। उन्होंने नीचे एक घोड़े की ठठरी पड़ी देखी। वे नीचे उतरे और उस पर बैठ गये। कौवे ने चोंच मारी और अपने भोजन को सराहा। गरुड़ ने एक या दो चोंच लगाई फिर अपने पंख फड़का कर बोला, 'नहीं कौवा भइया, सड़ा मांस खाकर तीन सौ साल जीने से तो सिर्फ एक बार जिन्दा रक्त पीकर मर जाना अच्छा है—और बाक़ी खुदा के लिए छोड़ देना चाहिए! इस कालमुख गल्प के बारे में आपका क्या ख्याल है?"

"काफ़ी चुटीली कहानी है।" मैंने उत्तर दिया, "लेकिन हत्या और लूटमार के सहारे जीना मेरी दृष्टि में सड़ा मांस नोच कर खाने के बराबर है।"

पुगाचोफ़ ने मेरी ओर आश्चर्य से देखा और कोई उत्तर न दिया। हम दोनों ही मौन हो गये और अपने अपने विचारों में डूब गये। तातार ने एक अवसाद भरे गीत की तान छेड़ी। सावालिच बक्स पर बैठा बैठा ऊँघने लगा और इधर से उधर हलकोरे खाने लगा। शीतकाल की चिकनी सड़क पर हमारी गाड़ी तेजी से बढ़ती जा रही थी······यकायक मैंने यायिक नदी के ऊंचे कगार पर बसा एक गाँव देखा, जिसके चारों ओर ऊँची मेंड़ बंधी हुई थी और उस पर लकड़ी का जँगला लगा था—और एक चौथाई घंटे के अन्दर ही हम बेलोगोर्स्की के क़िले में दाख़िल हो गये।

बारहवां

## एक अनाथ

हमारे कोमल किशोर सेव वृक्ष
की न फैली शाखें हैं, न ऊँची चोटी
हमारी कोमल तरुण भावी दुलहन
जिस की देख भाल करने वाले न माँ बाप हैं,
न कोई उसको पहुँचाने वाला
और न कोई उस पर अपनी दुआओं
की वर्षा करने वाला ।

—एक शादी का गीत

घोड़ागाड़ी कमाण्डर के घर के सामने जा कर रुकी । लोगों ने पुगाचोफ़ की घण्टियों की ध्वनि पहिचान ली और एक भीड़ की भीड़ हमारे पीछे भागती आई । सीढ़ियों पर ही श्वाब्रिन पुगाचोफ़ से मिला । वह एक कज़ाक के भेश में था और उसने दाढ़ी बढ़ा ली थी । इस विश्वासघाती ने पुगाचोफ़ को गाड़ी में से उतारा । वह लगातार अपनी ख़ुशी और स्वामिभक्ति की

चापलूसी भरी दुहाई देता रहा। मुझे देख कर वह एक बार हक्का-बक्का रह गया लेकिन तुरन्त ही अपने को संभाल कर मेरी ओर अपना हाथ बढ़ाता हुआ बोला :

"तो तुम भी हमारे साथ हो ? वख़्त का यही तक़ाजा है।"

मैंने मुँह फेर लिया और चुप रहा। जब हम अपने परिचित कमरे में पहुँचे तो मेरा दिल कचोटने लगा। स्वर्गवासी कमाण्डर की सनद इस समय भी दीवार पर टँगी थी—मानो बीते दिनों का एक शोकपूर्ण स्मरण लेख हो। पुगाचोफ़ उसी सोफ़े पर बैठ गया जिस पर बैठ कर इवान कुज़ामिश ऊँघा करते थे और अपनी पत्नी का बड़बड़ाना सुनते सुनते नींद की गोद में सो जाते थे। श्वाब्रिन थोड़ी सी वोद्का ले आया। पुगाचोफ़ ने एक गिलास पिया और मेरी ओर संकेत कर के कहा :

"इन मान्य महोदय को भी दो।" श्वाब्रिन ट्रे लेकर मेरे पास आया लेकिन मैंने फिर मुँह फेर लिया। निश्चय ही वह बहुत व्यग्र था। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि से उसने भाँप लिया था कि पुगाचोफ़ उससे अप्रसन्न था। वह डरा हुआ था और उसने अविश्वासपूर्वक मेरी ओर देखा। पुगाचोफ़ ने उस से क़िले का हालचाल पूछा और दुश्मन की फ़ौजों की ख़बर के बारे में दर्याफ़्त किया और फिर अचानक प्रश्न किया।

"भाई यह बताओ कि तुमने किस लड़की को अपने घर में क़ैद कर रखा है ? उसको मुझे दिखाओ।"

श्वाब्रिन मौत की तरह सफ़ेद पड़ गया।

"हजूर" उसने काँपते स्वर से कहा, "हजूर, वह क़ैदी नहीं है। वह बीमार है...वह ऊपर की मंजिल में है, बिस्तर में है।"

"मुझे वहाँ ले चलो!" पुगाचोफ़ ने उठते हुए कहा।

उसको इन्कार करना संभव न था। श्वाब्रिन पुगाचोफ़ को लेकर मेरिया इवानोव्ना के कमरे की ओर चला। मैं भी पीछे लग गया।

सीढ़ियों पर पहुँच कर श्वाब्रिन रुक गया, "हजूर! आप मुझे चाहे जो कुछ करने का हुक्म दे दें लेकिन किसी अजनबी को मेरी पत्नी के सोने के कमरे में घुसने की आज्ञा न दें।"

मैं दहल गया।

"तो तुम शादी शुदा हो?" उसकी बोटी बोटी काटने के लिए तैयार होकर मैंने कहा।

"चुप रहिए!" पुगाचोफ़ ने मेरी बात काट कर कहा, "यह मेरा काम है। आप बहुत चतुर बनने की कोशिश न करो या बहाने न बनाओ।" श्वाब्रिन की ओर मुख़ातिब होकर वह कहता गया, "पत्नी हो या कोई और, मैं जिसको चाहूँ, उसे उसके पास ले जाऊँगा। मेरे पीछे आइए मान्यवर!"

मेरिया इवानोव्ना के द्वार पर एक बार फिर रुक कर श्वाब्रिन ने टूटते हुए स्वर में कहा, "हजूर! मैं आपको सावधान करना चाहता हूँ कि तीन दिन से वह दिमागी बुख़ार में पड़ी बक रही है।"

"दरवाजा खोलो!" पुगाचोफ़ ने कहा।

श्वाब्रिन अपनी जेबें टटोलने लगा और बोला कि वह चाबियाँ भूल आया है। पुगाचोफ़ ने दरवाज़े पर लात मारी। कुँडी टूट कर गिर गई। दरवाज़ा खुल गया और हम अन्दर दाख़िल हुए

मैंने देखा—और देख कर मेरी आँखें फट गईं। दुबली पीली मेरिया इवानोव्ना बाल बिखरे और किसान लड़कियों के वेश में फ़र्श पर बैठी थी। उसके सामने पानी से भरा डबल रोटी से ढका एक तामलोट रक्खा था। मुझे देख कर वह चौंकी और चीख़ उठी। उस समय मुझे कैसे लगा—यह वर्णन नहीं कर सकता।

पुगाचोफ़ ने श्वाब्रिन की ओर देखा और एक घृणापूर्ण मुस्कान से कहा :

"क्या ख़ूब अस्पताल बनाया है तुम ने।"

फिर वह मेरिया इवानोव्ना के पास गया और बोला, "प्यारी बेटी, बोलो किस वजह से तुम्हारा पति तुम्हें सज़ा दे रहा है? उसके साथ तुम ने कौन सी बुराई की है?"

"मेरा पति?" उसने दुहराया, "यह मेरा पति नहीं है। मैं कभी इसकी पत्नी नहीं बन सकती। मुझे मरना पसन्द है और अगर मुझे बचाया न गया तो मर के दिखा दूँगी।"

पुगाचोफ़ ने क्रोध से तमतमाते हुए श्वाब्रिन की ओर देखा।

"और तुम्हारी इतनी जुर्रत कि मुझ को ही धोखा दिया।" उसने कहा, "जानते हो तुमने किस लायक़ काम किया है? बदज़ात।"

श्वाब्रिन अपने घुटनों के बल झुक गया......उस समय घृणा और क्रोध से ज्यादा मेरे मन में उपेक्षा की भावना बलवती हो गई। एक भागे हुए अपराधी के चरणों पर गिर कर इस भद्र पुरुष को गिड़गिड़ाते देख कर मेरे अन्दर धिक्कार भर गई। पुगाचोफ़ नरम पड़ गया।

"इस बार तो मैं तुम्हें छोड़ दूँगा" उसने श्वाब्रिन से कहा, 'लेकिन दुबारा कोई ग़लती की तो यह अपराध भी तुम्हारे ख़िलाफ़ याद रक्खा जायगा।"

फिर मेरिया इवानोव्ना की ओर मुड़ कर उसने मृदुतापूर्वक कहा, "आओ मेरी सुन्दर बेटी! मैं तुम्हें आज़ाद करता हूँ। मैं ज़ार हूँ!"

मेरिया इवानोव्ना ने उसकी ओर नज़र उठा कर देखा और समझ गई कि उसके सामने उसके माता पिता का हत्यारा खड़ा है। उसने हाथों से अपना मुँह छिपा लिया और मूर्छित हो कर गिर पड़ी। मैं लपक कर उसके निकट गया कि इसी समय पलाशा साहसपूर्वक कमरे में दाख़िल हुई और अपनी मालकिन की देखभाल करने लगी। पुगाचोफ़ बाहर निकल आया और हम तीनों नीचे की मंज़िल में आ गए।

"अच्छा, मान्यवर!" पुगाचोफ़ ने हँसते हुए कहा, "हमने सुन्दर युवती की रक्षा कर ली। आप की क्या राय है। क्या यह ठीक न होगा कि पादरी को बुलवा भेजा जाए और उससे कहा जाय कि वह अपनी भतीजी से शादी कर दें। अगर आप चाहें तो

मैं इस सुन्दरी को किसी और को दे सकता हूँ और इसके लिए श्वाब्रिन ही सब से उपयुक्त आदमी होगा। और फिर हम खुशियाँ मनाएँगे, खूब शराब पीएँगे और मेहमानों को सोचने का अवसर ही न देंगे।"

वही बात हुई जिसका मुझे डर था। पुगाचोफ़ का सुझाव सुन कर श्वाब्रिन आपे से बाहर हो गया।

"हज़ूर!" वह पागल की तरह चिल्लाया, "मेरा क़सूर है। मैं आप से झूठ बोला। लेकिन आँद्रीइच भी आप को धोखा दे रहा है। यह लड़की पादरी की भतीजी नहीं है। वह कप्तान मिरोनोफ़ की बेटी है जिसे क़िले पर क़ब्ज़ा करने के बाद फाँसी चढ़ाया गया था।"

पुगाचोफ़ ने ग़ुस्से से लाल आँखें मेरे ऊपर गाड़ दीं।

"यह क्या बात है?" उसने पूछा।

"श्वाब्रिन ठीक कहता है।" मैंने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया।

"आप ने तो मुझ से नहीं कहा।" पुगाचोफ़ ने कहा और उसका मुख गम्भीर हो गया।

"लेकिन इस बात पर भी तो सोचिए" मैंने उत्तर दिया, "कि आप के आदमियों की मौजूदगी में यह कैसे कर सकता था कि मिरोनोफ़ की बेटी अभी जिन्दा है। वे उसकी बोटी बोटी नोच लेते। फिर उसे कोई न बचा पाता।"

"यह बिल्कुल सच है।" पुगाचोफ़ ने हँसते हुए कहा, "मेरे शराबी दोस्त इस बेचारी लड़की को कभी न छोड़ते। पादरी की

पत्नी ने उनको धोखा देकर अच्छा ही किया।"

"सुनिए" उसको दयालु मुद्रा में मैंने देखकर कहा, "मैं नहीं जानता कि मैं आप को क्या कह कर पुकारूँ? और न जानना ही चाहता हूँ......लेकिन खुदा जानता है कि आप ने मेरे लिए जितना कुछ किया है उसके बदले में मैं खुशी से आप के लिये अपनी जिन्दगी क़ुरबान कर सकता हूँ। सिर्फ़ मुझ से वह काम करने के लिए न कहें जो मेरे आत्म-सम्मान और ईसाई अन्तः-करण के विरुद्ध हो। आप ने मेरा बहुत उपकार किया है। इस को अन्त तक निभाएँ। इस बेचारी अनाथ लड़की को लेकर मुझे वहाँ जाने दें जहाँ हमारा खुदा हमें ले जाए और आप पर चाहे जैसी गुजरे और आप चाहे जहाँ हो, हम जिन्दगी भर रोज उस से यही दुवा माँगते रहेंगे कि वह आप की पापी आत्मा की रक्षा करे।"

ऐसा लगा मानो पुगाचोफ़ का संगदिल भी पिघल गया।

"ऐसा ही होगा" उसने कहा, "प्रतिशोध लेना हो या दया करनी हो, मैं आधे रास्ते जाकर नहीं रुकता। अपनी प्रेयसी को लेकर आप जहाँ चाहें चले जाएँ। खुदा करे आप को प्यार और सहानुभूति मिले।"

फिर उसने श्वाब्रिन को आदेश दिया कि वह मुझे उसके अधीन सारे गाँवों और क़िलों में से होकर गुजरने का आज्ञा-पत्र बना दे।

इस सारी घटना के आघात से घबराया श्वाब्रिन स्तम्भित

खड़ा था। पुगाचोफ़ क़िले का निरीक्षण करने चला गया। श्वाब्रिन उसके साथ साथ गया। यात्रा की तैयारी करने का बहाना करके मैं वहीं रुक गया।

मैं भागता हुआ ऊपर गया। दरवाज़ा अन्दर से बन्द था। मैंने खटखटाया।

"कौन है ?" पलाशा ने पूछा।

मैंने अपना नाम बताया। दरवाज़े के अन्दर से मेरिया इवानोव्ना का मधुर स्वर सुनाई दिया।

"ज़रा ठहरिए पियोत्र आंद्रीइच, मैं कपड़े बदल रही हूँ। आप अकुलिना पाम्फ़ीलोवना के यहाँ चलें। मैं भी सीधी वहीं आती हूँ।

आदेश मानकर मैं पादरी गेरासीम के घर गया। वह और उनकी पत्नी मुझ से झपट कर मिले। सावालिच ने उन्हें पहले से सूचना दे दी थी।

"आप अच्छे तो हैं पियोत्र आंद्रीइच, पादरी की पत्नी ने कहा, "ख़ुदा ने एक बार हमें फिर मिला दिया है। आप कैसे हैं ? हम रोज़ आप की बातें किया करते थे। आप के बिना मेरिया इवानोव्ना को भयानक दिन गुजारने पड़े। प्यारी बच्ची !·········· लेकिन भाई, एक बात तो बताइए कि आप ने पुगाचोफ़ से कैसे बात पटा ली? यह कैसे हुआ कि उसने आप की जान नहीं ली ? कहने को तो हो गया कि इस बदनाश ने कम से कम एक बात तो अच्छी की।" "जाने भी दो तुम !" पादरी गेरासीम ने उसे टोक कर

कहा, "जितना कुछ जानती हो, वह सब एक बार में ही न उगल दो। अधिक बोलने से मोक्ष नहीं मिलता। पियोत्र आंद्रीइच, आप अन्दर आइए! आपके आने से हमें बहुत खुशी हुई। आखिर महीनों से हम कब मिल सके हैं।

पादरी की पत्नी ने मुझे खाना खिलाया और इस बीच लगातार वह बोलती रही। उसने बताया कि श्वाब्रिन ने किस तरह उनको विवश कर के मेरिया इवानोव्ना को उनसे अलग किया। मेरिया कितना रोई और उनसे अलग होने का विरोध करती रही। किस तरह वह पलाशा के जरिए उनको अपनी खोज खबर का पता देती रही। पलाशा कैसी उत्साही लड़की है कि वह हवलदार तक को नाच नचाती रही और किस तरह उसने मेरिया इवानोव्ना को मेरे पास पत्र भेजने की बात सुझाई। इस के बदले उनको मैंने अपनी कहानी सुनाई। पादरी और उनकी पत्नी को जब यह मालूम हुआ कि उनके धोखा देने की बात पुगाचोफ़ के कान तक पहुँच गई है तो उन्होंने अपने ऊपर क्रास का चिन्ह बनाया।

"इस पवित्र क्रास की शक्ति हमारी रक्षा करे!" अकुलिना पाम्फ़ीलोव्ना ने कहा, "ईसू मसीह इस तूफ़ान को हमारे सर पर से गुज़र जाने दे! सोचिए तो एलेक्सी इवानिच ने हमारा भेद खोल दिया। यही भलमनसाहत है!"

उसी समय दरवाजा खुला और मेरिया इवानोव्ना अन्दर आई। उसके पीले मुख पर मृदु मुस्कान खेल रही थी। उसने देहाती कपड़े उतार दिये थे और पहले की तरह सादे किन्तु सुन्दर

ढँग के कपड़े पहने थी ।

मैंने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और कुछ क्षणों तक मैं मुग्ध सा मौन खड़ा रहा । हमारे हृदय इतने भरे हुए थे कि बोलना संभव न था । पादरी और उनकी पत्नी को लगा कि हम उनकी ओर ध्यान देने की स्थिति में न थे—यह देख कर वे हमें छोड़ कर चले गये । हम अकेले थे । उस समय दुनिया की हर चीज़ भूल गई । बस हम बातें ही बातें करते गए । क़िले के पतन के बाद उस पर क्या क्या बीती—उसकी स्थिति कितनी भयानक थी और अपने उस धूर्त श्वाब्रिन के हाथों उसे कितनी यातनाएँ झेलनी पड़ीं—यह सब मेरिया इवानोव्ना ने मुझे बताया । हमने फिर पुराने सुख के दिनों की याद की·········हम दोनों विह्वल हो कर रोते रहे··············आख़िरकार मैंने उसको अपना भावी कार्यक्रम बताया । पुगाचोफ़ के अधीन और श्वाब्रिन के द्वारा शासित उस क़िले में उसके लिए रहना असंभव था । ओरेन्बर्ग का विचार करना भी व्यर्थ था, क्योंकि दुश्मन के घेरे में पड़े उसके निवासी हर प्रकार की यातनाएँ झेल रहे थे । दुनिया में मेरिया का अपना कहीं कोई न था। मैंने उसे अपने माँ बाप की जागीर पर चलने का आग्रह किया । पहले तो वह हिचकिचाई । अपने प्रति मेरे पिता की विरोधी भावना से परिचित होने के कारण वह डरती थी । मैंने उसे दिलासा दिया । मैं जानता था कि मेरे पिता इससे ख़ुश होंगे और एक ऐसे सूरमा की बेटी का स्वागत करना अपना कर्त्तव्य समझेंगे जिस ने उनके देश के लिए प्राण दिए ।

"प्यारी मेरिया इवानोव्ना !" मैंने उस से कहा, "मैं तुम्हें अपनी पत्नी ही मानता हूँ। अद्भुत परिस्थितियों ने हम दोनों को फिर एक सूत्र में बाँध दिया है और अब दुनिया की कोई शक्ति हमें अलग नहीं कर सकती।"

मेरिया इवानोव्ना बिना किसी सँकोच और हिचकिचाहट के मेरी बात सुनती रही। उसने भी अनुभव किया कि उसका भाग्य मेरे भाग्य के साथ बन्ध गया है। लेकिन उसने यह बात फिर दोहरा कर कही कि वह मेरे माँ बाप की रज़ामन्दी से ही शादी करेगी। इस बारे में मैंने उसका प्रतिरोध नहीं किया। हम दोनों ने हार्दिक प्रेम और आवेगपूर्वक एक दूसरे का चुम्बन लिया—और हमारे बीच सारी बातें तय हो गईं।

एक घन्टे बाद पुगाचोफ़ के कुतुबखाने की मोहर लगा हुआ एक पास लेकर मेक्सीमिच आया और सूचना दी कि पुगाचोफ़ ने मुझे बुलाया है। मैंने पुगाचोफ़ को यात्रा के लिये तैयार सजा पाया। मैं कह नहीं सकता कि इस भयंकर व्यक्ति से विदा होते समय मुझे कैसा लगा। यह व्यक्ति जो मुझे छोड़कर और सब के लिये बुराई का दानव था। मगर सच सच क्यों न कह दूँ? उस समय मैं उसके प्रति हार्दिक सहानुभूति से आकर्षित हुआ। मेरे अन्दर यह लालसा जगी थी कि मैं उसको उन अपराधियों के गिरोह से निकाल कर कहीं ले जाऊँ, जिनका वह नेता था और समय रहते ही मैं उसके सर की रक्षा कर लूँ। उस समय मेरे मन में जो बातें उमड़ रही थीं उनको कहने से श्वाब्रिन और घेरे

खड़े दूसरे लोगों ने मुझे रोक लिया। हम दोस्तों की तरह एक दूसरे से जुदा हुए। भीड़ में अकुलिना पाम्फ़ीलोव्ना को देखकर उसकी ओर अँगुली से इशारा किया और अर्थपूर्ण ढंग से आँख मारी फिर वह घोड़ा गाड़ी में सवार हो गया और कोचवान को वहाँ चलने का आदेश दिया। गाड़ी चल देने पर उसने एक बार अन्दर से सिर निकाल कर ज़ोर से चिल्लाते हुए मुझे सलाम किया।

"जनाब, अलविदा! कौन जाने हम फिर मिलें।"

हम फिर मिले तो—लेकिन किन परिस्थितियों में।

पुगाचोफ़ चला गया। कुछ देर तक मैं बरफ़ से ढके स्टेपी मैदान को एकटक देखता रहा जिस पर उसकी गाड़ी सरपट भगी जा रही थी। भीड़ तितर बितर हो गई। श्वाब्रिन वहाँ से ग़ायब हो गया। मैं पादरी के घर लौट आया। हमारे जाने के लिये सब चीज़ें तैयार थीं। मैं एक क्षण की भी देर न करना चाहता था। पुराने कमाण्डर की गाड़ी में हमारी तमाम चीज़ें लाद दी गईं। पलक मारने की देर में कोचवानों ने घोड़े जोत दिए। चर्च के पीछे अपने माँ बाप की क़ब्रों को अलविदा कहने के लिये मेरिया इवानोव्ना गई। मैं उसके साथ जाना चाहता था लेकिन उसने अकेले ही जाने का आग्रह किया। थोड़ी ही देर में चुपचाप रोती हुई वापस आ गई। गाड़ी घर के आगे आ लगी। पादरी गेरासीम और उनकी पत्नी सीढ़ियों से उतर कर नीचे आए। मेरिया इवानोव्ना, पलाशा और मैं अन्दर बैठे और सावालिच बक्स पर बैठ गया।

"अलविदा मेरिया इवानोव्ना, अलविदा पियोत्र आँद्रिइच, हमारे चमकते हुए बाज़!" दयालु अकुलिना पाम्फ़ीलोव्ना ने कहा, "तुम्हारी यात्रा सुखमय हो और ख़ुदा तुम्हारे जीवन को सुखी बनाए।"

हम चल पड़े। मैंने श्वाब्रिन को कमाण्डर के घर की खिड़की के पास खड़ा देखा। उसके मुख पर विद्वेष भरी उदासी छायी थी। मैं एक पराजित शत्रु का अपमान नहीं करना चाहता था इस लिये मैंने दूसरी दिशा में अपना मुँह फेर लिया। क़िले के द्वार को पार कर हम बेलोगोर्स्की सदा के लिये छोड़ कर चल दिए।

तेरहवाँ

# गिरफ़्तारी

क्रोधित न हों जनाब !
मेरा कर्त्तव्य मुझे बाधित करता है
कि मैं आज ही आपको जेल भिजवा दूँ
जैसा आप चाहें मैं तैयार हूँ
लेकिन मुझे विश्वास है कि आप पहले मुझे
अपनी बात कह लेने का मौक़ा देंगे

—नियाज़्नीन

जिसके बारे में मैं उस दिन सुबह तक इतना अधिक चिन्तित था उसी मधुर बालिका से इतने अप्रत्याशित रूप से संबद्ध हो जाने पर मैं सहसा अपनी चेतना पर विश्वास न कर पाया और मुझे लगा जैसे यह सब कुछ एक कोरा सपना था। मेरिया इवानोव्ना विचारमग्न दृष्टि से कभी मेरी ओर देखती और कभी सड़क की ओर। लगता था कि वह अभी तक पूरी तरह आपे में नहीं आ पाई थी। हम दोनों ख़ामोश थे हमारे मन थके हुए थे। हमें पता

भी न चला कि किस तरह दो घंटे बीत गए और हम पड़ोस के एक दूसरे क़िले में जा पहुँचे। वह भी पुगाचोफ़ के कब्ज़े में था। हम ने वहाँ घोड़े बदले। ये घोड़े कितनी तत्परता और जल्दी से जोते गये और उस दाढ़ी वाले कज़ाक की खुशामदी बातें, जिसे पुगाचोफ़ ने ऊँची पदवी दे कर यहाँ का कमाण्डर बना दिया था, यह साबित कर रही थी कि हमारे कोचवान की बातूनीपन के कारण हमें ज़ार का अपना ख़ास आदमी समझ लिया गया था।

हम ने अपनी यात्रा जारी रखी। अँधेरा छाने लगा। हम एक छोटे से क़स्बे के निकट पहुँचे। दाढ़ी वाले कमाण्डर ने बताया कि उस क़स्बे पर पुगाचोफ़ के समर्थकों की एक सबल सैनिक टुकड़ी का कब्ज़ा है जो अब पुगाचोफ़ की सेना में शामिल होने के लिए जा रही है। संतरियों ने हमें रोका। इस प्रश्न के उत्तर में "कौन जा रहा है?" कोचवान ने ज़ोर से चिल्ला कर उत्तर दिया "ज़ार के दोस्त और उनकी पत्नी।" यकायक गालियाँ बकते हुए घुड़सवारों के एक दस्ते ने आकर हम को घेर लिया।

"बाहर निकलो! तुम हो शैतान के दोस्त!" एक बड़ी मूँछों वाले हवलदार ने मुझ से कहा, 'तुम्हें अभी इस का मज़ा चखने को मिलेगा और तुम्हारी इस लड़की को भी।"

मैं गाड़ी में से उतरा और मैंने ज़ोर देकर कहा कि मुझे तुरन्त कमाण्डर के पास ले चला जाए। मेरी वर्दी को देखकर सैनिकों ने गाली देना बन्द कर दिया। हवलदार मुझे मेजर के पास ले गया। सावालिच मेरे साथ गया। वह अपने आप से बड़बड़ाता जाता

था, और बनिए ज़ार के दोस्त ! कढ़ाई से निकल कर चूल्हे में···
···········या खुदा इसका अन्त कहाँ जाकर होगा?"

घोड़ागाड़ी हमारे पीछे पीछे आ रही थी। पाँच मिनट चलने के बाद हम एक मकान में पहुँचे जिस में तेज़ रोशनी जल रही थी। एक सन्तरी के साथ मुझे छोड़ कर सार्जेण्ट सूचना देने अन्दर गया। वह तुरन्त लौट आया और बोला मेजर को मुझ से मिलने का समय नहीं है। और उसने हुकुम दिया था कि मुझे जेल पहुँचाया जाए और मेरी पत्नी को उसके पास पहुँचाया जाए।

"इसका क्या मतलब है?" मैंने क्रोध से तमतमाते हुए कहा, "क्या उसका सर फिर गया है?"

"मैं कुछ नहीं बता सकता, जनाब!" सार्जेण्ट ने उत्तर दिया, "उन्होंने सिर्फ यह कहा था कि आप को जेल ले जाया जाए और महिला को उनके पास पहुँचा दिया जाए।"

मैं झपट कर ऊपर चढ़ गया। सँतरियों ने मुझे रोकने की चेष्टा नहीं की और मैं भागता हुआ सीधा उस कमरे में पहुँचा, जहाँ घुड़सवार रेजीमेन्ट के छः अफ़सर बैठे ताश खेल रहे थे। मेजर उस समय ताश बाँट रहा था। मेरे आश्चर्य का अनुमान कीजिए कि मुझे यह देख कर कितना आश्चर्य हुआ होगा कि वह मेजर इवान इवानोविच ज़रिन था, जिसने सिम्बर्स्क की सराय में बिलियर्ड खेल कर मुझ से एक बड़ी रक़म जीती थी।

"क्या यह सच हो सकता है?" मैं चिल्लाया, "इवान इवानिच, आप यहाँ!"

"अरे पियोत्र आंद्रीइच ! कौन सी हवा तुम्हें यहाँ ले आई ? कहाँ से आ रहे हो ? भाई तुम्हें देख कर बड़ी ख़ुशी हुई । आओ खेल में नहीं शामिल होगे ?"

"शुक्रिया ! अच्छा हो कि तुम मेरे लिए एक डेरे का इन्तज़ाम करा दो ।"

"डेरा कैसा ? मेरे साथ ठहरो !"

"यह नहीं हो सकता । मैं अकेला नहीं हूँ ।"

"तो अपने साथी को भी ले आओ ।"

"वह साथी नहीं है । मेरे साथ एक महिला है ।"

"महिला ! कहाँ से उठा लाए ? ओहो भाई ।" इन शब्दों के साथ ज़ूरिन ने ऐसी अर्थ भरी सीटी बजाई कि सब के सब ठहाका मार कर हँस पड़े । मैं एक दम चकित हो गया ।

"अच्छा ।" ज़ूरिन ने कहा, "यही सही । तुम्हें एक डेरा मिल जाएगा । लेकिन यह कितने खेद की बात है...पुराने दिनों की तरह आज भी हम कुछ हँसते खेलते...ए लड़के । पुगाचोफ़ की प्रेयसी को ले क्यों नहीं आते ? क्या वह आना नहीं चाहती ? उससे कहो कि डरने की कोई बात नहीं है । यह भला आदमी बड़ा दयावान है और उसका कुछ नहीं बिगाड़ेगा—और उसकी पैंदी में ठोकर मार कर कहो कि झटपट ऊपर चली आए ।"

"तुम यह क्या बक रहे हो ।" मैंने ज़ूरिन से कहा, "पुगाचोफ़ की प्रेयसी ? यह भूतपूर्व कप्तान मिरोनोफ़ की बेटी है । मैं उसे बचा कर निकाल लाया हूँ और अब अपने पिता की जागीर

पर छोड़ने के लिए जा रहा हूँ ।"

"क्या तो अभी सँतरी तुम्हारे बारे में सूचना देने आया था ? अपनी क़सम इस सबका क्या मतलब है ?"

"यह सब मैं तुमको फिर बताऊँगा । अभी तो ख़ुदा के लिए उस ग़रीब लड़की को जा कर सान्त्वना दे आओ । जिसे तुम्हारे घुड़सवारों ने बुरी तरह डरा दिया है ।"

ज़ूरिन ने तुरन्त सारा प्रबन्ध कर दिया । वह अपनी ग़लती के लिए मेरिया से क्षमा माँगने के लिए उतर कर नीचे सड़क पर आया और उसने क़सबे में सब से अच्छे कमरे का प्रबन्ध करने का आदेश हवलदार को दिया । मुझे उसने अपने साथ ही ठहरने के लिए रोक लिया ।

हमने खाना खाया और जब हम दोनों अकेले रह गए तो मैंने अपने घटनामय जीवन की कहानी उसे सुनाई । ज़ूरिन पूरे ध्यान से उसे सुनता रहा । मेरी बात ख़तम होने पर उसने सर हिला कर कहा :

"भाई, यह सब तो ठीक है, बस एक बात अच्छी नहीं है । आख़िर तुम क्यों शादी करने पर तुले हो ? मैं एक ईमानदार अफ़सर हूँ और तुम्हें धोखा नहीं दूँगा इसका भरोसा रखो । शादी एक धोखा है तुम्हें एक पत्नी का झँझट मोल लेने से और बच्चे पालने से क्या लाभ ? इस विचार को छोड़ दो । जैसा मैं कहूँ वैसा करो । कप्तान की बेटी से जल्द अपना पिंड छुड़ाओ । सिम्बर्स्क जाने वाली सड़क अब सुरक्षित है । मैंने साफ़ कर दी

है। उसे कल अपने मा-बाप के पास अकेला भेज दो और तुम मेरे पास रुक जाओ। तुम्हें ओरेन्बर्ग जाने की भी ज़रूरत नहीं। अगर एक बार फिर तुम विद्रोहियों के हाथ पड़ गए तो अब की बच कर निकलना संभव न होगा और यह प्रेम का पागलपन अपने आप कम हो जाएगा और सब चीज़ें ठीक हो जाएँगी।"

मैं उसके साथ पूरी तरह सहमत तो न हो सका लेकिन मैंने अनुभव किया कि सेना के साथ रहने के लिए मैं अपने कर्तव्य से बँधा था। मैंने ज़ूरिन की सलाह के अनुसार मेरिया इवानोव्ना को जागीर पर भेज कर ख़ुद पलटन के साथ रह जाने का फ़ैसला किया।

सावालिच मेरी वर्दी खुलवाने के लिए आया। मैंने उसे बताया कि अगले दिन उसे मेरिया इवानोव्ना के साथ जाने को तैयार रहना चाहिए। पहले तो वह इस पर राज़ी न हुआ।

"आप क्या सोचते हैं जनाब? मैं कैसे आप को छोड़ कर जा सकता हूँ। आप की देखभाल कौन करेगा? आप के माँ-बाप क्या कहेंगे?"

सावालिच के हठी स्वभाव को जानते हुए मैंने अपने निष्कपट स्नेह से उसे जीतना चाहा।

"सावालिच प्रिय!" मैंने उससे कहा, "इस बात को नामंज़ूर न करो। मेरी बात मान कर तुम मेरे ऊपर एक बड़ा अनुग्रह करोगे। मुझे सेवक की ज़रूरत न पड़ेगी लेकिन मेरिया इवानोव्ना अगर तुम्हारे बिना गई तो मेरे मन को चैन न मिलेगा। उनकी

सेवा करके तुम मेरी ही सेवा करोगे क्योंकि मौक़ा मिलते ही मैं उन से शादी करूँगा।"

सावालिच अपार ख़ुशी से उछल पड़ा।

"शादी करेंगे ?" उसने उत्तर दिया, "बालक के मन पर शादी सवार है ! लेकिन आप के पिता क्या कहेंगे और आप की माता क्या सोचेंगी ?"

"वह राज़ी हो जाएँगे। मुझे विश्वास है कि मेरिया इवानोवना को जान कर वह राज़ी हो जाएँगे।" मैंने उत्तर दिया, "मैं तुम पर भी निर्भर करता हूँ। मेरे माँ बाप तुम पर पूरा विश्वास करते हैं। तुम हम दोनों के पक्ष में बोलोगे ! है न !'

सावालिच का हृदय पिघल गया।

"ओह ! पयोत्र आँद्रिइच !" उसने उत्तर दिया, 'वैसे तो अभी शादी की बात सोचने की उमर आप की नहीं है लेकिन मेरिया इवानोवना कितनी अच्छी महिला हैं कि इस अवसर को खो देना पाप के बराबर होगा। आप की मर्ज़ी के मुताबिक़ ही सही मैं उनके साथ जाऊँगा। पूरी देवी हैं बेचारी और आप के माता पिता से कहूँगा कि ऐसी दुल्हन के लिये दहेज़ लाना ज़रूरी नहीं।"

मैंने सावालिच को हृदय से धन्यवाद दिया और ज़ूरिन के कमरे में सोने के लिये चला आया। मेरे मन में एक उथल-पुथल मची थी और मैं लगातार बातें करता गया। पहले तो ज़ूरिन तत्परतापूर्वक मेरी बातों का उत्तर देता लेकिन धीरे धीरे

उसके शब्दों का सिलसिला टूटता गया और अन्त में एक प्रश्न के उत्तर के रूप में उसने एक लम्बा खर्राटा लिया और सीटी सी बजाई। मैंने बात बन्द कर दी और उसका अनुगमन करके सो गया।

दूसरे दिन मैं मेरिया इवानोव्ना के पास गया और मैंने उसे अपनी योजना बताई। मेरी योजना को उचित समझ कर वह मुझ से तुरन्त सहमत हो गई। जूरिन की पलटन भी उसी दिन वह क़सबा छोड़कर आगे बढ़ने वाली थी। समय अधिक नहीं था। मैंने वहीं मेरिया इवानोव्ना को सावालिच के हाथों सौंप कर और अपने पिता को पत्र लिख कर उससे विदा ली। मेरिया इवानोव्ना रोने लगी।

"अलविदा पियोत्र आँद्रिइच!" उसने धीमे स्वर में कहा, "खुदा जाने हम फिर कब मिलें! लेकिन जब तक मैं जिन्दा हूँ आप को भूल न सकूँगी। मरते दम तक मेरे दिल में सिर्फ अकेले आप होंगे।"

मैं उसे उत्तर न दे सका। वहाँ और लोग भी थे। उनकी मौजूदगी में मैं अपने हृदय के उद्वेलित भावों में बह नहीं जाना चाहता था। आखिर उसकी गाड़ी चली गई। मैं उदास और मौन जूरिन के पास लौट आया। वह मुझे प्रसन्न करना चाहता था, मैं अपने मन को बहलाना। इसलिये हम ने वह सारा दिन उच्छृंखल शोर गुल और हँसी खेल में बिताया और शाम को हम अपनी मँज़िल पर चल पड़े।

फ़रवरी मास के अन्तिम दिन थे। सर्दियों का मौसम, जिसके कारण फौजी कार्यवाहियाँ कठिन हो गई थीं, अब समाप्त हो रहा था, और अब हमारे जनरल मिल कर एक बड़े हमले की तैयारी कर रहे थे। पुगाचोफ़ अभी तक ओरेन्बर्ग का घेरा डाले पड़ा था। लेकिन इसी बीच उसके चारों ओर फैले हुए हमारे फौजी दस्तों ने परस्पर सम्बन्ध स्थापित करके लुटेरों के घोंसले की ओर हर दिशा से बढ़ना शुरू कर दिया। सैनिकों के पहुँचते ही विद्रोही गाँव में पुनः शान्ति स्थापित हो गई। लुटेरों के जत्थे हमारे पहुँचते ही तितर बितर हो गए और ऐसी परिस्थितियाँ पैदा होने लगीं, जिनसे इस युद्ध का सफलतापूर्वक अन्त करने की संभावनाएँ नजर आने लगीं।

इन्हीं दिनों प्रिंस गोलितजीन ने ततिश्चेवा क़िले के पास पुगाचोफ़ को बुरी तरह हराया। उसकी सेना को तितर बितर कर दिया। ओरेन्बर्ग को आज़ाद कर लिया और ऐसा लगा मानों विद्रोह को निश्चित रूप से दबा दिया हो। उस समय जूरिन को विद्रोही बश्कीरों के एक जत्थे के खिलाफ़ कार्यवाही करने के लिए भेजा गया, जो हमारी पहुँचने की भनक पाते ही भाग खड़े हुए। वसन्त ऋतु के आगमन तक हम एक तातार गाँव में पहुँच गए थे। नदियों में बाढ़ आई हुई थी और सड़कों पर चलना दुर्गम हो गया था। उस समय हम कुछ न कर सकते थे, केवल अपने को इस विचार से संतोष दे सकते थे कि लुटेरों और असभ्यों के विरुद्ध हमारी तुच्छ लेकिन कठिन लड़ाई अब जल्दी ही समाप्त हो जाएगी।

परन्तु पुगाचोफ़ नहीं पकड़ा जा सका था। वह वहाँ से भाग कर साइबेरिया की खानों के पास जा निकला। उसने वहाँ नए जत्थे संगठित किए और एक बार फिर यह दुष्कर्म शुरू कर दिया। उसकी विजय की अफ़वाहें फिर चारों ओर फैलने लगीं। हमने सुना कि साइबेरिया के क़िलों को एक एक करके जीता जा रहा है। फिर अचानक हमारे फौजी नेता जो यह आशा करके कि इस क्षुद्र विद्रोही को निशक्त कर दिया गया है, निश्चिन्त हो कर सोए पड़े थे, जल्द ही यह सूचना पाकर कि उसने कज़ान पर कब्ज़ा कर लिया है और अब मास्को पर चढाई करने के लिए आगे बढ़ रहा है, एक दम घबड़ा कर सतर्क हो गए। ज़ूरिन को वोल्गा पार कर के आगे बढ़ने का आदेश मिला। मैं अपनी इस फ़ौजी कार्यवाही और युद्ध के अन्त का वर्णन नहीं करूँगा। संक्षेप में केवल यही कहूँगा कि इसमें हमें बड़ी मुसीबतें झेलनी पड़ीं। कहीं किसी ओर वहाँ क़ानूनी राजसत्ता का प्रभुत्व न था। ज़मीदार जँगलों में जा छिपे थे और लुटेरों के जत्थे गाँव गाँव में लूटमार मचा रहे थे। हमारी फ़ौजी टुकड़ियों के कमाण्डर अपनी अपनी जगह पर दुश्मनों को मन मानी सजा देते थे और जिसे उचित समझते थे। क्षमा कर देते थे वह विशाल क्षेत्र, जिसमें युद्ध की ज्वाला भड़की थी, इस समय भयंकर दशा में था ..................खुदा करे हमें रूसी विद्रोह देखने को न मिले! जो इतना बेमानी और बेरहम होता है।

पुगाचोफ़ पीछे हट रहा था और इवान इवानोविच मिचेल्सन

उसका पीछा कर रहा था। फिर हमने सुना कि वह पूरी तरह हार गया। अन्त में जूरिन ने सुना बन्दी बना लिया गया और उसी समय उसको आगे बढ़ने से रुकने का आदेश भी मिला। युद्ध समाप्त हो गया! आखिरकार मैं अपने माता पिता के पास जा सकता था। इस विचार ने कि अब मैं उन्हें जाकर गले मिल सकूँगा और मेरिया इवानोव्ना को पुनः देख सकूँगा, जिसका मुझे कोई समाचार न मिला था, मेरे अन्दर हार्दिक आल्हाद पैदा कर दिया। मैं एक बालक की तरह खुशी से नाचने लगा। जूरिन हँसा और कन्धे हिला कर बोला, "न, न, तुम्हारा अन्त बुरा होगा! तुम शादी कर लोगे और तबाह हो जाओगे।"

किन्तु साथ ही एक विचित्र आशंका मेरी खुशी में ज़हर घोल रही थी। उस बदमाश ने कितने निरपराध व्यक्तियों के खून से अपने हाथ रंगे थे और अब अपने किए की सज़ा पाने के लिए बन्दीघर में प्रतीक्षा कर रहा था। इस बात को सोच कर मैं व्यग्र हुए बिना न रह पाता। "वह किसी की संगीन की नोक से क्यों न टकराया या उसे तोप का गोला क्यों न लगा?" मैंने उद्विग्न हो कर सोचा "उसके लिए इस से अच्छा अन्त और कोई न होता!" आखिर मैं क्या चाहता था? बिना यह स्मरण किए कि उसने जीवन के कैसे कठिन क्षण में मुझे बचाया था और दुष्ट श्वाब्रिन के हाथों से मेरी वाग्दत्ता की रक्षा की थी, मैं पुगाचोफ़ के बारे में सोच भी न पाता था।

जूरिन ने मुझे छुट्टी पर जाने की आज्ञा दे दी। चन्द ही दिनों

में मैं फिर एक बार अपने परिवार से जा मिलता और मेरिया इवानोव्ना को जी भर कर देखता लेकिन यकायक मेरे सर पर एक ऐसा तूफ़ान फट पड़ा जिसकी कभी कल्पना भी न की थी।

मेरे जाने के दिन, उसी क्षण, जब मैं चल देने वाला ही था, कि जूरिन अत्यन्त व्यग्र अवस्था में अपने हाथ में एक कागज़ थामे मेरे कमरे में आया। मैं धक से रह गया। बिना जाने ही मैं घबरा गया। उसने मेरे अर्दली को बाहर निकाल दिया और कहा कि मुझे तुमसे कुछ ज़रूरी बातें कहनी हैं।

"क्या बात है?" मैंने बेचैनी से पूछा।

"खुशी की बात नहीं है।" उसने कागज़ मेरी ओर बढ़ाते हुए उत्तर दिया, 'पढ़ कर देख लो। यह मुझे अभी मिला है।"

मैंने पढ़ना शुरू किया। यह एक गुप्त आदेश था जो कि तमाम कमाण्डरों के पास भेजा गया था। उसमें लिखा था कि मैं जहाँ कहीं भी मिलूँ गिरफ़्तार कर लिया जाऊँ और पुगाचोफ़ के विद्रोह के संबंध में जाँच कमीशन के सामने पेश होने के लिए कज़ान भेज दिया जाऊँ।

कागज़ मेरे हाथ से छूट गया।

"इस के सिवा और कोई चारा नहीं है।" जूरिन ने कहा, "मेरा कर्त्तव्य आदेश पालन करना है। पुगाचोफ़ के साथ मित्रभाव से यात्राएँ करने की खबर शायद उच्चाधिकारियों तक पहुँच गई हैं। मुझे उम्मीद है कि तुम्हारे लिए इसका बुरा परिणाम न निकलेगा और कमीशन के सामने तुम सफाई दे कर छूट जाओगे। जाओ

और अपने मन को न गिरने दो।"

मेरा अन्तःकरण शुद्ध था। मुझे मुक़दमे का डर न था लेकिन शायद कई महीनों तक के लिए पुनर्मिलन के मधुर क्षण को स्थगित कर देने के विचार ने मुझे घबड़ा दिया। घोड़ागाड़ी तैयार थी। ज़्रिन ने एक दोस्त की तरह मुझ से विदा ली। मैं गाड़ी में सवार हो गया। घुड़सवार सेना के दो सैनिक नंगी तलवारें उठाए मेरी अग़ल बग़ल में आ बैठे और हम मुख्य सड़क पर चल पड़े।

चौदह

●

# मुक़दमा

आम अफ़वाह समुद्र की लहर की तरह होती है।

—एक कहावत

मुझे विश्वास था कि बिना आज्ञा लिये ओरेन्बर्ग छोड़ देने के कारण ही यह सब हुआ था। मैं बड़ी आसानी से अपनी सफ़ाई देकर अपने को निरपराध सिद्ध कर सकता था। दुश्मन के विरुद्ध छुटपुट हमले करने पर कभी भी कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया गया था, बल्कि ऐसा करने को प्रोत्साहित किया जाता था। मेरे उतावलेपन और अदूरदर्शी व्यवहार का दोष तो मढ़ा जा सकता था लेकिन अवज्ञा का नहीं। लेकिन पुगाचोफ़ के साथ मेरे सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण थे—इस बात की साक्षी देने वाले अनेक थे, और जिससे मेरे सम्बन्ध सन्देहजनक दिखाई दे सकते थे। रास्ते भर मैं लगातार उन प्रश्नों का अनुमान करता रहा जो मुझ

से पूछे जा सकते थे और अपने उत्तर सोचता रहा। मैंने मुक़दमे के समय बिल्कुल सच सच बात कह देने का निश्चय किया, यह विश्वास करके कि अपने को नर्दोष साबित करने का यही सब से सरल और सीधा तरीक़ा होगा।

मैं कज़ान पहुँचा। नगर को दुश्मनों ने लूटपाट कर जला दिया था। मकानों की जगह सड़कों और गलियों पर राख के ढेर लगे थे और बिना छत और खिड़कियों के धुएँ से काली बची खुची दीवारें खण्डहर के रूप में खड़ी थीं। पुगाचोफ़ अपने पीछे ऐसे ही दृश्य छोड़ गया था। मुझे क़िले में ले जाया गया। जो जले हुए नगर के बीच ज्यों का त्यों सुरक्षित खड़ा था। घुड़-सवार रेजीमेन्ट के सैनिकों ने मुझे एक अफ़सर के हवाले कर दिया। उसने तुरन्त एक लोहार बुलवाया। मेरे पावों और कन्धों में बेड़ियाँ डाल दी गईं। फिर मुझे जेलखाने में ले जाया गया, जहाँ एक अंधेरी और सँकरी कोठरी में जिसकी दीवारें नँगी थीं और जिसमें लोहे के सीखचों वाली एक खिड़की थी, मुझे अकेला छोड़ दिया गया।

प्रारम्भ के ही यह लक्षण किसी प्रकार भी शुभ नहीं कहे जा सकते थे, फिर भी मैंने आशा या साहस नहीं त्यागा। दुख और दर्द सहने वाले असंख्य प्राणियों की याद ने मुझे कुछ सहारा दिया और जीवन में पहली बार आहत परन्तु शुद्ध हृदय से निकली प्रार्थना की मधुरता का रसपान करके वह सोचे बिना ही कि आगे क्या होगा—मैं चैन की नींद में सो गया।

दूसरे दिन सुबह वार्डर ने जगाकर सूचना दी कि कमीशन ने पेशी के लिये बुलाया है। दो सैनिक आँगन में से होते हुए मुझे कमाण्डर के घर ले गये। वे दालान में ही रुक गए और उन्होंने मुझे अकेले ही कमरे में जाने दिया।

मैं एक बड़े कमरे में दाखिल हुआ। एक मेज़ के सहारे, जिस पर बहुत से काग़ज़ पत्र रखे थे, दो व्यक्ति बैठे हुए थे। एक बुजुर्ग जनरल, जो देखने में अत्यन्त रूखे और असहानुभूतिपूर्ण स्वभाव का लगता था और एक अच्छी भली आकृति का अट्ठाईस उन्तीस वर्ष का व्यक्ति था, जिस का व्यवहार सुखद और खुला था। एक दूसरी मेज़ पर कान में पेंसिल रखे एक सिक्रेटरी बैठा था, जो अपने सामने पड़े काग़ज़ों पर मेरे उत्तर लिखने के लिये तत्पर दिखाई देता था। मेरी जाँच शुरू हुई। मुझ से मेरा नाम और पदवी पूछे गये। जनरल ने पूछा कि क्या मैं आंद्रीपेत्रोविच ग्रेनियोफ़ का पुत्र हूँ? जब मैंने 'हा' में उत्तर दिया तब उसने कठोरतापूर्वक कहा—

"बड़े शर्म की बात है कि इतने सम्मानित पुरुष का लड़का इतना नालायक़ निकला।"

मैंने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया कि मेरे विरुद्ध चाहे जैसा अभियोग लगाया जाये लेकिन फिर भी मैं सच्ची बात कह कर अपने को निर्दोष सिद्ध कर दूँगा। जनरल को मेरा आत्मविश्वास अप्रिय लगा।

"भाई तुम तेज़ आदमी दिखाई देते हो।" उसने अपने रोब

को दबा कर कहा, "लेकिन तुम से ज्यादा चालाक लोग देखे हैं।"

तभी उस नौजवान ने मुझ से पूछा—

"किस मौक़े पर और किस समय तुम ने पुगाचोफ़ के यहाँ नौकरी शुरू की और उसने तुम्हारे सुपुर्द कौन कौन से काम किये?"

मैंने क्रोध से तमतमा कर उत्तर दिया कि एक अफ़सर और एक भद्र पुरुष के नाते मेरे लिये यह असंभव था कि मैं पुगाचोफ़ की नौकरी करता या उसके द्वारा सुपुर्द किये कामों में हाथ लगाता।

"तो फिर यह कैसे हुआ कि उस झूठे दावेदार ने सिर्फ़ एक अफ़सर और भद्र पुरुष को तो छोड़ दिया और उसके तमाम साथियों की क्रूरतापूर्वक हत्या करवा दी?" मेरे प्रश्नकर्ता ने पूछा, "यह कैसे हुआ कि इसी अफ़सर और भद्र पुरुष ने दोस्त की तरह विद्रोहियों के साथ बैठ कर दावत खाई और उस बदमाश से एक भेड़ की पोस्तीन का कोट, एक घोड़ा और नग़द पचास कोपक भेंट के रूप में स्वीकार कर लिये। यह विचित्र दोस्ती कैसे क़ायम हुई और इसका आधार देशद्रोह के अतिरिक्त या कम से कम नीच और स्वार्थी कायरता के अतिरिक्त और क्या हो सकता था?"

अफ़सर के शब्द सुनकर मुझे गहरी चोट लगी और क्रोध भी आया और मैंने पूरे जोश के साथ अपनी सफ़ाई पेश की। मैंने बताया कि एक बर्फ़ानी तूफ़ान के बीच किस तरह स्टेपी के मैदान में पुगाचोफ़ से मेरी पहले पहल मुलाक़ात हुई। और किस तरह बेलोगोर्स्की के क़िले को क़ब्ज़े में लेते समय उसने मुझे पहचान

लिया और छोड़ दिया। मैंने यह स्वीकार कर लिया कि उस झूठे दावेदार से घोड़ा और भेड़ की पोस्तीन का कोट लेते समय मैंने उचित अनुचित का विचार नहीं किया था; लेकिन मैंने कहा कि बेलोगोर्स्की क़िले की रक्षा करने के लिये मैं उसके विरुद्ध अन्तिम समय तक लड़ता रहा। आख़िर में मैंने अपने जनरल का हवाला दिया जो इस बात की साक्षी दे सकते थे कि ओरेन्बर्ग के ख़तरनाक घेरे की लड़ाई के दौरान में मैंने कितने उत्साह से अपनी जान जोखम में डालकर काम किया था।

उस कठोर बूढ़े आदमी ने मेज़ पर से एक खुले लिफ़ाफ़े में रखा पत्र निकाला और ज़ोर ज़ोर से पढ़कर सुनाने लगा—

ध्वजवाहक ग्रिनियोफ़, जिसके बारे में कहा जाता है कि वर्तमान विद्रोह में उसका हाथ रहा है और यह कि उस बदमाश के साथ फ़ौजी क़ानून और हमारी स्वामिभक्ति के विरुद्ध जिसके सम्बन्ध रहे हैं, उसके बारे में आप ने मान्यवर, जो जांचपड़ताल करवाई है उसके विषय में मेरी यह रिपोर्ट है। ध्वजवाहक ग्रिनियोफ़ प्रारम्भ अक्तूबर सत्रह सौ तेहत्तर से चौबीस फरवरी सत्रह सौ चौहत्तर तक ओरेन्बर्ग में हमारे यहाँ काम करता रहा। अंतिम तारीख़ के दिन वह नगर छोड़ कर चला गया और फिर अपने काम पर नहीं लौटा। शरणार्थियों से मैंने सुना है कि वह पुगाचोफ़ के कैम्प में गया था और वहाँ से उसके साथ बेलोगोर्स्की के क़िले तक गया, जहाँ पर उसकी पहले नियुक्ति थी। उसके आचरण के सम्बन्ध में मैं...... ।

इस स्थान पर आ कर उसने पढ़ना बन्द कर दिया और कठोरता पूर्वक कहा—

"अब तुम अपने पक्ष में क्या कह सकते हो ?"

मैंने सोचा था कि मैंने अपना वक्तव्य जिस तरह शुरू किया, उसी तरह आगे भी जारी रखूँगा और धैर्यपूर्वक मेरिया इवानोव्ना के साथ अपने सम्बन्ध का जिक्र करूँगा लेकिन सहसा मेरे मन में अपार ग्लानि भर गई। मुझे ऐसा लगा कि अगर मैं उसका नाम लूँगा तो कमीशन के सामने उसको भी पेश होने के लिए बुलाया जाएगा और कुटिल व्यक्तियों द्वारा की गई बदनामियों में उसके नाम को जोड़ने के भयानक विचार से मैं इतना अभिभूत हो गया और यह सोच कर कि उसे इन लोगों का सामना करना पड़ेगा मैं इतना चकरा गया कि घबरा कर हिचकिचाने लगा।

मेरे जज जो सहानुभूति पूर्वक मेरी बातें सुन रहे थे, मेरी घबराहट देखकर मेरे प्रति सन्देह शील बन गए। गारद के अफ़सर ने माँग की कि प्रधान मुख़बिर से मेरा आमना सामना कराया जाय। जनरल ने आदेश दिया कि कल वाले बदमाश को अन्दर लाया जाय। मैं दरवाज़े की ओर उत्सुकता पूर्वक देखने लगा और अपने अभियोगी के आने की प्रतीक्षा करने लगा। कुछ देर के बाद बेड़ियों की खनखनाहट हुई। दरवाजा खुला और श्वाब्रिन ने अन्दर प्रवेश किया। उसकी बदली हुई आकृति को देखकर मुझे आश्चर्य हुआ। वह अत्यन्त दुबला और पीला था, उसके बाल जो कुछ दिनों पहले घने काले थे, इस समय सफ़ेद

हो गए थे। उसकी लम्बी दाढ़ी लापरवाही के कारण बिखरी हुई थी उसने एक दुर्बल परन्तु विश्वास से भरे हुए स्वर में अपने अभियोग दुहराए। उसके अनुसार पुगाचोफ़ ने मुझे अपना जासूस बना कर मुझे ओरेन्बर्ग भेजा था। छुटपुट छापे मारने के बहाने मैं रोज निकल कर नगर में क्या हो रहा है—इसकी लिखित सूचना उसे पहुँचाता था और अन्तमें मैं खुलकर झूठे दावेदार के साथ जा मिला और उसके साथ एक क़िले से दूसरे क़िले का दौरा करता रहा। और अपने जैसे दूसरे देश द्रोहियों को बर्बाद करने के लिए उसे उकसाता रहा ताकि उनकी पदवी हाथ लग जाए और यह कि मैंने झूठे दावेदार से भेंट और तोहफ़े स्वीकार किए थे। मैं चुपचाप उसका बयान सुनता रहा और केवल एक बात से खुश हुआ था कि इस धूर्त बदमाश ने मेरिया इवानोवूना का नाम नहीं लिया था। या तो यह सोचकर कि जिस ने उसके आत्म सम्मान को चोट पहुँचाई थी, वह उसके सामने खड़ा था, या शायद इस लिए कि उसके हृदय में भी उसी भाव की चिंगारी अभी तक जिन्दा थी जिसने मुझे मेरिया के बारे में चुप कर रखा था। जो भी कारण हो बेलोगोर्स्की के कमाण्डर की बेटी का नाम—कमीशन के सामने नहीं लिया गया। मैंने इस नाम को बीच में न लाने का और भी दृढ़ निश्चय कर लिया और जब जजों ने श्वाब्रिन द्वारा लगाए अभियोगों का खण्डन करने के लिए मुझ से कहा तो मैंने केवल इतना ही उत्तर दिया कि मैं अपने पहले बयान पर ही क़ायम हूँ और मुझे अपनी

सफ़ाई में इससे अधिक कुछ नहीं कहना है। जनरल ने हम दोनों को बाहर ले जाने का आदेश दिया। हम दोनों साथ साथ बाहर गए। निश्चल भाव से मैं श्वाब्रिन को देखता रहा पर उससे कुछ कहा नहीं। उसने एक कपट भरी मुस्कान से मेरी ओर देखा और अपनी बेड़ियाँ उठा कर तेज़ क़दम चलने लगा और मुझे पीछे छोड़ गया। मुझे क़ैदखाने में वापस ले जाया गया और उसके बाद फिर कभी जाँच-पड़ताल के लिए नहीं बुलाया गया।

इसके बाद की घटनाएँ मेरी आँखों के सामने नहीं हुईं कि उनके बारे में मैं पाठकों को सूचित कर सकूँ, फिर भी वह इतनी बार मेरे सामने दुहराई हैं कि उनका एक एक ब्यौरा मेरी स्मृति में अंकित हो गया है और मुझे ऐसा लगता है जैसे मानो मैं अदृश्यरूप से उन घटनाओं के समय मौजूद था।

मेरे माता पिता ने मेरिया इवानोव्ना का ऐसी सहृदय आव-भगत के साथ स्वागत किया था जैसा उन दिनों के लोगों की अपनी विशेषता थी। उन्होंने इसे एक पुण्य-कार्य समझा कि उन्हें एक ग़रीब अनाथ बालिका को शरण और सान्त्वना देने का अवसर मिला। कुछ ही दिनों में वे सचमुच उस को चाहने लगे क्योंकि मेरिया इवानोव्ना को जानकर भी उससे प्यार न करना असंभव था। उसके प्रति मेरे प्रेम को मेरा पिता अब केवल मेरे मन का विकार ही नहीं समझते थे और मेरी माँ की तो बस एक ही इच्छा थी—कि उनका पेत्रूशा उस प्यारी सी कप्तान की बेटी को ब्याह ले।

मेरी गिरफ्तारी की ख़बर से मेरे परिवार को सहसा आघात सा पहुँचा। मेरिया इवानोव्ना ने इतने सरल और निश्छल ढङ्ग से मेरे माता पिता को पुगाचोफ़ के साथ मेरे विचित्र परिचय की कहानी सुना दी थी कि इस के बारे में परेशान होना तो दूर वह हार्दिक विनोद के भाव से उस पर अक्सर हँसा करते थे। मेरे पिता इस बात पर विश्वास ही नहीं कर सकते थे कि मैं ऐसे क्षुद्रतापूर्ण विद्रोह में किसी प्रकार भी अपने को डाल सकता था, जिसका उद्देश्य ही राज्य सिंहासन को उलटना और अभिजात वर्ग को मिटा देना था। उन्होंने खूब अच्छी तरह सावालिच से पूछ-ताछ कर ली थी। उस बूढ़े आदमी ने इस बात को छिपाया नहीं कि मैं पुगाचोफ़ से मिलने गया था और यह कि उस बदमाश का मेरे प्रति काफ़ी सहृदय बर्ताव था लेकिन उसने क़समें खा खा कर यह बताया था कि उसने कभी किसी प्रकार के देशद्रोह की बात नहीं सुनी। मेरे माता पिता यह सुन कर आश्वस्त हो गए और मेरे बारे में शुभ समाचार पाने की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करने लगे। मेरिया इवानोव्ना यह सुन कर आतंकित सी हो गई थी लेकिन वह चुप रही क्योंकि वह अत्यन्त लज्जाशील और विवेकपूर्ण लड़की थी।

कई सप्ताह गुज़र गए...सहसा एक दिन मेरे पिता को हमारे पीटर्सबर्ग के रिश्तेदार प्रिंस 'बी' का पत्र मिला। प्रिंस ने मेरे बारे में लिखा था। उन्होंने प्रारम्भिक बातों के बाद लिखा था कि विद्रोहियों की योजनाओं में मेरा छिपा हाथ होने का सन्देह

दुर्भाग्य से सच साबित हो गया है और दूसरों के लिए मिसाल के बतौर मुझे फाँसी दे दी गई होती अगर सम्राज्ञी ने मेरे पिता की सेवाओं और बुढ़ापे का विचार करके उनके इस अपराधी बेटे की जान बख़्शने का निश्चय न कर लिया होता। साम्राज्ञी ने अब इस मौत की सजा को हटा कर केवल साइबेरिया के किसी सुदूर भाग में आजीवन निर्वासन की सजा दी है।

इस अप्रत्याशित आघात से मेरे पिता जैसे मरते मरते बचे। उनका सहज आत्मसंयम खो गया और उनकी व्यथा, जो सदा मूक रहती थी अब झुंझलाहट और शिकायतों के रूप में व्यक्त होने लगी।

"क्या" उन्होंने आपे से बाहर होकर दुहराया, "मेरा बेटा पुगाचोफ़ की करतूतों में साझीदार है? दयालु आसमान के देवताओ! क्या मैं यही देखने के लिए जिन्दा था। साम्राज्ञी ने प्राणदण्ड सजा माफ़ कर दी। इस से क्या मेरा दुख कम हो गया। प्राणदण्ड इतना भयानक नहीं है। मेरे परदादा ने भी अपने विश्वास के लिए फांसी पर चढ़कर प्राण दिए थे और मेरे पिता ने बोलीन्स्की और ख़ुशचोफ़[1] के साथ दुख झेले थे लेकिन एक भद्र पुरुष के लिए अपनी स्वामिभक्ति को शपथ को तोड़ कर लुटेरों, हत्यारों और अपने मालिकों के यहाँ से भागे हुए भृत्यों के साथ जा मिलना हमारे नाम पर शर्म और बदनामी का

[1] साम्राज्ञी अन्ना के विश्वासपात्र जर्मन बूहरेन की विरोधी रूसी पार्टी के नेता।

काला धब्बा है।"

उनकी यह दशा देखकर मेरी माँ उनकी मौजूदगी में रोने का साहस न कर पातीं और यह कह कर कि अफ़वाहों पर भरोसा ही क्या किया जा सकता है और लोगों की राय पर कम विश्वास करना चाहिए। वह किसी न किसी तरह उनका मन रखने की कोशिश करती। लेकिन मेरे पिता को इससे संतोष न होता।

मेरिया इवानोव्ना का दुख सब से गहरा था। उसे विश्वास था कि अगर मैं चाहता तो अपनी सफ़ाई देकर छूट सकता था और सच बात का अनुमान करके वह अपने को मेरे दुर्भाग्य का कारण समझने लगी। उसने अपने आँसू और अपनी कथा को औरों की आँखों से छिपाये रखा लेकिन वह निरन्तर मेरी रक्षा के उपाय सोचती रही।

एक दिन मेरे पिता सोफ़ा पर बैठे कोर्ट कैलेन्डर के पन्ने उलट रहे थे लेकिन उनके विचार कहीं दूर उलझे थे और उसके पढ़ने से उन पर पहले जैसा प्रभाव न हो रहा था। वह सीटी बजा कर एक पुराने मार्च गीत की लय गुनगुना रहे थे। मेरी माँ चुप चाप बैठी उनका एक कोट बुन रही थी और उस पर उन की आँखों से रह रह कर आँसू टपक जाता था। यकायक मेरिया इवानोव्ना ने, जो उनके निकट बैठी कसीदा काढ़ रही थी, कहा कि उसको पीटर्सबर्ग जाना बिल्कुल जरूरी हो गया और उसने यात्रा का प्रबन्ध कर देने की माँग की। मेरी माँ सुनकर बहुत दुखी हुई।

"तुम पीटर्सबर्ग क्यों जाना चाहती हो?" उन्होंने कहा, "कहीं ऐसा तो नहीं है मेरिया कि अब तुम भी हमें छोड़ देना चाहती हो।"

मेरिया इवानोव्ना ने उत्तर दिया कि उसका भविष्य पूरी तरह इस यात्रा पर ही निर्भर करता है और यह कि वह एक ऐसे आदमी की बेटी होने के ख़ातिर, जिसने स्वामिभक्ति के लिये जीवन दिया, वह प्रभावशाली लोगों से सहायता और सुरक्षा की माँग करने जा रही है।

मेरे पिता ने अपना सर झुका लिया ऐसा हर शब्द, जो उन्हें अपने पुत्र पर लगाए गए अभियोग की याद दिलाता था, उनको आन्तरिक पीड़ा पहुँचाता और एक निर्मम भर्त्सना के रूप में लगता।

"जाओ मेरी बेटी!" उन्होंने एक आह भर कर उससे कहा, 'हम तुम्हारे सुख के मार्ग में रोड़ा नहीं बनना चाहते। खुदा करे कि तुम्हें पति के रूप में एक नेक और भला आदमी मिले न कि एक बदनाम देशद्रोही हो।"

वह उठ कर कमरे से बाहर चले गए।

माँ के पास अकेली रह जाने पर मेरिया इवानोव्ना ने उनको अपना कार्यक्रम अंशतः बताया। मेरी माँ ने रोते हुए उसे गले से लगाकर उसकी सफलता के लिये प्रार्थना की। मेरिया इवानोव्ना की यात्रा की तैयारियां करदी गई और कुछ ही दिनों के बाद वह वफ़ादार सेविका पलाशा और वफ़ादार सेवक सावालिच के साथ चल पड़ी।

सावालिच विवशतापूर्वक मुझ से अलग होने के कारण अब मेरी मंगेतर की सेवा करके अपने मन को सन्तोष दे लिया करता था।

मेरिया इवानोव्ना कुशलतापूर्वक सोफ़िया जा पहुँची और वहाँ यह सुनकर कि कचहरी जारको सेलो नाम के स्थान पर लगती है, उसने वहाँ रुकने का निश्चय किया। घोड़ा गाड़ियों के स्टेशन पर उसे पर्दे के पीछे छोटा सा स्थान दे दिया गया। स्टेशन मास्टर की पत्नी थोड़ी ही देर में खुल कर मेरिया इवानोव्ना से बातचीत करने लगी। उसने बताया कि वह राजमहल की बुखारियों की देखभाल करने वाले व्यक्ति की भतीजी है जिस ने उसको राज दरबार के अनेक रहस्यों का निकट परिचय कराया है। उसने बताया कि साम्राज्ञी कितने बजे सुबह सोकर उस दिन उठी थीं। काफ़ी पी थी। टहलने के लिए गई थीं। उस समय कौन कौन से मुसाहिब उनके साथ थे। कल उसने दोपहर को खाना खाते समय क्या क्या कहा था और शाम को किन लोगों को भेंट करने का अवसर दिया था। संक्षेप में अन्ना ब्लासीएव्ना की बातचीत इतनी दिलचस्प और जानकारी से भरी थी कि उससे ऐतिहासिक विवरण के कई पृष्ठ रंगे जा सकते थे जो कि भावी संतानों के लिए बहुमूल्य होते। मेरिया इवानोव्ना एकाग्रचित्त से उसकी बातें सुनती रही। वह फिर बगीचों में घूमने निकल पड़ी। अन्ना ब्लासी-एवना ने एक एक गली कूचे और पुल का इतिहास कह सुनाया और वह बहुत देर से घूम-घाम कर जब स्टेशन वापस आई तो उस समय दोनों एक दूसरे से बेहद खुश थी।

दूसरे दिन मेरिया इवानोव्ना बहुत तड़के ही उठ बैठी और कपड़े पहन कर बागों में निकल गई। उस दिन का सवेरा कुछ अधिक ही सुन्दर था। नीबू के वृक्षों की चोटियों को सूरज की किरणों ने आलोकित कर दिया था, जो पतझर की ताज़ा श्वास से पीले पड़ चुके थे। वहाँ की चौड़ी झील का लहरहीन निश्चल पानी सूरज की किरणों से चमक उठा था। शानदार राज हँस के जोड़े किनारों पर फैली झाड़ियों में से निकल कर अभी अभी तैरते चले आ रहे थे। एक सुन्दर चरागाह से गुज़रती हुई मेरिया इवानोव्ना उस स्थान पर पहुँची जहाँ तात्कालिक सफलताओं के लिये काउन्ट रूमियांतज़ब के सम्मान में एक स्मारक बनाया गया था। यकायक एक छोटा सा अंग्रेजी नसल का सफ़ेद कुत्ता भौंकता हुआ उसकी ओर झपटा। मेरिया इवानोव्ना घबरा कर जहाँ की तहाँ खड़ी रह गई। उसी समय उसे एक स्त्री का मधुर स्वर सुनाई दिया।

"डरो मत यह काटेगा नहीं!"

और मेरिया इवानोव्ना ने स्मारक के सामने एक महिला को बेंच पर बैठे हुए देखा। मेरिया इवानोव्ना बेंच के दूसरे सिरे पर बैठ गई। वह महिला ध्यान से उसकी ओर देखती रही। इधर मेरिया इवानोव्ना ने कई बार कनखियों से उसकी ओर देखा और उसे सर से पाँव तक जाँचती रही। वह महिला सुबह की श्वेत पोशाक पहने हुए थी, एक रात की टोपी और रूसी जाकेट। उसकी आयु लगभग चालीस वर्ष की लगती थी। उसके भरे हुए गुलाबी मुख पर शान्ति और शालीनता की मुद्रा थी। उसकी नीली आँखें

और मन्द मुस्कान एक अनिर्वचनीय आकर्षण पैदा करते थे। उस महिला ने ही सब से पहले मौन भँग किया।

"लगता है तुम यहाँ नई नई आई हो ?" उसने पूछा।

"हाँ मदाम !" मैं कल ही गाँव से आई हूँ।"

"क्या किसी रिश्तेदार के साथ आई हो ?"

"नहीं, मदाम ! मैं अकेली ही आई हूँ।"

"अकेली ! मगर तुम तो इतनी कमसिन हो ·······।"

"मेरे माँ-बाप कोई नहीं।"

"आई तो किसी काम से ही हो न ?"

"हाँ मदाम ! मैं साम्राज्ञी के सामने अपनी दरखास्त पेश करने आई हूँ।"

"तुम अनाथ हो ! मेरा विचार है कि शायद तुम किसी के अन्याय या ज़्यादती के ख़िलाफ़ शिकायत करना चाहती हो !"

"नहीं मदाम ! मैं दया की भीख माँगने आई हूँ, न्याय की नहीं।"

"क्या मैं तुम्हारा नाम पूछ सकती हूँ ?"

मैं कप्तान मिरानोफ़ की बेटी हूँ।"

"कप्तान मिरोनोफ़ की ! वही जो ओरेन्बर्ग के इलाके में किसी क़िले के कमाण्डर थे।"

"हाँ मदाम !

उस महिला को जैसे यह बात स्पर्श कर गई।

"माफ़ करना !" उसने और भी कोमलतापूर्वक कहा, "कि

मैं तुम्हारे निजी मामले में दखल दे रही हूँ लेकिन मैं अक्सर राज दरबार में जाया करती हूँ। मुझे बताओ कि तुम्हारी दरख़ास्त क्या है ? शायद मैं तुम्हारी सहायता कर सकूँ।"

मेरिया इवानोव्ना ने उठकर उसका आदरपूर्वक धन्यवाद किया। उस अज्ञात महिला की हर बात न जाने क्यों इसके हृदय में एक विश्वास पैदा कर रही थी। मेरिया इवानोव्ना ने अपनी जेब से एक तह किया काग़ज़ निकाला और उस महिला की ओर बढ़ा दिया। वह उसे लेकर मन ही मन पढ़ने लगी।

पहले तो वह ध्यान से और आद्रभाव से उसे पढ़ती रही लेकिन यकायक उसकी मुद्रा बदल गई और मेरिया इवानोव्ना जो लगातार उसकी ओर टकटकी बाँधे देख रही थी, उसके शान्त और प्रसन्न मुख पर सहसा कठोर रेखाओं के उदित हो जाने से घबरा गई।

"तुम ग्रिनियोफ़ के पक्ष में कुछ कहना चाहती हो ?" उस महिला ने रूखे भाव से कहा, "साम्राज्ञी उसको माफ़ नहीं कर सकतीं। वह उस झूठे दावेदार के साथ अपनी अज्ञानता और भ्रमवश नहीं बल्कि एक ख़तरनाक और पतित बदमाश की हैसियत से जा मिला था।"

"अरे नहीं यह सच नहीं है" मेरिया इवानोव्ना चिल्लाई।

"यह सच कैसे नहीं है ?" उस महिला ने लाल पड़ते हुये दोहराया।

यह सच नहीं है। मैं ख़ुदा की क़सम खा कर कहती हूँ कि यह

सच नहीं है मुझे सब कुछ मालूम है। मैं आप को सब बता दूँगी। सिर्फ मेरे ही लिए उन्होंने यह सब कुछ किया और अगर उन्होंने जजों के सामने अपने को निर्दोष सिद्ध नहीं कर पाया तो सिर्फ इस कारण कि वे जजों के सामने मेरे नाम को नहीं घसीटना चाहते थे।

इसके बाद उसने बड़ी मार्मिकता के साथ वह सारा किस्सा कह सुनाया जिस से पाठक परिचित हो चुके हैं। वह महिला बड़े ध्यान से सारी बातें सुनती रही।

"तुम कहाँ ठहरी हो?" उस ने पूछा। और यह सुनकर कि वह अन्ना व्लासीएव्ना के यहाँ ठहरी है उसने मुस्करा कर कहा, "आह, मैं जानती हूँ। अच्छा नमस्कार। और देखो हमारी इस मुलाक़ात के बारे में किसी से न कहना। मुझे आशा है कि इस पत्र का उत्तर पाने के लिए तुम्हें बहुत दिनों न रुकना पड़ेगा।"

इन शब्दों के साथ वह एक आच्छादित उद्यानपथ की ओर चली गई और मेरिया इवानोव्ना एक सुखद आशा से भरी हुई अन्ना व्लासीएव्ना के घर वापस लौट गई।

अन्ना ने उसे इतने तड़के टहलने निकल जाने पर एक झिड़की सुनाई और कहा एक जवान लड़की के स्वास्थ्य के लिए यह अच्छा नहीं होता क्योंकि पतझड़ के दिन हैं। वह समावार उठा लाई और चाय का प्याला पीते पीते उसने दरबार की कहानियों का अनन्त सिलसिला शुरू किया ही था कि यकायक दरवाज़े पर दरबार की गाड़ी आकर रुकी और राज प्रासाद के एक अर्दली ने

कमरे में आकर सूचना दी कि साम्राज्ञी मिस मिरोनोफ़ को बुला रही हैं।

अन्ना ब्लासीएव्ना आश्चर्य से घबरा कर देखती रह गई।

"मेरी प्यारी!" वह चिल्लाई, "साम्राज्ञी तुम्हें राज प्रासाद में बुला रही हैं। तुम्हारे बारे में उन्होंने जाना कैसे? और तुम साम्राज्ञी के सन्मुख कैसे जाओगी? मैं तो सोचती हूँ कि तुम्हें दरबार का आचरण नहीं आता......क्या यह अच्छा न होगा कि मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ। मैं कम से कम तुम्हें मौक़े बे मौक़े चेतावनी तो देती रहूँगी और यह सफ़री कपड़े पहन कर तुम कैसे जाओगी? क्या यह अच्छा न होगा कि हम दाई के यहाँ से उस का पीला चोग़ा मँगवा लें?"

अर्दली ने सूचित किया कि साम्राज्ञी की यही इच्छा है कि मेरिया इवानोव्ना अकेली ही आए और जैसे कपड़े पहने हैं वैसे ही। इस पर और कुछ तर्क वितर्क बेकार था। मेरिया इवानोव्ना अन्ना ब्लासीएव्ना की हिदायतों और दुआओं के साथ गाड़ी में बैठ कर राज प्रासाद के लिए चल पड़ी। मेरिया इवानोव्ना ने अनुभव किया कि उसकी और मेरी क़िस्मत का फ़ैसला होने वाला था। उसका हृदय धड़कने लगा। चन्द मिनटों में ही गाड़ी राज प्रासाद जा पहुँची। मेरिया इवानोव्ना काँपती हुई सीढ़ियों पर चढ़ी। उसके सामने दरवाज़े खोल दिए जाते। वह अनेक ख़ाली पड़े लेकिन ख़ूब सजे हुए कमरों में से होकर गुजरी। अर्दली उसको राह दिखाता जाता था। अन्त में एक बन्द द्वार पर आकर उसने

कहा कि वह अन्दर जा कर सूचना दे आए और उसे अकेला छोड़ कर चला गया।

साम्राज्ञी को आमने सामने देखने के विचार ने उसको इतना भयभीत कर दिया कि उसे अपने पावों पर खड़ा रहना कठिन हो गया। एक क्षण बाद ही दरवाज़ा खुला और वह साम्राज्ञी के प्रसाधन कक्ष में दाखिल हुई।

साम्राज्ञी ड्रेसिंग टेबुल के सामने बैठी थी। कई मुसाहिब उसके इर्दगिर्द खड़े थे लेकिन उन्होंने मेरिया इवानोव्ना के लिए आदरपूर्वक स्थान छोड़ दिया। साम्राज्ञी ने उसकी ओर स्नेह-पूर्वक मुड़ कर देखा और मेरिया इवानोव्ना ने तुरन्त पहचाना कि वह वही महिला है जिन से कुछ देर पहले ही इतनी स्वच्छन्दता पूर्वक वह बातचीत कर रही थी।

'मुझे खुशी है कि मैंने तुम को जो वचन दिया था उसको पूरा कर रही हूँ और तुम्हारी दरख़ास्त मंजूर कर रही हूँ। तुम्हारा मामला तय कर दिया जाता है। मुझे इस बात का विश्वास हो गया है कि तुम्हारा मंगेतर निर्दोष है। यह पत्र लो और इसे कृपा करके अपने भावी श्वसुर के पास ले जाओ।"

मेरिया इवानोव्ना ने काँपते हाथों से पत्र थाम लिया और रोती हुई साम्राज्ञी के चरणों में गिर पड़ी। साम्राज्ञी ने उसे उठा कर बातचीत में उलझा लिया।

"मैं जानती हूँ कि तुम धनी नहीं हो" साम्राज्ञी ने कहा, लेकिन मुझ पर कप्तान मिरानोफ़ की बेटी का कर्ज़ है। तुम भविष्य

के बारे में चिन्ता न करो। मैं तुम्हारा सारा प्रबन्ध कर दूँगी।"

गरीब अनाथ लड़की से अनेक स्नेह पूर्ण बातें कह कर साम्राज्ञी ने उसे विदा किया। दरबार की उसी गाड़ी में वापस पहुँचाया गया। अन्ना व्लासीएव्ना ने जो उत्कटतापूर्वक उसकी वापसी का इन्तजार कर रही थी, ने प्रश्नों की बौछार कर दी। मेरिया इवानोवना ने उनके ज्यों त्यों उत्तर दे दिए। अन्ना व्लासीएव्ना उससे बहुत असन्तुष्ट थी कि उसे इतनी कम बातें याद रह गईं लेकिन उसने इसको मेरिया का देहाती संकोच समझा और उसे उदारतापूर्वक क्षमा कर दिया। मेरिया इवानोव्ना उसी दिन गाँव वापस लौट गई और उसने पीटर्सबर्ग को एक नजर देखने की बात भी न सोची।... ...

# सम्पादक की ओर से

पियोत्र आंद्रीइच ग्रिनियोफ़ के संस्मरण इस स्थल पर आकर समाप्त हो जाते हैं। उसके परिवार की परम्परा से ज्ञात होता है कि सन् १७७४ के अन्त में साम्राज्ञी के लिखित आदेश के अनुसार उसे जेल से मुक्त कर दिया गया था कि वह पुगाचोफ़ के वध के समय मौजूद था और लोगों के सामने जब पुगाचोफ़ का निर्जीव रक्त से सना शिर दिखाया गया उसके एक मिनट पहले ही उसने पियोत्र आंद्रीइच को भीड़ में से पहचाना था और अपना सिर हिला कर उसका अभिवादन किया था। इसके बाद ही पियोत्र आंद्रीइच ने मेरिया इवानोव्ना से विवाह कर लिया था। सिम्बर्स्क के सूबे में उनके वंशज आज भी फल फूल रहे हैं। एन(N)स्थान से तीस मील दूर एक जागीर है जिसके दस मालिक हैं। उनमें से एक के घर शीशे के फ्रेम में जड़ा कैथीन द्वितीय का पत्र रखा हुआ है। यह पत्र पियोत्र आंद्रीइच के पिता के नाम है। इसमें उनके पुत्र की निर्दोषता को स्वीकार किया गया है और कप्तान मिरोनोफ़ की बेटी के दिल दिमाग़ की तारीफ़ की गई है।

पियोत्र आंद्रीइच ग्रेनियोफ के यह संस्मरण हमें उनके एक नाती ने दिए हैं, जिसने यह सुना था कि हम उसके दादा द्वारा लिखे गए उस काल के विवरण का संग्रह कर रहे हैं। उनके संबंधियों की रजामन्दी से हमने इसको अलग से छापने का निश्चय किया है। साथ ही हम प्रत्येक परिच्छेद के ऊपर एक उपयुक्त शीर्षक वचन जोड़ दे रहे हैं और कुछ नामों को बदलने की आजादी ले रहे हैं।

— सम्पादक

अक्तूबर १६, १८३६.

म्युनिसिपल लाइब्रेरी
Durga Sah
Municipal Library
NAINITAL
नैनीताल